

॥ वदे वीर ॥

श्री जंगमयुग प्रधान महारक दादासाहब

श्री १००८ श्रीजिनदत्तसूरिजी महाराज

अष्टम स्वर्गरोहण शताब्दी महोत्सव

(तारीख २०, २१, २२, मई सन् १९५६ ई०)

अजमेर



विस्तृत रिपोर्ट

(आय-व्यय विवरण सहित)

ता० १ नवम्बर १९५८ तक



प्रकाशक

श्री जिनदत्तसूरिजी महाराज अष्टम स्वर्गरोहण

शताब्दी महोत्सव समिति, अजमेर

आवृत्ति
१०००



दीपावली
वि स २०१५

यह पुस्तक एक २५ सन् १८६७ के
 अनुसार सरकार में रजिष्टरी कर १५
 और किसीको इसके छपवाने का अधिकार
 नहीं ।

मेहरचन्द
 मैनेजर संस्कृत
 पुस्तकालय
 लाहौर

भारत की

(2)

भारत की अपनी गौरवमयी परम्परायें ह। सस्कृति, कला, साहित्य, अर्थशास्त्र, सामाजिक विज्ञान एवं ज्ञान व धर्म सम्बन्धी जिन तत्वों का निष्पन्न भारतीय मनीषियों ने प्रतिपादित किया है उनके सर्वोपयोगी अर्थ शान शान प्रकाश में आने लगे ह। ऐसी ही वैभवशाली विद्वेषनाओं से सम्पन्न हमारे चरित्रनायक परम पूज्य श्री गुरुदेव जिनदत्तसूरीजी महाराज भी भारतीय मनीषी-समाज में महत्वपूर्ण स्थानों पर हैं। डॉ. ए. आर. राज के रिमर्कस्वालर (पुरातत्व वेत्ता) यह स्वीकार करते हैं कि भारतीय सस्कृति-धर्म विवासी मुख जैन साहित्य के पत्रों में पूज्य गुरुदेव द्वारा एक नये स्वर्ण पृष्ठ का समावेश हुआ था। अतः ऐसे परमोपकारी श्री गुरुदेव द्वारा प्रतिपादित मायताओं को आत्मसात करने की क्षमता जिन व्यक्तियों के हृदय में विद्यमान है, वे यदि श्री गुरुदेव के प्रकाश तेजस्वितामय जीवन में सम्पन्न कार्यों का दिग्दर्शन एवं उनके प्रति श्रद्धा प्रदर्शन, किमी महान् आयोजन के अंतर्गत सामूहिक रूप से नियोजित करत ह तो उमें शुभनिष्ठा का परिचायक ही ममभा जावेगा।

श्री गुरुदेव की स्मृति निरसिम्पन्न होने वाला शताब्दी महोत्सव केवल एक धार्मिक उत्सव के रूप में ही पादित नहीं हुआ, किन्तु उसके साम्प्रतिक महत्व को छाप बाहर में सम्मिलित यात्रियों पर विशिष्ट रूप से पड़ी वहा स्थानीय नागरिका के हृदयों पर तो उसकी स्मृति अमिट रूप से सदैव अंकित रहै। शताब्दियों में होने वाले आयोजनों की यहाँ विशेषता हीती है कि वे अपने आप में चिरस्मरण, अतुर नेवर सपन्न हाते ह जो निरन्तर जन जीवन को स्पष्ट करते रहते ह।

यह निरिवाद सत्य है तथा शताब्दी महोत्सव के प्रत्यक्षदर्शी इसका स्वाभाविक अनुभव भी कर सके किन परम्परा के आचार्यों में जितनी लोक प्रियता दादा श्री जिन्दत्तसूरीजी के प्रति है उतनी किमी दूसरे प्राप्त नहीं। यह अनिश्चयित नहीं किन्तु विलक्षण प्रतिभा सपन्न, मानव मात्र के हितार्थ सपूर्णवन की आहूति देने वाले नर पुरुषों को ही ऐसा यश प्राप्त हाता है। और यही कारण है कि दादा जिन्दत्तसूरीजी स्वैताम्बर आम्नाय के ममी ८४ गच्छों द्वारा श्रद्धा व भक्तिभाव से पूज जाते हैं।

शताब्दी महोत्सव सपन्न करने का विचार जब से प्रादुर्भाव हुआ उम दिवस से लेकर उत्सव के उपनहार तक छोटा सा महत्वपूर्ण इतिहास है। रिपोर्ट में उका अपना म्यान है और क्याकि आरम्भ से ही काय विधि से मरा काफी सपन्न रहा तथा अन्न सहयोगियों को स्मरण शक्ति भी कम तीव्र नहीं आधार पर प्रस्तावना का निर्देशन किया जा रहा है।

अजमेर का धार्मिक स्वातो में सम्प्रतिष्ठत यह उत्सव अपनी शान का पहला आयोजन था जो शान विचार पर तथा मार्वात्रनिष्ठ रूप में सपन्न किया गया था। वास्तव में कई काम समार में ऐसे ही ह जिन पर मनुष्य का यश नहीं चलता, फिर भी वे पूरे हो जाने ह और पूरा होन पर प्रादमी की आश्चर्य में डूब जाता है कि यह कैसे हो गया किन्तु प्रकृति के इस विधान

श्लोक का अनुमान प्रमाण है और जो बुद्धिमान् पुरुष उद्योग सहित इस ग्रन्थ को आदिसे अंत तक पढ़ेंगे तो अच्छा बोध रूप रसके लाभ को प्राप्त करेंगे ॥

और कई एक मत्तावलंबी अनजान लोक जैसे कहते हैं कि जैनी लोक नास्तिक मती हैं अर्थात् ईश्वर को नहीं मानते हैं

सो उनको इस ग्रन्थ के द्वितीय भागके परमात्म अंग आदि अंगोंके बांचने से ऐसा भाव मालूम होजायगा कि जैनी लोक इस रीतिसे तो ईश्वर सिद्ध स्वरूप परमात्म पदको मानते हैं :

और इस रीतिसे ईश्वर अर्थात् ठाकुर ई धारक धर्म दाता अरिहंत देव को मानते हैं और इस रीति से जैनी ईश्वर अर्थात् ठाकुर न्याय (इन्साफ) हुकम राज काजके कारक रजोगुणी तमोगुणी

तत्पश्चात् श्री लूणियाजी का बम्बई पधारना हुआ वहा पर श्री बुन्दनमलजी मेहता के साथ वयोवृद्ध पूज्य श्री गुलावमुनिजी महाराज से मिले और शताब्दी उत्सव के विषय में निवेदन किया। मुनिश्री ने शताब्दी उत्सव के लिये अपनी हादिक इच्छा प्रकट की तथा ऐसे विचाल स्तर पर सपन्न किये जाने वाले धार्मिक महोत्सवों के सम्बन्ध में पूर्ण अनुभव रखने वाले श्री १०८ उपाध्याय श्री सुखसागरजी महाराज से शिष्टताशील परामर्श करने की राय प्रकट की, क्योंकि ऐसे महान् कार्य में उनका सक्रिय व प्रशसनीय सहयोग मिलने का उन्हें पूर्ण विश्वास था। अतः इस आशय का एक पत्र उपा० जी महाराज की सेवा में भोपाल भेजा गया आपका तुरन्त उत्तर मिला कि ग्वालियर आकर मिलो। अश्वस्त्यता के कारण श्री लूणियाजी ग्वालियर न जा सके। बाद में वे तथा श्री धनराजजी लूणिया आगरे जाकर मिले। उपा० महाराज ने तथा मुनि मंगलमागरजी व मुनि कात्तिमागरजी ने इस उत्सव को एक सांस्कृतिक रूप देने की सलाह दी। अथ व्यवस्था के लिये भी योजना बतलाई तथा प्रकाशित करने के लिये प्रारम्भिक विज्ञप्ति का ड्राफ्ट बना कर भी दिया।

तदनुसार विज्ञप्ति प्रकाशित कर भारत के सभी प्रमुख नगरों के श्रीसंधी वा व सम्मानित सज्जनों को प्रेषित की गई व तत्सम्बन्धी समाचार जन पत्रों में भी प्रकाशित किये गये। गुरुदेव के परम भक्तों ने ऐसे सुयोग्य निमित्त को पाकर शताब्दी महोत्सव के कार्य को अवश्यमेव सम्पन्न करने के पक्ष में अपनी राय प्रकट की। स्थानीय श्रीसंध को एकत्रित कर सारी योजना की जानकारी कराई गई। बाहर से प्राप्त हुये पत्र तथा अन्य आवश्यक पत्रादि लेकर पुनः श्री लूणियाजी व उपाध्याय श्री सुखसागरजी महाराज की सेवा में ग्वालियर पहुंचे। उपाध्यायजी महाराज ने पुनः दमरी विज्ञप्ति प्रकाशित करने का आदेश दिया।

ग्वालियर से हम आचार्य महाराज से परामर्श करने के लिये खेतिया (५० खानदेश) पहुंचे और आचार्य महाराज ने उत्सव को अगले साल करने का वहा तक सत्र गांधी माध्वी अजमेर पहुंच सके। यहा पर श्री लूणियाजी के पाव में चोट लग गई, जिसके कारण अजमेर आन के बाद १ माह तक आपके पाव में तकलीफ रही। खनिया से शाहदा श्री प्रवर्तिनी वल्लभश्रीजी ने उत्सव पर पधारने की प्रार्थना की।

तत्पश्चात् दादावाडी प्रथम समिति की कई बैठकें हुईं। इस प्रकार के विचाल महोत्सव को सुचारुतया सपन्न करने के लिये स्थानीय श्रीसंध के सदस्यों से अनुमानत प्राप्त होने वाली आय व अन्य आवश्यक सहायता आदि की समस्या पर समिति ने कई बार गंभीर विचार विमर्श किया। काफी बाद विवाद के बाद समिति व सदस्य इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि अगर उम्मेद के आयाजन को सपन्न करने के ऐमा कोई भी माग दिखाई नही देना जिससे गुरुदेव के इस चिरस्मरणीय स्थान का जीर्णोद्धार हो सके या भविष्य में इस स्थान की उत्पत्ति व लिये कोई रूपरेखा बनाई जा सके।

सोल्साह इन कार्य का क्रियाचित्र करने के निश्चय के पश्चात् दादावाडी प्रथम समिति द्वारा वाय मुगमता की दृष्टि से शताब्दी महोत्सव समिति निर्माण की गई।

जीर्णोद्धार के कार्य में अथिक्त मच काफी दूर से पानी लाने पर हाना या धा शिष्टताशील स्थानीय सहायता एकत्रित कर सब प्रथम दादावाडी में पानी के पाईप लाइन का बनेगान लिया

करके देखो कि इसमें जैनी लोक कौनसी बात अ
 योग्य कहते हैं और नास्तिक कैसे हुए और जो
 पुरुष जैनको नास्तिक कहते हैं वे जैनके और ना
 स्तिक नास्तिकके अर्थ अनजान हैं क्योंकि नास्तिक
 वे होते हैं जो पुराय पापको और स्वर्ग नर्कको न
 ही मानते हैं आगे जो जिसकी समझमें आवे ॥
 इस ज्ञानदीपिका ग्रन्थके दो भाग हैं सो प्रथम भा
 गमें तो आत्माराम संवेगी रचित जैनतत्त्वादर्श
 ग्रन्थ है सो तिसमें जो २ शास्त्रोंसे विरुद्ध अर्थात्
 सूत्रसे अनमिलत कथन हैं तिनके जवाब स
 वाल हैं और विरुद्धता को प्रकट करना और फि
 र तिसका खंडन करना ऐसा स्वरूप है सो
 जो पुरुष जैन मतमें दो प्रकारके अद्वानी हैं
 एक तो मूर्ति पूजक और दूसरे निराकार
 ध्याता, सो इनके अभिप्राय का जानकार होगा
 और सूत्रका वाकिफ़ कार होगा सो समझेगा

गुलाबमुनिजी महाराज ने काफी कष्ट उठाकर चन्दा इकट्ठा करवाया। मुनि महाराज ने वृद्धानस्या में भी रोजाना १४—१५ मील का चक्कर काटा यह देखकर हम दग रह गये।

वहा से मैं व श्री लूणिया जी मदरास के लिए रवाना हुए। हैदराबाद में वहा के प्रतिष्ठित श्री इंदरमलजी लूणिया के सहयोग से चन्दे का कार्य सफल हुआ। वहा पर श्री लूणिया जी को तबीयत खराब हो जाने से मदरास जाना स्वगित कर वापिस अजमेर आये।

श्री मागीलालजी पारख बम्बई से रायपुर की तरफ रवाना हुवे। वहा से श्री बग्शीजी व श्री जीवन चन्दजी के साथ कलकत्ता गये। कलकत्ते में चन्दे का कार्य श्री ताजमलजी बोधरा एवं श्री भवरलालजी नाहटा के अभूतपूर्व सहयोग से सफल हुआ।

एक शिष्ट मण्डल श्री हरिश्चन्द्रजी घाडीवाल, श्री उमरावमलजी लूणिया, एव श्री बन्गी जी का लोहावट जोधपुर, फनोदी की तरफ गया।

श्री उमरावमलजी बोहरा दिल्ली आगरा खालियर भोपाल की तरफ चन्दे के लिए गए। दिल्ली में गुरुभजन श्री धनपतिसिंहजी भसानी ने चन्दा इकट्ठा करने में बहुत सहयोग दिया। आगरा, भोपाल एव खालियर में चन्दा इकट्ठा न हो सका।

पुन श्री उमरावमलजी लूणिया व श्री जीवनचन्दजी कोटा, बूदी, छीपावहोद, रतलाम, उज्जैन तथा इन्दौर पधारे। इन्दौर में श्री सोहनलालजी लूणिया एव श्री हेमन्तकुमार जी सोखानत ने सहयोग दिया।

श्री प्रतापमलजी सेठिया के साथ श्री जीवनचन्दजी सी० पी० के दीरे पर पुन गए, जहाँ पर सहयोग कम मिलने से चन्दा भी कम एकत्रित हुआ, अतः वहा से अजमेर पधार कर श्री प्रतापमलजी सेठिया पुन सीराष्ट्र की तरफ कच्छ भुज व माडवो चन्दे के लिये पधारे।

मद्रास की तरफ ब्यावर निवासी बल्याणमलजी वाकरिया, श्री संतोशचन्द्रजी तथा मैं गया। वहाँ पर श्री सेठ सालचन्द्रजी डड्डा, श्री सेठ जतनमलजी डागा एव श्री मेठ नेमोचन्द भावक के विनोद सहयोग से चन्दे का कार्य सफल हुआ।

शिष्ट मंडली के बाहर जाने तथा चन्दा इकट्ठा करने की प्रवधि के बीच स्थानीय कार्य चालू रहा इसी मध्य म महात्म्य के प्रति विनोद उत्साह प्रदर्शित करने वाले भारत के भिन २ स्थानों के मुख्य व्यक्तियों की उत्सव की रूपरेखा बनाने के लिये १२ जनवरी १९५६ को एक सभा बुलाई गई। श्रीर ममा में उपस्थित होकर श्री प्रतापमलजी सेठिया मन्सौर, श्री अग्रचन्द्रजी नाहटा बीकानेर, श्री ताजमलजी बोधरा कलकत्ता, श्री धनपतिसिंहजी भसानी दिल्ली, तथा स्थानीय गज्जना ने मिलकर सारी रूपरेखा बनाई व उत्सव की निधि निश्चित की।

ता० १२ जनवरी सन् ५६ को विनोद सभा के पदधान् श्री प्रतापमलजी सेठिया, श्री अग्रचन्द्र जी नाहटा व श्री ताजमलजी बोधरा एवं श्री लूणिया जी श्री आचार्य महाराज के पास सँमाना गए। आचार्य म० ने फारमाया यदि माधु सम्मेलन किया जावेगा तो वे आवेंगे। अतः माधु सम्मेलन का आयोजन उत्सव पर रखा गया।

और ७ सप्तम क्षमा दया रूप गुणका लाभ होगा। और ८ अष्टम जो गृहस्थीको धर्मकार्य के निमित्तमें प्रभातसे संध्यातक और संध्या से प्रभात तक जो २ करना योग्य है सो तिसका जानकार होगा तस्मात् कारणात् द्वितीयभाग का वाचना बद्धत श्रेष्ठ है ॥

(१) पाठक लोकोंको विदित हो कि इस परमोपकारी ग्रन्थको मुखके प्रागे वस्त्र रखकर अर्थात् मुख ढाँपकर पठना चाहिये क्योंकि खुले मुखसे बोलनेमें सूक्ष्म जीवोंकी हिंसा होजाती है और शास्त्र पर (पुस्तक पर) घूँके पड़जाती हैं। और इसग्रन्थको दीपक (दीवे)के आश्रयसे न पठना चाहिये क्योंकि दीपकमें अनेक जीव दग्ध होकर प्राणान्त होजाते हैं इसलिये दीपक स्मशान के तुल्य होजाता है तस्मात् कारणात् प्रत्येक पुरुष को अनेक तरहकी जीवहिंसासे बचकर शुद्धभावसे

है किन्तु वीम सदव से एक स्थान पर रहता आया है। अधिक से अधिक कुछ कुटुम्ब एक दो मदियों से यहा रहते आये हाने। किन्तु धार्मिक कार्यों में ऐसा विवेक तो हितकर नहीं कहा जा सकता। ऐसी स्थिति में मैं उत्सव के मन्त्रीपद का भार अपने साथियों के सहयोग से ही निभा सका।

- हम एक परिवर्तन शील युग से गुजर रहे हैं जहा पुरानी धारणायें व भायनायें बदल रही है, नई चेतना का उदय हो रहा है। हमें अपने अतीत को पीछे छोडकर नूतन और प्रगतिशील दिशा की ओर अभिमुख होना चाहिये। ऐसी धार्मिक युगसंधि में जब कि सामाजिक एव धार्मिक ढांचों की जडें हिलती जा रही ह हम अपनी फूट का दात कितने वष और मु ह में धाम कर रखे रहेगे ?

समय आ गया है कि हम जैन मतावलवियों को अब तो अनेकात को केवल बौद्धिक व्यायाम को धम्पु न समझकर व्यवहारिक जीवन में उतारने की वेस्तु समझनी चाहिये ताकि फूट एव परम्परा को अपने नरवाप पर सुरक्षित रखने वाले व्यक्तियों की अलौकिक प्रतिभा समाप्त होवे, और वे भी स्वस्थ भस्तिष्क से निणय करना सीख सकें।

अन्त में, अपना अमूल्य समय, सहयोग एव धन देकर जिन सज्जनों ने शताब्दी उत्सव की सम्पन्नता में हाथ बढाया है उन्हें अनेकानेक धन्यवाद प्रदान करता हूँ, व त्रुटियों के लिये क्षमायाचन करता हूँ प्रस्तावना समाप्त करता हूँ।

रामदयाल भट्टारी

मन्त्री-महोत्सव समिति, अजमेर

अष्टम शताब्दि महोत्सव मनाने की अनिवार्यता

मनुष्य के विश्वास की नाव उसकी परिस्थितियों के प्रवाह पर बहती रहती है। यह क्रम-विकास का माग है। विकासोमुख समाज अपने धार्मिक तथा नैतिक नेताओं की स्मृति को सदैव सरोताजा बनाये रखने के लिये, उत्सव, महोत्सव, समारोह और जयतिया मनाकर सामाजिक, मानसिक स्वास्थ्य एव आतंरिक आनंद की वृद्धि करना श्रेयस्कार समझता है।

इही मद्बिचारा से प्रभावित होकर—गुरुदेव के धनय भक्तों की यह चिरपोषित अभिलाषा थी कि भारत भर में फले हुवे गुरुदेव के प्रेमियों का भारतीय स्तर पर एक विशाल महोत्सव गुरुदेव के मुख्य स्थान अजमेर स्थित दादावाडी में आयोजित किया जावे जिससे समाज में जागृति की लहर तो उत्पन्न होगी ही तथा जिन मानवीय आदर्शों के प्रतिपादन एव प्रचार में श्री दादा गुरु ने समाज का जीवन उत्थप का मार्ग दर्शाकर पूर्ण बनाया पलट कर दो थी तथा समयान्तर में समाज व मध धामन में जो शिथिलता व विवृति उत्पन्न होती गई थी उसके निवारण के लिये सायु साध्वी, श्रीपूज्य-यतिवर्ग, श्रावण एव श्राविकायें एवमिन होकर आक्षय्यक उपाया पर सुगमनापूर्वक दिनार भी कर सकेंगे।

-इम भाति शासना प्रभावना, धार्मिक प्रेम, समाज प्रेम एव भावी विकास योजनाओं की पूर्ति के लिये एव मुगमठिन सन्ध्या का निर्माण तथा, गुरुदेव के इम मुख्य स्थान (अजमेर स्थित दादावाडी) का कई वर्षों में उपभिन जीर्णोद्धार कराने के हेतु मिली भाषाए गुरूका ११ सवन् २०११ का श्री दादागुरु के स्वगवास को, ८०० वर्ष पूण होने के उपलक्ष में अष्टम शताब्दि महात्मव मनान का सद् आयोजन अनिवार्य समझ कर कार्य सम्पन्न किया गया था।-

प्रथमभाष्यसूचीपत्रम्

ज्ञानदीपिका ग्रन्थका नामार्थ	१
दुन्दक मत्त कहाने की पुष्टि बङ्गत	४
जैनतत्त्वादृशी ग्रन्थमें क्या २ कथनहैं औसा स्वरूप	१७
शतीन किराड ग्रन्थरचे, ते खराडन	५ वर्षके
ने दीक्षाही, ते खराडन भगोती शाख से	२२
सूत्र थकी जो विरुद्ध	२४
परस्पर विरुद्ध	२६
पूर्वपत्नीने हिंसामें धर्म कहना बंध्यापुत्रवत् जुठ कहाहै और फिर धर्मके निमित्त हिंसा करनी हकीम के दृष्टान्त से सम्पत्तकी शुद्ध ता कहीहै तिसका खराडन	३०
पूर्वपत्नीने फटे कपड़े से समायक और दान तप करना निष्फल कहाहै तिसका खराडन	३८
पूर्वपत्नीने पश्चिम दक्षिण को मुख करके	

आवश्यक था वह हम प्राप्त करने में समर्थ न बन सके। फिर भी "श्री खरतरगच्छ इतिहास" (जो कि श्री० अग्ररचदजी सा० नाहटा की देख-रेख में छपा था) के अलावा श्री गुरुदेव के सवध में बद्धवय उपाध्याय श्री सुखसागरजी महाराज द्वारा लिखित विद्वतापूर्ण लघु-ग्रन्थ समय पर प्रकाशित किया गया तथा महोत्सव के अवसर पर श्रमल्य वितरण भी किया गया।

हमें अपने विद्वान एव समाज सेवी सज्जन श्री अग्ररचदजी नाहटा, श्री ताजमलजी बोहरा, एव श्री प्रतापमलजी सेठिया के सदाग्रह व सत्प्रेरणा से मुनि सम्मेलन का कार्यक्रम भी रखना पडा। यतिसमाज के सगठन की प्रेरणा भी इस अवसर से प्रेरित होकर संपूर्ण हुई। विविध सामाजिक, साहित्यिक एव सांस्कृतिक सम्मेलनों की योजनाओं के साथ "श्री जिनदत्तसूरी सेवा सघ" की स्थापना विशेष उल्लेखनीय बात है। दादावाडी के आवश्यक जोर्णोद्वार की काफी मजिल भी पूरी हुई। मुख्य छत्रों के जोर्णोद्वार का काम ही सिर्फ नहीं हो पाया है जिस पेटे कुछ रूपया जमा हुआ है परन्तु पिलानी म बिडलाजी तथा कलकत्ता में बागडज द्वारा मंदिर बनवाये की वजह से भाव बढ गये है।

नाट- छत्री के अदर सीलन आने से पू० गुरुदेव के जीवन के कलात्मक चित्र शतविकसत हो गये है उन्हें नया लिखवाना तथा उनके जीवन चरित्र का सगमरमर की पट्टिकाओं पर खुदवा कर लगवाना, भी बाकी है।

इसके साथ हम उन सज्जनों से भी नम्रता पूर्वक यह निवेदन करने का साहस करते है कि जिनकी दृष्टि सहयोग के विनम्र आवाहन के स्थान पर असहयोग के रूप में सामने आई और जो दादावाडी के बाकी समय से उपेक्षित जोर्णोद्वार एव शताब्दी महोत्सव के कार्यक्रम के प्रति कुछ भी आदर प्रदर्शित न कर सके, किन्तु इन कार्यों में वे मुलभूत कोई श्रुति भी न बता सके। ऐसे वातावरण में हमें जो अविस्मरणीय क्रियामक सहयोग हमारे स्थानीय समाज के अग्रगण्य सज्जन श्रीमान रतनचंदजी मोहित सचेती का, स्वागत समिति के विशेष आग्रह पर। स्वागताध्यक्ष का पद सुशोभित करने की स्वीकृति पर मिला, अत उससे लिये भी वृत्तज्ञता ज्ञापित करना हमारा कर्तव्य है।

जोर्णोद्वार का बाकी कार्य भी शताब्दी महोत्सव के उद्देश्यों से संबंधित होने के कारण अभी भी हमारी देख रेख में स्थानीय श्री सघ के कार्यकर्ताओं की जानकारी के साथ किया जा रहा है। हिमाचल का लेखा जोखा समय २ पर "जैन" पत्रों में प्रकाशित होता ही रहा है, कुछ शोलिया जो अभी तक भरपाई नहीं हुई तथा जिनके लिये इस रिपोर्ट को शीघ्र प्रकाशित करना भी बाकी समय तक रहा तथा रिपोर्ट को अत्र अधिक स्पष्टित करना भी वाछनीय नहीं है। अत चाटेंड अनाउटेंट द्वारा जाचा हुवा व प्राप्त सहायता का सारा हिमाचल व्यौरेवार अत्र पूण विवरण के साथ इस रिपोर्ट में छपा जा रहा है।

अत म इसी निवेदन के साथ कि श्री गुरुदेव के इस पुण्य स्मारक की निरन्तर प्रगति करने में हम अधिक से अधिक कार्यक्षम त्रें व इस कार्य म समाज का सदैव सहयोग बना रहे इस विद्वान के साथ हम अपना वक्तव्य समाप्त करते है।

रामलाल लूणिया (सयोजक)

हरिश्चंद धाडीवाल मांगीलाल पारख उमरावमल लूणिया

सिरहमल महता रामदयाल भंडारी सतोपचन्द बोहरा

(सदस्यगण श्री जिनदत्त सूरीजी महाराज प्रष्टम स्वर्गांगेहण शताब्दी महोत्सव समिति, अजमेर

- द्वितीय भाग प्रारम्भ और द्वितीय भागमें ७ सात अंग हैं तिसमें प्रथम १ अंग देव अंग सो तिसमें नाम मात्र देव का स्वरूप है १७
- २ दूसरा अंग सो साधुका समत गुणादि बद्धत अच्छा किंचित् स्वरूप है १८
- कोई ऐसे तर्क करे कि साधुके लेने जाने और पड़ने जानेमें का जीवहिंसा नहीं होती है तिसके प्रश्नोत्तर १९
- ३ तीसरा धर्म अंग सो स्वात्म परात्म और परमात्माका कुछ स्वरूप है सूत्रकी शाखसहित १९
- ४ चौथा स्वमत परमत तर्क अंग तिसमें वेदांती आर्यादिक मतोंके १० प्रकारके प्रश्नोत्तर हैं १९
- ५ पांचवां आत्म शिक्षा अंग तिसमें अपने आपको बोधन है २०
- ६ छठा धर्म प्रवृत्ति अंग तिसमें कण्ठ कदेव कधर्म का नाम मात्र कथन भगवती जीकी शा

का देरी से प्राप्त होना साथ ही मकराना में त्रिडलाजी का वारह लाख रुपये का काम आ जाने में भावी में तेजी है और उसी वजह से पिछले एस्टीमेट में रु० ११००) बढ़ोतरी हो गयी, माल सर्व मकराना डिलीवरी मिलेगा तथा वहा से लाने तथा फिटिंग करने में सर्व खर्च रु० १२००) और अनुमान किया जा रहा है सो हमने रु० २३००) की प्रीरि मजूरी के लिए ट्रस्टी महोदयों की प्रतिवेदन किया है, टैंडर्स व नक्शा सब वहा अवलोकनाय भेजा है। आशा है स्वीकृति प्राप्त हो जावेगी।

पूज्य आचार्य वीरपुत्र १००८ श्री आनन्द सागर सूरीश्वरजी, महाराज उपाध्याय १०८ श्री सुख-सागरजी महाराज, उपाध्याय १०८ श्री विन्द्रसागरजी महाराज तथा भय भुनिराज तथा पू० विदुषी आर्या श्री वसन्त श्रीजी, श्री अनुपम श्रीजी, श्री० विचक्षण श्रीजी श्री० सज्जन श्रीजी, आदि साध्वी महल, तथा तीनों श्री पूज्यजी महाराज व यति समुदाय, विभिन्न सम्मेलनों के माननीय सभापति, उद्घाटक एव समस्त गुरु भक्त श्रावक श्राविकायें जो नाना प्रकार के कष्ट उठाकर इस अवसर पर दूर दूर से एकत्रित हुए उन्हें मैं विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि आपकी सुविधाओं का ध्यान रखते हुए सुन्दरतम प्रवन्ध करने की हमारी प्रयत्न कोशिश के होते हुए भी यदि आदर-सत्कार में कुछ छामो रही हो तो मैं क्षमा चाहता हूँ।

यह कहना भी अनुपयुक्त न होगा कि ऐसे अखिल भारतीय आयोजन की सावभौमिक सफलता पूर्वक सम्पन्नता में पूज्य गुरुदेव का पुत्र और प्रताप ही मुख्य है तथा साथ में पूज्य त्यागी वर्ग का आत्म योग एव चतुर्दिक् प्रेरणा तथा समस्त भारतवर्ष के धर्मानुरागी गुरु भक्तों का सप्रिय सहयोग तथा उत्साह एव स्थानीय समाज के उत्साही नवयुवक गण की मानसिक लगन तथा कठोर परिश्रम को भी श्रेय रहा ही है। मेरी चिरवाछिन भावना की जो सुन्दर मूर्त रूप प्रदान किया गया उसकी मेरे को जितनी प्रसन्नता है मैं लेख बढ़ करने में अतमर्ष हूँ।

यह भी सौभाग्य की बात थी के बीच-बीच में आशाप्ता के प्रतिबूत वित्तनी बाधायें भी उपस्थित हुईं किन्तु सहयोगी, वग की स्थिर बुद्धि एव हितचिन्तियों के वृत्ता बल पर शाय चलता ही रहा।

अन्त में यह निवेदन करना अनिश्चयोविन न होगी कि परोपकारी श्री० गुरुदेव की नीति को अनुष्ण बनाये रखने में तथा दादावादी की स्थिति को सुन्दरतम बनाये रखने में प्रत्येक अवसर पर सद्भावनाओं को बढ़ाने का कार्यक्रम फिर भी हमारी ओर से सदैव बना रहा है और अविष्य में भी बना रहेगा।

रामलाल लूणिया

७ वां द्वितीय गुणावृत्त से खाने पीने और पहनने के पदार्थ योग्य अयोग्य की मर्यादा करनेकी विधि १४७

१५ पंद्रह कर्मादान का यथार्थ भिन्नस्वरूप सात ७ कुविष्म के नाम और जो पुरुष अंगीकार करें उनको जो जो दुःखरूप फल होय ऐसे भावके ज्ञेयक १५२

नर्कादि ४ चार गतिके जानेवाले प्राणीके ४ चार चार लक्षणा और ४ चार गति कौन २ से स्थान हैं और उनका क्या २ स्वरूप है और उनका दुःख सुख आदि कैसा विहार है इत्यादि ज्ञान रूप और उपदेश रूप बद्धत अच्छा कथन है ॥ १५८

३० महामोहनी कर्म ३० सामान्य कर्मफल सहित नर्कादि ४ चार गति मांहुली को इसी गतिमें से आकर मनुष्य हुए होय उनके भिन्न २ छः

—पूज्य दादा साहब का संक्षिप्त जीवन चरित्र—



(नोट—गताब्दी महोत्सव की इस रिपोर्ट में भिन्न भिन्न स्थानों पर पूज्य दादा साहब के जीवन की मुख्य मुख्य घटनाओं को विस्तृत विवरण प्रसंगवश कई स्थानों पर दिया है। इसके अतिरिक्त दादा साहब का अलग से छपा हुआ जीवन चरित्र इस रिपोर्ट के साथ पाठकों की सेवा में भेजा जा रहा है। इसलिए संक्षिप्त जीवन चरित्र ही यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है।)

जन्म—आचार्य महाराज श्री जिनदत्तसूरिजी का जन्म गुजरात प्रांत के (धवलवक्करपुर) धोलका ग्राम के हूँवड वैश्य कुलोत्पन्न मंत्री श्रीवाछिगसाह की धर्मपत्नी बाहू देवी की रत्नकुक्षि से विक्रम संवत् ११३२ में हुआ था। धर्मदेव उपाध्याय ने प्रतिभावान् असाधारण बालक को देख कर उमकी माता से बालक के श्रीसम्पन्न गुणों की चर्चा की तथा विश्व हिताथ उसे दीक्षित कर लेने की अनुमति मागी। भक्ति भक्त हृदय वाली माता ने ससार के कल्याणाय मातृ हृदय में बल सचित कर बालक को दीक्षित होने की आज्ञा दे दी। संवत् ११६१ में उपाध्याय धर्म देव ने नव वय के उस बालक को दीक्षा देकर सोमचंद्र नाम से विभूषित किया, इनकी बाल्यकाल की प्रतिभा एक श्रावश विद्वान् का सुशोभित करती थी। आपने क्रमशः व्याकरण न्याय, अलंकार, ध्वनि, काव्य आदि शास्त्रों का अध्ययन एवं हरिसिंहाचार्य के पास जैनागम सिद्धान्त की वाचना ग्रहण की। कहा जाता है कि उक्त आचार्य श्री ने प्रसन्न होकर आपको स्वमंत्र—पुस्तिका अर्पित की। आपके बालशिक्षक सबदेवगण थे।

महत्वपूर्ण काय—मुनि सोमचन्द्र ने विभिन्न स्थानों में जाकर जैन धर्म का प्रभाव विस्तीर्ण किया। दीक्षा लेने के २२ वय बाद आचार्यव्रथ्य श्री जिनवल्लभ सूरिजी के स्वगरीरोहण के बाद श्री देवभद्राचार्य ने इनकी तपश्चर्या और प्रतिभा की शक्ति देख कर उक्त सूरिजी के पद श्री जिनदत्तसूरि नाम से अभिक्षिप्त किया। आचार्य महाराज ने त्याग और उग्र प्रतिभा से श्रावको के हृदय पर अपना पूर्ण अधिकार स्थापित कर उहे श्रावश श्रावक बनाने में भी पूरी सफलता प्राप्त की।

क्रान्तिकारी जैनाचार्य ने अपने जीवन में इतने महत्वपूर्ण काय किये हैं जिनके उल्लेख यदि किये जाय तो एक ग्रंथ बड़ी सरलतापूर्वक तैयार हो सकता है।

युग प्रवर्त ने सारे जीवन में एक ऐसा महत्वपूर्ण काय किया जैसा आज तक किसी भी जैनाचार्य ने एक ही समय में न किया होगा वह काय एक लक्ष तीस हजार मनुष्यों का प्रतिबोध देकर जैन धर्म में दीक्षित करना। श्रोतवाल समाज में ऐसी वृद्धि का कोई उदाहरण खोजे भी नहीं मिलता। इस घटना से आज के जैन समाज की शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये। आज यदि कोई जैन बनना है तो समाज अपनाते को तैयार नहीं। बल्कि जनो को भी, जो अपना प्रगतिशील विचार रखते हैं,

- परिवारी जनों को धर्म कार्यके विषे प्रेरणा
 और श्री लक्ष्मी का नाम अर्घ्य सहित बताना
 और तपका फल और वर्ष दिन के दिनोंका
 नाम २१२
- और १०० वर्ष के दिन पहर मङ्गल अवाप्त
 उच्छ्वास का प्रमारा और रसेई आदिक वि
 हार के विषे यत्न करने की विधि विस्तार
 सहित है ॥ २१७
- ३ तीसरी शिक्तामें साधुकी सेवा करने की
 विधि और देव गुरु धर्म की शुद्ध्या करने
 की विधि २२४
- ४ चौथी शिक्तामें गृहस्थी को कुवाणिय
 करने की और पराई संपत्ति देखके ऊरने
 की और दोखी में आके बेरा बेटी के बाह
 में ज्यादा द्रव्य लगाने की मनाई है २२६
- ५ पांचवीं शिक्तामें पराए पुत्र और पराई स्त्री

शताब्दी महोत्सव के अवसर पर पधारें हुए मुनिराजों श्री पूज्यों व यति गणों के शुभ नाम

- १ आराम महाराज श्री १००८ श्री योगपुत्र
आरामनागरजी महाराज
- २ जगन्नाथ श्री १००८ श्री सुपनागरजी महाराज
- ३ " " " " श्री चण्डीनागरजी महाराज
- ४ मुनि श्री मगननागरजी महाराज
- ५ " " " " श्री बानिनागरजी महाराज
- ६ " " " " श्री प्रेमनागरजी महाराज
- ७ " " " " श्री गौतमनागरजी महाराज
- ८ " " " " श्री बन्ध्यानागरजी महाराज
- ९ " " " " श्री उदयनागरजी महाराज
- १० " " " " श्री प्रभाकरनागरजी महाराज
- ११ " " " " श्री हृदयनागरजी महाराज
- १२ " " " " श्री प्रमनागरजी महाराज
- १३ " " " " श्री खीन्द्रनागरजी महाराज

साध्वीजी महाराज

- १ श्री विदुषी श्री उमगधीजी
- २ " " " " श्री बरवाणधीजी
- ३ " " " " श्री इन्द्रधीजी
- ४ " " " " श्री वसन्धीजी
- ५ " " " " श्री धनुषमधीजी
- ६ " " " " श्री गम्पन श्रीजी
- ७ " " " " श्री विदुषी श्री विचक्षण श्रीजी
- ८ " " " " श्री दोतलधीजी
- ९ " " " " श्री हृदयधीजी
- १० " " " " श्री रणजीत श्रीजी
- ११ " " " " श्री विपुणधीजी
- १२ " " " " श्री तिलक श्रीजी

- १३ श्री विनीता श्रीजी
- १४ " " " " श्री गजना श्रीजी
- १५ " " " " श्री विभुष श्रीजी
- १६ " " " " श्री रमणिव श्रीजी
- १७ " " " " श्री हीरा श्रीजी
- १८ " " " " श्री प्रवीण श्रीजी
- १९ " " " " श्री प्रभा श्रीजी
- २० " " " " श्री शिवेन्द्र श्रीजी
- २१ " " " " श्री दिव्य प्रभा श्रीजी
- २२ " " " " श्री माणव श्रीजी
- २३ " " " " श्री चन्द्रवर्मा श्रीजी
- २४ " " " " श्री मनोहर श्रीजी
- २५ " " " " श्री सूर्यप्रभा श्रीजी
- २६ " " " " श्री गुलोचना श्रीजी
- २७ " " " " श्री सुदश श्रीजी
- २८ " " " " श्री चन्द्रप्रभा श्रीजी
- २९ " " " " श्री गुरुना श्रीजी
- ३० " " " " श्री मंजुला श्रीजी
- ३१ " " " " श्री रतिधीजी महाराज
- ३२ " " " " श्री जग श्रीजी महाराज
- ३३ " " " " श्री राजेश श्रीजी महाराज
- ३४ " " " " श्री धनुष श्रीजी महाराज
- ३५ " " " " श्री जगदत्त श्रीजी महाराज
- ३६ " " " " श्री जग श्रीजी महाराज

पड़ि लाभना और चार प्रकार के आहार के नाम अर्थ सहित २३०

१२ बारवी शिद्धामें टीले पसच्चे साधुको संयम में दृढ़ करने को रूब नर्म गर्म सूत्रके न्याय शिद्धा देनेकी विधि २३५

१३ तेरवी शिद्धामें रात्रीके धर्म करनेकी विधि २४५

१४ चौदवी शिद्धामें शूद्र वर्णी कृषाणादिक को उपकार निमित्त ८ आठ प्रकार की शिद्धा देनी कहीहै सो २४७

१ प्रथम शिद्धा में बैलों को त्रास देनेकी मनाहीहै और बैल किस कर्म से झरेंहैं असा विचार २४७

२ दूसरी शिद्धामें बूटे बैल को कसाई के बेचने की मनाहीहै २४९

३ तीसरी शिद्धामें हल फेरने में यत्न करने

ने की मनाही है और खेतादिक में अग्नि लगा
ने की मनाही है और इत्यादि कई प्रकार
के यत्न करने की विधि है २६२

८ आठवीं शिक्षा में शूद्र वर्ण के नर तथा
नारी को सुदत्त करने की प्रेरणा ज्ञानी को
न अज्ञानी कौन चतुर और मूर्ख कौन ब्रा
ह्मण कौन और चंडाल कौन इत्यादि ॥ २६३

अथ पूर्वक व्रत

१० दसवांश शिक्षा व्रत जो आश्रव की मर्यादा
रूप संवर है तिसका स्वरूप २७०

११ ग्यारवांश शिक्षा व्रत जो षोडश साल में
पोसा करने का स्वरूप २७०

१२ बारवां शिक्षा व्रत जो अतिथि सं विभाग
अर्थात् साधु को भिक्षा देने की विधि . . . २७२

प्रश्न

ज्ञान दीपिका ग्रन्थ में तुमने यह पूर्वक

❁ शुभ सन्देश ❁

समाज के मंगलमय जीवन का यह शुभ और सुन्दर अग्रसर है, कि भारत के विस्तृत नगर अजमेर में सत्य और अहिंसा के प्रबल प्रचारक, अपरिग्रह और अनेकान्त के समर्थ प्रसारक, महान् क्रांतिकारी, सत् शिरोमणि, शासन प्रभावक तथा युग भास्कर परम पूज्य दादा जिजदतमूरिजी महाराज का अष्टम स्वर्गारोहण शताब्दी महोत्सव दिनांक २०-२१ व २२ मई को महान् आयोजन के माध्यम से हो रहा है।

दादाजी का जीवन दशन, ज्ञान और चारित्र्य का त्रिवेणी सगर था। दर्शन की साधना में वे अचल हिमाचल के तुल्य स्थिर थे, ज्ञान की साधना में वे सागर के समान गभीर थे, और चारित्र्य की साधना में वे एक सुदृढ़ सुमट थे।

दादाजी का जीवन मत्स्य, शिव और सुन्दर का सुरभ्य समन्वय था। वे समाज के शिव थे, जिन्होंने समाज सागर से समुत्थित विष का पान करके जगत्-वन्द्याण के लिए अपने सप-पूत जीवन का अमृत प्रदान किया। समाज प्राति महायज्ञ के वे एक अध्वर्यु थे।

उन्होंने अपने युग के विकारों को विचारा का रूप दिया, स्वार्थ को परमाय में बदला पददलित मानव का नया मूल्यांकन किया। वपोल कल्पना और आभिजात्य के अहत्व पर आघारित जातीयता को नया स्कार प्रदान किया जो आज तक हमारा नहीं कर सका, और नहीं कर सकेगा। उस प्रदीप्त आत्मा ने अपने दिव्य सदेश द्वारा मानव को युग युग से अवरुद्ध चेतना को एक नया प्रवाह दिया, नई दिशा दी। आभिजात्य के दुग और ऊच-नीचपन को दानवों की वारों को भूमिगत करन के लिए ही सम्भवतः उनका प्रसुप्त देवत्व जाग उठा था।

समाज मस्कार के अतिरिक्त उन्होंने सरस्वती के किनारे कोपागार में अमिताव राजना भी की थी। लोक-योग्य और पण्डित-योग्य दोनों प्रकार के साहित्य में उनकी ऐनी लेखनी आज भी एक चुनौती है।

अध्यात्म योगी, समाज सस्कारक, मुमहान् साहित्य म्प्टा—और इन सबके चढकर मुधावर्षी उग महान् सन्त के जीवन से यदि एक भी सद्गुण का कण कण पाकर उसे जीवना में विराट् बना सके, तो हमारा यह शताब्दी महोत्सव मनाना सफल हो सकेगा।

उपाध्याय, कविरत्न, श्री अमरचन्द्रजी महाराज
कुचेर (भारवाड)

श्रीः प्रार्थना

मैं सब परमधार्मिक जैनी भाइयों को चरणारविन्दों में विनति पूर्वक निवेदन करता हूँ कि इस उत्तम रत्न "ज्ञानदीपिका" ग्रन्थ को मैंने बहुत यत्न से छुपाया है, और प्रार्थना करता हूँ कि आप लोग बड़ी प्रसन्नता पूर्वक इस पुस्तक को आचोषान्त पढ़ेंगे और अन्य सब भाइयों को भी दिखाकर इस मेरे परिश्रम को अवश्य ही सफल करेंगे

मेहरचन्द मैनेजर
संस्कृत पुस्तकालय
सैदमिठा बाजार
लाहौर

● इस महोत्सव में मैं दूरी के कारण उपस्थित होने में असमर्थ हूँ। मैं इस महोत्सव की हार्दिक मफनना चाहता हूँ। शुभ कामनायाँ एव हार्दिक श्रद्धा मन्त्रि—

पी० के० गोड, एम० ए०
पूना ५

● अमनस्यता के कारण अष्टम् स्वर्गारोहण शताब्दी महात्मव में उपस्थित नहीं हो सकता। मेरी यही कामना है कि महात्सव पूण सफलता प्राप्त करे।

गिणजी देवगो
मटाहावाले

● मैं आपके महोत्सव को मफनना का इच्छुन हूँ।

बिष्णु प्रसाद गिरधारीलाल मेहता
केम्प-बाबू (राजस्थान)

● महोत्सव के निमन्त्रण के लिए धन्यवाद। साहित्य, कला एव सांस्कृति का यह अनुष्ठान सफल हो, यही कामना है।

बिनयमोहन शर्मा
हेड ऑफ डिप० हिन्दी विभाग नागपुर विश्वविद्यालय नागपुर

● आपके महत्वपूर्ण सांस्कृतिक आयोजन की मैं भगतकामना करता हूँ। श्री जिनदत्तमूर्तिजी की पुण्य स्मृति में मेरी श्रद्धाजलि स्वीकार कीजिए। आशा है भारतवष उनके वाच्यमय आचरण से नई जिम्मा ग्रहण करेगा।

पोद्दार रामायतार अटल
बिहार के बरि ममीशुनुर, बिहार

● पूजन श्री जिनदत्तमूर्तिजी अष्टम स्वर्गारोहण शताब्दी महोत्सव के शुभावसर पर आयोजित साहित्य, कला एव सांस्कृतिक अनुष्ठान में सम्मिलित होना का धामन्त्रा के लिए ततमस्तव हूँ। उम्पव सानन्द गन्गव हो और इस उम्पव से साहित्य, कला एव सांस्कृति के प्रांगण में नयान केता आपके, तबकीबा आपके यही भगत कामना है।

बिद्यापी मरेड, बी० ए०
अटल, विष्णु प्रणेन विधान सम

● उम्पव की सफलता के लिए अपनी हार्दिक शुभ कामनायाँ प्रेषित करने हुए मुन् अमार प्रगभना है वक् उम्पव आन होना से मना रहे हूँ—इसके लिए धामन्त्रा की हार्दिक धामार्थ है।

महेन्द्र
अम्पव साहित्य मरेन अम्पव

● उत्सव का सफलता चाहता हूँ ।

डा० बलदेव प्रसाद मिश्र, उपाध्याय, मध्यप्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन,
नागपुर १

● आपके आयोजन की सफलता के लिए शुभ-कामना करता हूँ ।

कृष्णादेव, सुपरिटेण्डेंट सेंट्रल सर्कल आफ आर्कित्याजी
भोपाल

● मैं उत्सव की पूर्ण सफलता चाहता हूँ और चाहता हूँ कि जन समाज अपनी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को समझे और उसका पुण्य प्रकाश जगत् के लिए अर्पित करने में मचेष्ट हो ।

महेन्द्र कुमार 'याया'चाय
बौद्ध दान के प्रोफेसर
हिंदू विश्वविद्यालय ५

● श्री अद्वैत जिनदत्तसूरि के अष्टम स्वर्गारोहण अताब्दी महोत्सव के महान् शुभावसर पर होने वाले साहित्य, कला एवं सस्कृति सम्मेलन का अपूर्व आयोजन जाता के सांस्कृतिक उन्नयन में पूर्ण सहायक सिद्ध हो । सम्मेलन की सफलता में मेरी मंगल कामना स्वीकार कर लीजिये ।

प्रकाश 'भारिल्ल' शास्त्री संपादक 'समति सदेश'
जबलपुर

● इस मंगल अनुष्ठान के लिए अपनी हार्दिक शुभ कामनाएं प्रेषित करता हूँ । नये राष्ट्र की आत्मा का संस्कार ऐसे ही पुनीत प्रयत्नों से संभव है मेरा अपना सुझाव है कि ऐसे आयोजन हर राज्य में किए जाय । एक बार फिर अपनी शुभ कामनाएं व्यक्त करते हुए,

राजेश्वर गुरु, प्रोफेसर हमीदिया कालेज,
भोपाल

● इस सारे आयोजन की सफलता के लिए शुभ कामना भेज रहा हूँ । अवकाश न मिलने से उपस्थित न हो सकूंगा इसके लिए खेद है ।

विशेष निवेदन है कि सारे सम्मेलन को वागजी रूप में ही न रखकर कार्यशील करना है उसके लिए ठोस कदम उठाना है । जिम मिशन रहे हैं उसमें नये हुए सेवा भावी कार्यक्रमों की आवश्यकता है जो केवल केवल

रणजीतसिंह
बादी आश्रम,

सो उनकी मूर्ति वनाके सरागा कुंदवाकी मूर्तियाकी तरह गहना कपड़ा फल फूलआदि से पूजने का उपदेश करने वाले सो संवेगी कहाते हैं ॥

और दूसरे जो आत्मज्ञानी अर्थात् स्वआत्म पर आत्म समदर्शी, सनातन शास्त्रों के अनुसार कठिन क्रियाके साधक और शान्ति दान्ति ज्ञान्ति आदि का उपदेश करने वाले सो छूडिये कहाते हैं

सोई पूर्वक

संवेगी साधु आत्मारामजीने जैन तत्वादर्श ग्रन्थ छपाया है सो तिस ग्रन्थ को प्रवरा करके अनेक जनोंको ऐसी शंका उत्पन्न होती है कि जैनतत्वा दर्श ग्रन्थ में जो २ कथन है (सो) सर्वही न्याय है तथा अन्याय है सो तिस भ्रमरूपअन्धकार के नाश करनेके लिये यह ज्ञान दीपिका ग्रन्थ, दीपिकावत् रचा गया है कांकि इस ज्ञान दीपिका के वाचने और सुनने से जैनतत्वादर्श ग्रन्थमें जो २

निम्नलिखित सज्जनो की शुभ कामनाएँ तार द्वारा प्राप्त हुई हैं

- अनुपस्थिति की क्षमा चाहता हूँ तथा शताब्दी महोत्सव की पूर्ण सफलता चाहता हूँ ।

सालमचद गोलेछा
गुड्डलोर (दक्षिण भारत)

- आशा करता हूँ, पूज्य गुरुदेव का सदेश घर घर पहुँचे ।

नमोचद भावक
मद्रास

- शताब्दी महोत्सव को पूर्ण सफलता चाहता हूँ ।

सालमचद गुड्डलोर
मद्रास

- आवश्यक कार्यवश पहुँचने में सवथा असमर्थ, महोत्सव सफलता की हार्दिक कामना करता हूँ ।

सौभाग्यमल
जबलपुर

- शताब्दी महोत्सव की पूर्ण सफलता चाहता हूँ ।

मुनि कान्तीसागर वरुणसागर
राजामुन्नी

- निर्वाण महोत्सव की पूर्ण सफलता चाहता हूँ ।

मदनचंद गोलेछा
टाटानगर

- महोत्सव की पूर्ण सफलता की कामना करता हूँ ।

धर्मचंद गोलेछा
गुड्डलोर

- उत्सव की पूर्ण सफलता चाहता हूँ ।

चिम्मनसिंह स्वल्पचंदजी पटया
भूतपूर्व, विधान एमा मदस्य, राधनपुर

- महोत्सव की सफलता के लिए हार्दिक शुभ कामना भेजता हूँ ।

रा व आसकरण हेमचंद
महोदा

- मैं उत्सव की पूर्ण सफलता का इच्छुक हूँ ।

धर्मचंद कोचर
फतौषी

निस प्रसाद प्रकट करुं कुछक न्याय अन्त्याय १

अथ जैन तत्त्वादर्श ग्रन्थ में जो २ विरुद्ध लिखे
हैं उनमें कितनेक विरुद्ध यहां लिखते हैं

आत्माराम संवेगीने जैन तत्त्वादर्श ग्रन्थ
छपवाया है उसमें त्यागी पुरुष साधुओं को
डुंडिये (नाम) संज्ञासे कहकर बहूत निंदा
लिखी है सो उसको हम उत्तर देते हैं कि हे भाई!
तुमको यह भी खबर है कि डुंडिये किस रीति
से कहाँ हैं सोई हम डुंडिये कहानि का कार
ण लिखते हैं जैसे कि

अनुमान १७१८ के सालमें सूरत नगर के निवा
सी जातिके श्रीमाल एक लवजी नाम शाहकार
ने वजरंगजी यतिके पास दीक्षाली और शास्त्र
पढनेलगे फिर शास्त्रके अभ्यास होनेसे दीक्षा
लिये पीछे दो वर्षके बाद जो भ्रष्टाचारी मठा व
लवी यति लोकये उनकी शास्त्रोक्त क्रियाहीन

श्री जिनदत्तसूरि अष्टम शताब्दी महोत्सव का

तृदिवसीय कार्य-विवरण

२० मई १९५६ का दिवस इतना सुन्दर, आकर्षक और उत्प्रेरक था जब कि बारहवीं-तेरहवीं शताब्दी के ज्योतिषर युगप्रधान आचार्य श्री जिनदत्तसूरिजी महाराज का अष्टम शताब्दी स्वर्गारोहण महोत्सव का काय उत्साह और उमग के साथ प्रारम्भ हुआ।

प्रातः ७ बजे का समय था, अजमेर में जहाँ देखो वहाँ रङ्ग-विरङ्ग परिधानों से परिवेष्टित अनेक आभूषणा से विभूषित महिलाएँ व पुरुष इतस्ततः उल्लसित बदन से परम गुरुदेव के समारोह में भाग लेने, जो भारत के विभिन्न भागों से एकत्र हुए थे, में तन्मय थे। सचमुच भक्तिशिपक हृदय का उल्लसित वायुमण्डल जनमन को प्रमुदित कर रहा था। स्वभावतः प्रकृति भी मानव का साथ दे रही थी। भोषण उष्णता क दिनों में ना यहाँ पूण शीत का अनुभव हो रहा था। ऐसा, लग रहा था जैसे इतिहास प्रसिद्ध अजयमेरु—अजमेर—में भारत सिमट गया हो।

स्वर्णिम सूर्य की प्रभातिक किरणें जनमन के सौंदर्य को द्विगुणित कर रही थी। सभी के मन में एक भाव था कि अध्वक्ष महोदय कब पहुँचें और कब उनका भावपूण स्वागत किया जाय। प्रातः ८।। का समय था। अजमेर का रेल्वे स्टेशन “जन धर्म की जय हो” के गगन में दी नारों से गूँज उठा। शांत और शीतल समोर की लहरिया वायु-मण्डल की और भी परिष्कृत कर रही थी। मानव की सामूहिक भावना जब भक्ति के रूप में या श्रद्धा के श्रोत से प्रवाहित होती है तब उस परिपक्व होने लगता है। ऐसा लग रहा था भले ही भक्ति स्वतन्त्र रस न हो पर आज साहित्य की इस व्याख्या का अपवाद दृष्टिगत हो रहा था। शोभा यात्रा की विस्तृत तैयारी पूव से ही की जा चुकी थी। लगभग एक मील की शाभा-यात्रा अजमेर के लिए अप्रुव थी। खुली मोटर में बैठे हुए प्रस्तुत महोत्सव के अध्वक्ष महोदय श्री मेहताचन्द्रजी गोलेछा और स्वागताध्यक्ष श्री रतनचन्द्रजी सचेती जनता के स्नहपूर्ण अभिवादन का उत्तर करवद्ध अजलि किए दे रहे थे। अनेक प्रकार के वाद्यों में स्वर लहरिया निकलती हुई उत्साह को द्विगुणित कर रही थी। गजराज अपनी मस्तमरी चाल से चल रहे थे। माग में जनधर्म एवं आचार्यवय श्री जिनदत्तसूरिजी की जय के गगनभेदी नारे प्रतिध्वनि के रूप में गूँज रहे थे। मन्त्र गूहा की खिडकिया में आवाल-वृद्ध उत्सुकता के साथ शोभा-यात्रा का निरीक्षण कर रहे थे। मदारगट में पुरानीमडो के माग का सुशोभित करता हुआ जुलूम नया बाजार और घानमडो में पहुँचा। प्रमत्त लापन कोठडी में पहुँच कर विसर्जित हुआ। स्मरण रहे कि स्वागताय नगर में कई द्वार भा बनाए गए थे, विनोयता यह रही कि जनधर्म के सभी सम्प्रदायों का इस जुनस के प्रति सम्भाव था।

का संदिरहे अथवा यह मेरा उपाश्रयहे इत्यादि
 यथा सूत्र "चेइयं उपावेइ दद्याहारीणो मुणी भ
 विस्सइ लोभेण सालारोहरा देउल उवहारा
 उद्यमणा जिण विंव पइठावणा विहिउ माइरहिं
 वहवे" इत्यादि (सूत्र) अस्मार्थः

मूर्तिकी स्थापना करावेंगे, द्रव्य धारी सुनी घणो
 ही होजावेंगे, लोभ करके सालारोपणा अर्थात्
 मूर्तिके कंठमें फूलोंकी मालाडालके फिर उस
 का मोल करावेंगे अर्थात् नीलाम करावेंगे,
 देहरे पांचे तप उजमणा करावेंगे, जिन विम्व
 प्रतिष्ठा करावेंगे, इत्यादि घणो पाखण्ड होजावें
 गे सो. इस न्यायसे सावित होताहै कि यदि
 पहिले यह क्रिया होती तो श्री^५ भद्रवाहु स्वामी
 जी ऐसे कों कहते कि आरोको ऐसे क्रिया करने
 वाले होवेंगे ॥

और आज कल देखनेमें भी बहलता आर

में यह विचार घर किए हुए है कि आप के उन दलित बग के प्रतिनिधि के जाने ही भारत सरकार में सम्मिलित हूँ पर जिनके बायूजी को निकट से देखा है वे अधिचार के स्वर में कह सकते हैं कि क्यों विरोध जगो कोई वस्तु या आग्रह आपने जीवन में कभी नहीं पनपे। आप तो अखंड मानवता के समर्थक एवं अखंड मानवीय सत्त्वृति के प्रतिनिधि के रूप में जीये हें और जीते रहेंगे। आपका हादिक प्रोदाय समय २ पर विभिन्न रूपों में प्रकट हुआ है। व्यक्ति को अनेक व्यक्तित्व व विचारों की परंपरा का जीवन में आपा सदा में स्थान दिया है। गौभाग्य की बात है कि आचार्य जिनदत्तमूरिजी जैसे उदात्त नेता एवं ताकानिक लाभ चेतना के अग्रदूत के अष्टम गताब्दी स्वर्गाराहण उच्चवर्ण उद्घाटन आपने ही कर समाज द्वारा सम्पन्न होने जा रहा है। यह जन समाज का परम सौभाग्य है कि अनेक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय तायों का उत्तरदायित्व आपने कंधों पर रक्थे हुए भी आपने अपने मूल्यवान कुछ क्षण इस अवसर के लिए प्रदान किए। अब मैं बायूजी से विनम्र निवेदन करता कि वे अपने मननीय प्रवचन द्वारा समाज का उद्घाटन करें।

तत्पश्चात् ताविया के महामंडाल के बीच बायू जगजीवनरामजी भाषण देन लड़े हुए। उम समय उच्चवर्ण के अध्यापक एवं राजस्थान के सुप्रसिद्ध व्यक्तितायों श्री मेहतायान्दजी गालेछा ने मुनह्नी माता बायूजी के मन में परमांतर स्वागत किया। रिमनबदन में उद्घाटन प्रारम्भ करनेके बाद बायूजी ने कहा —

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ
 उद्घाटन भाषण ॐ
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ

आदर्शगत मुनियय, अध्यापक महादय, श्रविया और गजरा।
 मैं नहीं समझ पाया कि मैं इस कार्य के लिए कैसे अधिचारी चुना गया है। ऐसे महापुरुष आचार्य श्री जिनदत्तमूरिजी के अष्टम गताब्दी स्वर्गाराहण उच्चवर्ण में सम्मिलित होकर मुझे आपने यहाँ आमंत्रित किया उसे तो मैं अपना अहोभाग्य समझता हूँ। ऐसे अवसर पर तो कोई गलतफर्मी, कृति मुनि ही इस के अधिचारी हो सकता थे लेकिन जब कुछ विचार का आग्रह हुआ तो मैंने ऐसा समझा कि इस अवसर मे लाभ उठाने के ली आचार्य श्री के शरणों में अपना अहोभाग्य अधिचारी अधिचारी का सौभाग्य प्राप्त करूँ। इतिहास में यहाँ आ गया। ऐसे अवसरों पर ध्यान श्रमणाय की शक्ति ही जाता है। जब मे गच्छि का कम पता, मनुष्य हृदय में अराधर जिज्ञासा की भावना रही है कि आचार्य हम क्यों है ? क्यों मैं आप, क्या आप, क्या जायने और किन किन यहाँ आए। यह एक स्वाभाविक प्रश्न है जो अज्ञान व्यक्ति के हृदय में उठता है और जब मे इस प्रकार का प्रश्न पला और जब मे यह प्रश्न उत्पन्न का हृदय में पैदा हुआ तब मे तत्पश्चात् सोचा की क्या इस प्रश्न का उत्तर देन मे लता। विचार ही तत्पश्चात् हुए और विचार ही तत्पश्चात् मे उहाँ इस प्रश्न का उत्तर विज्ञाना सेकित नहीं प्राप्त कर पाय का अन्तर ध्यान श्रमण कि जिन्हें भी तत्पश्चात् हुए और विचार। मैं भी उस प्रश्न का उत्तर देन का प्रश्न किया जब मैं बहुत दूर एक एक गाँव जाता है। जन मे आपका वक्ता कि वीर प्रज है। अन्त किन्ती भी प्रश्न को मैं मैं पाठ कर भागीय परंपरा का सम ही पाठ आचार्य मे आह

श्रमणा साध अणगार गुर. वंदं चित हर्षत ॥१॥
 इत्यादि परन्तु यहाँभी साधु की संवेगी नहीं लिखा
 है कारणात् स्वच्छंद संवेगी कहाने लगे और अप
 ने व्यवहार वमूजिव, बुद्धिके अनुसार ग्रन्थ रचा
 ने लगगये और पूर्वक जिन विन्ध प्रतिष्ठाआदि
 कराने लगगये और तिस समयमें जो कोई साधु
 तथा साधी तथा श्रावक वा आविका, प्राचीन स
 त्राबुसार क्रिया साधक थे उनकी हीला निंदा कर
 ने लगगये यह कथन सोला स्वप्नके अधिकार
 में खुलासा है इति.

और भगवंत श्री ५ महावीर स्वामीजी के पीछे १००
 वर्षके लगभग ७ सप्तम पाट श्री ५ भद्रवाङ्ग स्वामी
 जीके पीछे संपूर्ण १४ पूर्वका ज्ञान तो विच्छेदगया
 क्योंकि स्थूलभद्रजी १० पूर्वके पाठी झरें हैं और स्व
 पनों के अधिकारमें भी लिखा है कि भद्रवाङ्ग स्वामी
 जीके पीछे श्रुतकेवली नहीं होवेंगे सोई भद्रवाङ्ग

शताब्दी महोत्सव के उद्घाटक



माननीय जगजीवनरामजी
सचिव मन्त्री-भारत सरकार नई दिल्ली

शताब्दी महोत्सव के अध्यक्ष



सेठ मेहतावचन्दजी गोलेछा, जयपुर
जैन सांस्कृतिक सम्मेलन के अध्यक्ष

शताब्दी महोत्सव के प्रमुख सहयोगी



माननीय हरिभाऊजी उपाध्याय
मुख्य मन्त्री-अजमेर राज्य, अजमेर



माननीय नरोत्तमजी जान्गी
जयपुर

और ऐसे ही श्री ५ सुधर्म स्वामीजी की परंपरा
 थी, विरुद्ध वाहलता अन्य २ अर्द्ध और अन्य २
 गच्छ अन्य २ समाचारी प्रवर्तक यति लोक व
 द्धत होते रहे और यथार्थ सूत्रोक्त चारी चोड़े
 ही होते रहे कोंकि श्री ५ भद्रवाह स्वामी कृत
 कल्पसूत्र श्री ५ भगवंत महावीर स्वामी
 निर्वाण कल्यारो कथनम् सत्कृत इन्द्र व
 क्त भगवते श्री ५ महावीरे जन्म रासी तुद्र भस्म
 रासी ग्रहे स्मागते ३३ कारणात् जिन शासणे
 दो सहस्र वर्षे नो उदय पूया भविस्स ३३ तस्मात्
 कारणात् अनुमान १५३१ के साल दो हजार वर्ष
 पूर्ण करण्ये कि नगर अहमदावाद का निवासी
 जातिका वैश्य, नाम लोंका, तिसने सावध व्या
 पार अर्थात् वाणिज्य छोड़के आजीविका के
 निमित्त यतियोंके पाससे पराचीन अचार
 ज्ञादि भंडार गत जो शास्त्र्ये उनमेंसे लेकर

मानो है और लागा की भावना एसी बन जाती है कि चाहे सुन्दर भावना हो उसको भी तोड़ना, तो फिर शानिया हानी है। हमारे धर्म के दरशमल में भी बहुत सी शानिया हुईं और जब २ शानिया हुईं है तब २ ही मानवता के लिए अच्छा काम हुआ है। कब २ और क्या २ शानिया हुईं इसका सम्बन्ध इतिहास है उसका विस्तृत विवेचन करने का तब तो मेरे पास समय ही है और तब मैं अभी करना ही चाहता हूँ लेकिन इतना जरूर बताना चाहता हूँ कि अब तब लगानार जिनने भी दशन हुए, जिन २ लोगो ने भी एक फिलो-सोफी, जीवन दशन लागो के सामने रखा उन सब ने इस पर अवश्य जोर दिया कि इसान के सामने एक सम्पन्न दशन होना चाहिए, इमान के सामने एक सम्पन्न ज्ञान होना चाहिए। दर्शन और ज्ञान ने ही उमका काम नहीं चलता, मनुष्य का अपना चरित्र और आचरण भी होना चाहिए। उच्छे २ गिद्वान्ता की माला जपा करें लेकिन जब तक हम उनको अपने जीवन में नहीं उतार लेते, कोई फायदा नहीं आता, कोई लाभ नहीं होने वाला। इसलिए आप किसी भी धर्म को लें उसमें महत्व दिया हुआ है सम्पन्न दशन, सम्पन्न ज्ञान और सम्पन्न चरित्र का। सम्पन्न दशन, और सम्पन्न ज्ञान ही काम नहीं चलता जब तक कि हममें चरित्र न हो। मैं एक बात जरूर मोचता हूँ कि अगर हमारा दशन हो गनत है तो हमारा ज्ञान भी गलत होगा और ज्ञान गलत हुआ तो हमारा जो आचरण है, जो चरित्र है यह भी गनत हो जायगा लेकिन सुन्दर दशन है, अच्छा तेज है, अच्छा ज्ञान भी है तब उन अच्छाइया का कोई मूल्य नहीं जब तक कि वे आचरण में न हो। चरित्र मनुष्य जीवन का आवश्यक अंग है। वैसे व्यवहार रूप में आप किसी भी धर्म को लें, कोई भी धर्म यह नहीं कहना कि तुम चोरी करो, कोई धर्म यह नहीं सिखलाना कि तुमको हिंसा करनी चाहिए। जन धर्म में भा बहूत ऊँची २ बातें हैं, पाँचा महाव्रत इनमें मौजूद है लेकिन प्रश्न यह है कि हम उनको जीवन में उतारते हैं या नहीं। मैं मोचना हूँ कि जिनने भी इस देश में धर्म हुए हैं उन सब के अन्दर बहुत उच्छे २ गिद्वान्ता हूँ लेकिन इनके अतिरिक्त भी एक माधारण ज्ञान इमान की हाना चाहिए।

मैं एक चीज और सोच रहा था, आज के युग में यह कहा जा रहा है कि हमारे देश में एक इस तरह की समाज आना होगी जिसे समाजवादी समाज कहा जाता है। अब आपका निमंत्रण मिता तो उम समय में मैं यह मोचने लगा कि यह जो समाजवादी समाज की रचना की बात है यह कोई तर्क या आपने लिए नहीं है। पहल भी हमारे मुल में इस तरह की बात रही है। मैंन विचार जातगी करने दशा है कि जब जन तीर्थार हुए उन्होंने पाँच व्रतो का जो विज्ञान आपने सामने रखा होगा तो उम समय उतर श्रान में भी उम तरह के समाज की भावना रही होगी—जिन समाज में कोई व्यक्ति मारो सम्पत्ति अपने पास में एकत्रित न करले तबको कि उसका आवश्यकता नहीं है। सम्पत्ति एकत्रित की तब तबिन उमने माय उमको आवश्यकता का परिभाषा भी होना चाहिए। मैं नहीं यह बताना चाहता हूँ कि एक व्यक्ति के पास अधिक सम्पत्ति हो जाय इसमें दानी करानी नहीं होती लेकिन कोई सम्पत्ति के बच पर उसका मनुष्यवाग तब करके, उससे हमने शानिया पर दवाय शाने और नाजायज दवाय व्यक्तियों पर खाला जाता है तो यह

र्थको छूँडके उनके पास पैनालीस युरुष,
 दीक्षा लेकर देशांतरोंमें शास्त्रोक्त उपदेश
 करके जिनधर्म दिवाने लगे ततः तासमय
 जिन शासनका उदय होता भया इति-
 और संवेगी लोकभी ऐसे कहते हैं कि छूँडि
 क मत ड़ाछक ज्यादा ४०५ चार सौ वर्षसे
 निकला है सो सत्य है परन्तु पूर्वक परमा
 र्थ को अंगीकार नही करते हैं क्योकि सत्क
 त इंद्रके कहने वस्तुजिव तो पुराने शास्त्रा
 नुसार सनातन धर्म प्रकट भया इति-
 इस रीती से पूर्वक यतिलेकोंकी क्रिया हीन
 होरही थी सोई पूर्वक यतियोंकी लवजीना
 म यतिने क्रियाहीन देखकर अनुमान १७२०
 के सालमें अपने गुरुको कहने लगे कि तु
 म शास्त्रोंके अनुसार आचार क्यों नही पालते
 तव गुरुजी बोले कि पञ्चम कालमें शास्त्रो

यदि बड़े ह, सम्पत्तिशाली ह, विद्वान और बुद्धिमान हें और हमारे सामने जब हमारे ही छोटे भाई आते हैं जो निधन ह, मूख हैं उनसे अगर हम नफरत करते ह, दुराव करते ह तो यही हमारे बंधनों का कारण बन जाते हैं, इन्हीं से हम कर्मों के गुलाम बन जाते ह, बंधना में जकड़ जाते ह इन बंधनों से मुक्त हो जाना ही जिन्दगी में ही मुक्त होना है। तो मं यह कह रहा था कि यह जो समाजवाद की भावना है उसमें जातिवाद-वर्गवाद को कोई स्थान नहीं दिया जा सकता, इसका कोई समन्वय हा नहीं सकता। इसके साथ ही जब समाज के अंदर यह भावना आ जाती है कि हमारा ज्ञान सीमित लोगों तक ही रहे, बाहर के लोगों को उससे लाभ न हो-जब ऐसी भावना आ जाती है तो वह धम गिरोह बन जाता है, वह धम धर्म नहीं रह जाता, एक दायरे में, एक सीमित क्षेत्र में आ जाता है, उसमें विश्व कल्याण की, मानवता के कल्याण की भावना नहीं रह जाती। दुनिया में जितने धम हुए, सीमित और संकुचित रहे। ईसाई धर्म पहले बहुत ही संकुचित रहा, यहूदियों के अतिरिक्त किसी को ईसाई नहीं बनाया जाता था लेकिन उसमें फिर प्राति हुई और बाहर के दूसरे लोगों को भी ईसाई बनाया गया। इसी प्रकार बौद्ध भी जब हुए तो वे क्षत्रीय कुल के थे और शुरु शुरु में उनका ध्यान यही रहा कि क्षत्रियों को ही बौद्ध धम में लिया जाय लेकिन धीरे २ यह भावना लुप्त हुई और फिर बौद्ध धम हिन्दुस्तान से बाहर भी गया और इसी में यह पूरा रूप से विकसित भी हुआ। इसी प्रकार आज आम तौर पर हिन्दुस्तान में ही यह धारणा है कि जैन धम तो आज कुछ चुनी हुई जातियों का ही धम है, आज भी इसके द्वारे में भिन्न २ प्रकार को आतिया रही ह और लोगों की इनके द्वारे में भिन्न २ प्रकार की राय है लेकिन यह सही है कि यह भावना चली और बहुत दिनों तक चलती रही और आज भी है। आचार्य जिनदत्तसूरि की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उन्होंने एक रास्ता खोला और लोगों का इस धर्म में प्रवेश पाने का अवसर प्रदान किया। यह तो मानी हुई चीज है कि जहां मध्यक ज्ञान होता है वहां तो समस्त लोगों के लिए, मानवता के विकास के लिये होता है और अगर हमको अपने ज्ञान में संदेह नहीं है तो हमें अपने ज्ञान को दुनिया में प्रसारित करने में हिचकिचाहट नहीं हानी चाहिए। अपने माल को दिखाने में लोगों को तभी डर लगता है जब वह ममभत्ते ह कि हमारा माल ठीक नहीं है। तो दुनिया में जितने भी धर्म बड़े उन सबका लक्ष्य प्राणा मात्र की भलाई करना ही था जिसमें प्राणी मात्र की भलाई का लक्ष्य न था वह आगे नहीं बढ़ सका, वह दुनिया का धम नहीं बन सका। मुझे तो आचार्य श्री की सबसे बड़ी विशेषता यह मालूम हुई कि उन्होंने जो एक लाख से अधिक अर्जुनिया को जैन बनाया उसमें उन्होंने जैन धम को समस्त मानवता के लिए प्रसारित किया।

यहां एक चीज मुझे और याद आती है। मैं जिस स्थान से आ रहा हूँ वह जैन धम का बहुत अच्छा क्षेत्र है और वहां पर जो जैन पुस्तकों का संग्रह किया है वह शायद हिन्दुस्तान के अच्छे संग्रहों में से है। मैं आरा में आ रहा हूँ। मेरा वहां के जन मित्रों से भी सम्पर्क है। जिस समय हरिजन के मंदिर प्रवेश करने का कानून पार हो गया, नाम तो मैं भूल रहा हूँ, लेकिन वार्ड मुनि

कोई. त्यों हम दुंड्यो धर्म दयामिं जीव दया
विन धर्मन होई ॥१॥

तब परस्पर लोक यों कहते भए कि यह
वह यति है जिनेने दुंडके क्रिया साधी है
ऐसे ही दुंडिया नाम प्रसिद्ध होगया और
उनकी दमित इन्द्रियपन रागरंग विषियादि-
विरक्ति जप तप रूप समाधिको देखकर व
हुत शिष्य होगये जो किसीको इसमें शं
का उत्पन्न होय तो जैनतत्वादर्श ग्रन्थमें
से सहीह करलेना. कोंकि वहां भी ५९२ पत्र
पर यह लवजीका कुछक कथन है और जो
कोई मत पक्षी ऐसे कहे कि लवजीने उक्त
से नवीन मत निकाला है तो फिर उसको
यह उत्तर देना चाहिये कि उस लवजीने
तो कोई उक्त शास्त्र नहीं रचाये कोंकि जे
नतत्वादर्श रचाने वालेने भी शास्त्रोक्त

रही है कि जितने भी महापुरुष आए और इसके लिए प्रयत्न किए लेकिन उनको इसमें पूर्ण सफलता न मिल सकी। ज्ञान और दशन की जो चीजें हैं उनको पीछे रख कर समाज में इस तरह की व्यवस्था हावी हो गई कि सिद्धान्त के रूप में जिसे गलत माना जाता है वह व्यवहार में समाज का एक आवश्यक अंग बन गई। इसके लिए चाहे आप बौद्ध धर्म को ले लें, चाहे ईसाई धर्म या मुस्लिम धर्म को ले लें सभी में यह चीज मिलती है। सिख-धर्म के अन्दर जाति व्यवस्था न थी लेकिन उसमें भी यह धर कर गई। जिम सिद्धांत को छोड़ने के लिए एक नये सिद्धान्त की रचना हुई उससे पहला सिद्धान्त तो न छूट सका लेकिन दूसरा समाज पर छा गया, वही चीज समाज का अंग बन गई और वह धर्म भी वहीं जाने लग गई। जन-धर्म में भी सिद्धांत रूप में तो जाति व्यवस्था को कोई स्थान नहीं है लेकिन व्यवहार में तो निश्चय ही है। समाज के अन्दर ता जाति व्यवस्था को माना ही जाता है और इसीलिए न कह रहा था कि जहां सम्यक ज्ञान हो, सम्यक दशन हो लेकिन सम्यक आचरण न हो वह नष्ट हो जाते हैं।

जन समुदाय एक ऐसा समुदाय है जो हमारे देश का एक सम्पत्तिशाली समुदायी में से एक है। ठीक भी है, गृहस्थी चलानी है, बाल बच्चों का पालन पोषण करना है इसके लिए तो सम्पत्ति का अर्जन करना ही होगा, यह तो ठीक है लेकिन इसके साथ साथ जो आपके जन-धर्म के सिद्धान्त हैं, अपरिग्रह की जो भावना है उसको अगर हम भूल जाते हैं तो फिर हमारी हालत ऐसी ही रह जाती है जसी कि एक जहाज के चक्कर में पड़ जाने से हो जाती है। हम भी इसी प्रकार ससार के भवर में पड़ जाय तो जो अपरिग्रह का सिद्धान्त है उसी से हम राण पा सकते हैं। आज जो समाजवादी व्यवस्था की बात है उसके जन्मदाता कालमाक्स ने कहा है कि जिस आदमी के पास सम्पत्ति है वह आखिर आती कहा में है? कार्ल मार्क्स ने कहा है कि सम्पत्ति ही हिंसा का ममुच्चय है। जिसकी मेहनत से सम्पत्ति पैदा की जाती है या सम्पत्ति पैदा होती है अगर उसकी मेहनत का रिवाज पूरा न दे दे तो फिर सम्पत्ति एकत्रित होने के लिए कोई गजाइन नहीं है। अगर हमने सम्पत्ति अर्जन की तो इसके मायने यह हुए कि हमने दूसरे की मेहनत का पूरा न मुआवजा नहीं दिया। जैसे एक खेतों में काम करने वाला है या और दूसरे काम करने वाले हैं हमने उनसे काम लिया तो हमको उनका पूरा न पारिश्रमिक देना चाहिए और अगर हमने नहीं दिया और उसे अपने पास रख लिया तभी वह सम्पत्ति हमारे पास एकत्रित होती है। बाल मार्क्स ने यही कहा है कि जब हम किसी से काम लेकर उसका पारिश्रमिक उचित रूप में नहीं देते हैं तो उसके दिल को ठग पड़ती है, चोट पड़ती है और यही हिंसा है। किसी के दिल को दुखाना, उसके दिल को चोट पड़वाना हिंसा ही तो है और इसीलिए सम्पत्ति का एकत्रित हिंसा कहलाता है। उन्होंने यह भी बताया है कि जब हम एक श्रमिक को उसको पारिश्रमिक नहीं देते हैं तो उसके दिल में यह भावना पैदा हो जाती है कि जब आज उसकी मजदूरियों का फायदा उठाया गया है और उसको पूरा पारिश्रमिक नहीं दिया गया तो जब मौका मिले तो वह भी उसका प्रदान ले। ता जो चीज काल मार्क्स ने कही वही चीज हमारे यहां के दशन में आई है कि अपरिग्रह होना

जी मुखवस्त्रिका रहित यातियोंका शिष्यथा
इससे नवीन मालूम हुई सीई लवजीने सूत्रा
नुसार मुखवस्त्रिका मुखपर लगाई और जो
कोई ऐसे कहे कि मुखवस्त्रिका मुखपर ल
गानी कहां चली है तो उसको यह पूछना
चाहिये कि मुखवस्त्रिका हाथमें रखनी क
हां चली है सो असल अर्थ तो यह है कि मु
खपर रहे सो मुखवस्त्रिका और जो हाथमें र
हे सो हाथवस्त्रिका और फिर कोई ऐसे कहे
कि मुखवस्त्रिका तो चली है परंतु डोरा कहां
चला है तो उसको यह कहना चाहिये
कि रजो हरणकी फली अर्थात् दाशियोंमें डोरी
पावणी कहां चली है और कै तारकी और
कै हाथकी चली है इत्यादि
सो अब इनदिनोंमें उन लवजी महाराज
के आमनाथ के साधु महात्मा उदयचंद्रजी

तां मं यहा आचार्य श्री के चरणों में अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए कहूंगा कि जो एक चीज कही जाती है कि कोई भी अज्ञानी जन बन सकता है तो यह तो बड़ी खुशी की बात है कि कोई भी जन-धर्म में आ सकता है। म यहा पर आपके सामने एक चीज रखना चाहता हू कि इस मौके पर आप जैन साहित्य के प्रचार के लिए कोई ठोस कदम उठायें तो ज्यादा अच्छा होगा। मिसाल के तौर पर मैं आपको बताऊ कि जब कभी आप अमृतसर जाय, सिखों के गुह्रद्वारे में जाय, वहा से जब आप निकलेंगे तो आपको वह इतना साहित्य दे देंगे कि आपको अगर सिख-धर्म के बारे में कुछ भी ज्ञान न होगा तो भी अमृतसर में घर आते ट्रेन में पढते २ ही आपको सिख धर्म के बारे में मालूम हो जायेगा कि सिख धर्म के मौलिक सिद्धान्त क्या ह। एसा ही प्रवचन आपको भी करना चाहिए। आपके ममाज में पैसे की कमी तो भगवान की कृपा से है ही नहीं। पैसे का एस कार्यो में ही आपको उपयोग करना चाहिए। मुझे अकबर भिन्न २ प्रकार के जल्सों में भी जाने का अवसर मिलता है, हिन्दु समाज के भी कई जल्से होते ह उनमें भी जब कुछ लोगों का आग्रह होता है ता म चला जाया करता हू और वहा भी म यही बताया करता हू कि जा आपके पास ज्ञान भंडार है उनको आप अपन तक ही सीमित न रखें बल्कि उसको दूसरे लोगों में भी प्रसारित करें ताकि वह समस्त मानवता के कल्याण की चीज बन सके। आचार्य श्री ने भी कई पुस्तकों को लिखा उनका लिखा साहित्य बहुत ऊंचा साहित्य है, धार्मिक क्षेत्र में और नीति के क्षेत्र में भी उन्होंने लिखा है ता जब आप उनके साहित्य को प्रकाशित करेंगे ता जो जन धर्म के मानने वाले ह वे तो उनको मानत ही ह लेकिन जो जनी नहीं है वे भी उनको मानने लगेंगे, उनकी जयन्ती मनाने लगेंगे एव जनी के रूप में ही नहीं बल्कि एक साहित्यिक के रूप में भी। इस प्रकार के साहित्य प्रकाशन से आपके जो सिद्धान्त ह उनका बहुत बड़ा प्रचार होगा इसीलिए आप न केवल जिनदत्तसूरि के ही साहित्य को प्रकाशित करें वरन् समस्त जैन-साहित्य को प्रकाशित कर तो वह आपके लिए सबसे बड़ी चीज होगी। इसीलिए आज आप इस उत्सव में यह तय करे कि न केवल श्री जिनदत्तसूरि के बल्कि समस्त जन साहित्य को प्रकाशित कर समस्त मानव समाज के लिए उसे उपलब्ध कराये तो आप आचार्य श्री की सबसे बड़ी सेवा कर सकेंगे। तो मैं इन शब्दों के साथ आपके समारोह का उद्घाटन करता हू और अपनी श्रद्धाजलि आचार्य श्री के चरणों में भेंट करता हू।

तर करके पूर्वक सत्तावलम्बियों को रोका
 भी है क्योंकि पिछले आचार्य षट् सतके न
 र्क शास्त्र रच गये हैं सो उन शास्त्रोंके वमूजिव
 वद्धत ही . परिश्रम करके इस ग्रन्थमें लि
 खित करी है और कई एक प्राचीन शास्त्रोंमें
 से जैन आमनाके अवतारोंका और गुरूनि
 ग्रन्थका और धर्मका कथन किया है और
 कई एक पूर्वके ज्ञान विच्छेद दूर पीछे य
 तिलोकोनें कुछ . तो प्राचीन शास्त्रानुसार
 और कुछ अपनी बुद्धि अनुसार से ग्रन्थ र
 चाये हैं सो उनमेंसे आवक वृत्ति आदिक का
 कथन लिखा है सोई जो प्राचीन शास्त्रोंके अ
 तुकल कथन किया है सो तो बद्धत सुन्दर
 और सत्य है, और जो नवीन शास्त्रोंसे तथा
 अपनी युक्ति (दलील) से लिखा है सो कुछ सं
 भव है, और कुछ असंभव है, क्योंकि उसमें कुछ

नसिराजी भी भारतीय दर्शनीय स्थानों में अपना एक विशेष स्थान रखते हैं। हमारे परम पूज्य दादा साहब गुरुदेव युग प्रधान श्री जिनदत्त सूरिस्वरजी का स्वर्गारोहण स्थान भी अजमेर ही है, जहाँ सवन् १२११ में आपाढ शुक्ला ११ के दिन आप स्वर्गवासी हुए।

यही दादावाडी जहाँ आप हम सब एकत्र हुए बठे हैं, ८०० वर्ष पूर्व हुए उन महापुरुष की आज हमें याद दिला रही है। भौतिकवाद के भुलावों में भूल रहे विश्व को दादावाडी की यह पवित्र भूमि आज एक पवित्र सदेश देना चाहती है—दादा गुरुदेव के अमृतापम उपदेशों को वह पुन दुहराना चाहती है—हम सबको जागृत करना। विश्व में आज सत्रय भय और ईर्ष्याद्वेष का विषैला वातावरण व्याप्त है। शान्ति की टाह में अणुबम और परमाणु बमों के हिंसाकारी शस्त्रों की शरण लेने वाले लोग माग भूलकर इधर उधर भटक रहे हैं उन्हें इन भारतीय महापुरुषों की स्मृतियाँ एक प्रकाश दिखाना चाहती हैं।

दादा गुरुदेव ने एक चिराग लेकर मास मदिरा, आदि व्यसनो के कुमाग पर जाते हुए लोगों को सुसंस्कारित कर समाग पर लाने का महान् काय किया था। वह चिराग था—धर्म। धर्म रूपी चिराग के प्रकाश में ही सुख और शान्ति की खोज हो सकती है। मुक्ति का पवित्र स्थान धर्म माग द्वारा ही प्राप्त हो सकता है। उसी धर्म माग पर चलने के लिए हमें महापुरुषों के पदचिह्नों को अवश्यकता है। वहाँ है—

जीवन चरित महापुरुषों के हमें नसीहत करते हैं।

हम भी अपना अपना जीवन, स्वच्छ सफल कर सकते हैं।

महापुरुषों की जयन्तियाँ या यह शताब्दी महोत्सव उही महापुरुषों के पदचिह्नों की एक खोज मात्र है। यदि हम उनके पदचिह्नों पर चलने में सफल हो सके तो हमारा जीवन सुखमय बन जायगा। सुख और शान्ति हमारे पैर चूमेगी।

एक महान् धर्म प्रचारक—

दादा गुरुदेव न केवल एक महान् जैन सात ही हुए हैं बल्कि एक महान् योगीन्द्र, गार्हित्य-नखक और असाधारण प्रतिभा सम्पन्न शासन प्रभावक भी हुए हैं। मानव समाज पर उनका बड़ा उपकार है। उनकी वाणी में वह जादू भरा था जिम्के मिठास से और की तरह सारा बिद्व मुग्ध था। एक लाख और तीस हजार की एक बहुत बड़ी संख्या वाले मनुष्यों ने उनसे प्रतिघाथ पाकर, जन धर्म अगोकार कर, अपना जीवन सफल बनाया था। यहाँ जैन धर्म अगोकार करने का अर्थ है बुरे स्वकारों को त्याग कर अहिंसा, सत्य, अचोष्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह मय सुसंस्कारों को ग्रहण करना।

इन्हीं पंच महाव्रतों का अनुसरण दादा गुरुदेव ने पिलाकर उन्हें और अपनी कीर्ति ध्वजा फहराई थी—मनुष्य मात्र के दिल में वे अपार श्रद्धा भाजन बन गये थे। हर्ष है कि आज हमारे अद्वेष्य महान्

अनर्गल रचे हैं -

यदि इसमें किसी पुरुषको शङ्का उत्पन्न होती
उसी जैनतत्त्वादर्श में देखकर निश्चय करते
ना और जो २ जैनतत्त्वादर्श ग्रन्थ में विरुद्ध हैं
उनमें से अब हम कई एक विरुद्ध यहां व
त्रगी मात्र लिखते हैं यथा

(१) प्रथम जैन तत्त्वादर्श ग्रन्थ के ५०४ वें पत्र
में लिखा है कि ११४५ के सालमें जन्म ५ वर्षके
ने दीताली और २४ चुरासी वर्षके होकर काल
करा, १२२५ के सालमें देवचन्द्र सूरिजीके शिष्य,
हेमचन्द्र सूरिजी द्वारा उनको लिखा है कि "तीन कि
रोड़ ग्रन्थ रचे हैं, सो प्रथम तो पांच वर्षके को
दीता लिखी है सो विरुद्ध अर्थात् ऊरु है को
कि सूत्रमें ५ वर्षके को दीता देने वाला जिनाज्ञा
से बाहर लिखा है ॥ यथा व्यवहार सूत्रके १० दश
वें उद्देशका १५ वां सूत्र "नो कप्यश्निगत्यारां वानिग

यह सब तभी सम्भव है जब कि हम स्वयं भी एतन्व सूत्र में आरत हो जाय। आज सगठन का युग है। "सद्यः शरित ही महान् शक्ति है।" अब हमें समस्त साम्प्रदायिक गच्छीय भेदभावों को भुलाकर "जैन जैन सब एक" का नारा लगाते हुए "जनत्व" की कीर्ति श्वजा फहरानी है।

यह शताब्दी महोत्सव, इन्ही सब उच्च अभिलाषाओं के साथ आयोजित किया गया है। यहाँ बैठकर हमें एक ऐसी याजना बनानी है जो शासन प्रभावक, सघीय सगठनकारी और प्राणीमात्र के लिये हितकारी हो।

अब आपका अधिक समय न लेकर मैं पुनः विनती करूँगा कि दादा गुरुदेव ने जिस धम-ज्योति द्वारा मसार को ज्योतिमय बनाया था—आज वह ज्योति मन्द जाती जा रही है—इसमें अपने स्नेह-सगठन द्वारा उम ज्योति को पुनः अधिक प्रज्वलित करने का प्रयत्न करना चाहिए।

दादा गुरुदेव उत्सव को सफल वावेंगे। उत्सव की सफलता के लिये सबके सहयोग की आवश्यकता रहेगी, जो आप प्रदान करेंगे ही ऐसा मेरा पूरा विश्वास है।

अजमेर राज्य के मुख्य मंत्री श्री हरिभाऊजी उपाध्याय ने समय समय पर जा माग-दर्शन प्रदान किया है उसके लिये जितना आभार प्रदर्शन किया जाय छोटा है। राज्य के शिक्षा-विभाग ने अपने कई स्कूल भवन तथा कई प्रकार का सामान आदि प्रदान कर हमारी पूरी सहायता की है जिसके लिये हम विभागाध्यक्षा के कृतज्ञ हैं। स्थानीय नगरपालिका ने जल तथा सफाई के प्रयत्न हेतु उदारतापूर्वक जा सुविधाएँ प्रदान की हैं उसके प्रति भी मैं कृतज्ञता प्रदर्शित करता हूँ।

अन्त में मैं बाहर से पधार हुए सज्जनों से एक विशय निवेदन करना चाहता हूँ कि हमारे स्वागत में आपको कई खामियाँ नजर आयगी, गर्मी का मौसम भी है पर आशा है आप हमारे इस प्रेममय स्वागत को "शबरी के घर सुदामा के तन्दुल" मान कर समस्त त्रुटियाँ के लिये हम प्रेम पूर्वक क्षमा प्रदान करगें।

एक बार फिर मैं आप सब सज्जनों का आभार मानते हुए हृदय से स्वागत करता हूँ।
जय जिनेंद्र !

सो विरुद्ध है ॥

(२) द्वितीय, तीन किरोडग्रन्थ रचे लिखें सो भी रूठ
 है क्योकि ८४ वर्षोंके ३६० दिनके हिसावसे
 ३०२४० तीस हजार दोसौ चालीस दिन इरा
 सो यदि एक २ दिनमें १०० सौ २ ग्रन्थ रच
 ते तो भी ३०२४००० तीसलाख चौबीस हजार
 र ग्रन्थ होते, सो हे संवेगीजी! आप अपने
 पूर्व पुरुषों की ऐसी अनडई उपहास यो
 ग्य वड़ाई करते हो कि अत्यन्त मति अध
 और पामर होगा सो ऐसे विकल वचन
 को प्रतीत करेगा। तर्क जो तुम हमारे इसक
 हने पर अपने लिखेको असंभव जानकर ऐसी
 शशा लोगे कि हम ग्रन्थ संज्ञा श्लोकको कहते
 हैं तो ऐसे भी तुम्हारा लिखा हुआ तुमको श
 शा नही लेने देता क्योकि ५५५ वें पत्र पर लि
 खा है कि "यशो विजय गणिने १०० सौ ग्रन्थ रचे

वाले प्रचुर शिल्पावशेष इस पुण्य भूमि से उपलब्ध हो चुके हैं और, आज भी उनका अनिष्ट सौन्दर्य मनमोही हृदय के हृत्तन्त्री के तारों को झटकता रहा है।

इस स्मरणीय प्रसंग पर हम अतुल्य बलशाली और तेजस्वी योद्धा क्षत्रिय कलवतया पथ्वीराज चौहान को नहीं भूल सकते जिनके प्रचण्ड शौर्यत्व एवं ताहुबल के कारण भारत के सीमावर्ती प्रदेश व शामक ताहा मानते थे। उनके खडित दुर्ग के अवशेष आज भी उनकी कीर्ती को अक्षुण्ण बनाये हुए हैं। शिल्प भाष्य के प्रतीक थे जन परम्परा के मूल भाव बाहुक टूटे-फूटे धूलिधूमरित, वृक्ष लताओं से परिघेष्टित ये सटहर आज भी अपने प्राचीन सौंदर्य के माथ सतपरपरा की मानव-कल्याण पथगामिनी वाणी ही नहीं सुना रहे हैं पर अतीत की गौरव गरिमा की भाँकी वतराते हुए एसी एक विशेष भावना का निर्माण करते हैं जो प्राचीन होकर भी नवीनतम भावनओं के पोषक एवं प्रवर्धक हैं आप इन ऐतिहासिक सत्य से अपरिचित नहीं हैं।

प्रमगवशा आपका ध्यान मं हृपपुर की ओर आकृष्ट कराता चाहूंगा जो किसी समय प्रदनवाहन कुल के आचार्यों की परम्परा का समझाली केंद्र था। बाद में वह परम्परा हृपपुरीय गच्छ के नाम से विख्यात हुई। स्वर्गीय डा० आभा जी के उल्लेखानुसार मेवाड़ के राजा अल्लट की रानी हरिदेवी ने, जो हूण राजा की पुत्री थी, हृपपुर धमाया। अल्लट राजा की ममा में चन्द्र गच्छ या राजगच्छ के आचार्य प्रद्युम्न मूरि का प्रापत्य था। उन्होंने सपादलक्ष और त्रिभुवनगिरि के राजाओं को जैन धर्मानुरागी बनाया था। इनके शिष्य श्री अभयदेव मूरि का नाम भारतीय दशन शास्त्र के इतिहास में बहुत ऊँचा है, जिन्होंने श्री मिद्धमेन दिवाकर के सम्मतक पर तत्त्वबोध विद्यायनी टीका लिखी जो दशन शास्त्र के इतिहास में बाद महाणव के नाम से विख्यात है। इनके शिष्य धनेश्वर मूरि त्रिभुवन गिरि के बर्देम नामक भूपति गिष्य थे, तात्पर्य यह कि अजमेर प्रदेशीय राजा लोग अतुल्य राजकीय संपत्ति का परित्याग कर त्याग मूलक जीवनदापन कर जैनाचार्यों से प्रतिबोध होते थे, यहा तक की ये राजा लोग राज्य छोडकर भागवती दीक्षा अमीकार करते थे। जैनत्व की दृष्टि से देखा जाय तो यहा का प्रेरणाशील गौरव बडा ही स्फूर्तिप्रद रहा है। इन क्षामका के जीवन में त्रिया व माघना का इनना अछडा एवं अदभुत समन्वय था कि वे कभी कभी शास्त्राय के बीच मध्यम्य का स्थान भी सुशाभित किया करते थे।

अजमेर नगर के सस्थापक अजयराज धर्मकोप मूरि के प्रशमक थे वे सात्यदान की चर्चा में सोत्साह भाग लिया करते थे। अर्णोराज या विग्रह राज इन्ही अजयराज के पुत्र रत्न थे, जिनका सम्बन्ध आज के उत्तम प्रज्ञान नायक दादा श्री जिनदत्त मूरि जी से रहा है। दादा श्री जिनदत्त मूरि जी के प्रत्न व्यक्तित्व एवं प्रतिबोध का अर्णोराज के जीवन पर अमिट छाप व सस्कार थे इसी के परिणाम स्वरूप इनके राज में एकादगी स्थिति की जीव वध निषध था। प्राचीन साहित्य म अजमेर की सांस्कृतिक परम्परा एवं जन सस्टुति की प्रकाश करने वाले प्रचुर प्रमाण उपलब्ध हैं। श्री अर्णोराज के जीवन पर दादा श्री जिनदत्तमूरिजी की अमिट छाप का प्रमाण यह भी है कि इन हमारे प्रधान नायक के अजमेर पधारने पर श्री अर्णोराज ने देव मन्दिर, और गृहस्थों के बतने के लिये

इसलिये तुम्हारा लिखना कि "हेमचन्द्र स्वरिने
३ तीन क्रोड गन्धरचे" यह किसी स्वरत सहीह
नहीं होसक्ता किन्तु यह केवल सानके वशहोकर
निकम्मी बड़ाई, गोलगप्ये रूप ऊठही लिखीहै ॥

(३) सूत्रोंसे महा विरुद्ध लिखाहै सो पत्र १५ वें
से लेकर कई एक पत्रोंमें प्रायः वहुतसे वि
रुद्ध लेखहैं क्योंकि २४ चौबीस तीर्थङ्करों के
दीक्षा वृत्त लिखेहैं लेकिन सूत्रमें दीक्षा वृ
त्त नहीं चले किन्तु सूत्रमें "चेईवृत्त" अर्था
त् ज्ञानवृत्त चलेहैं कस्मात् जिस २ वृत्तके
नीचे केवल ज्ञान, तीर्थङ्करोंको प्रकटभ
या, अस्मात् यह समवायाङ्ग में देखलेना, लि
गियों को लिखना चौबीसोई वोलोंमें विरुद्धहै ॥

(४) पद्मप्रभुजी को "एक उपवाससे योगलियां"

अपने आपको वीतराग का अनुगामी घोषित करते थे। आचार्य श्री जिनदत्तसूरिजी के समय तक यह परम्परा इतनी विकृत हो चुकी थी कि ये धर्म संस्कार, आचरण एवं सिद्धांत पोषी पत्रों के मात्र रह गये। आचार्य श्री ने अपनी अटूट ज्ञान व चारित्रिक संपदा के बल पर इन अज्ञानमूलक संस्कारहीन परम्पराओं के प्रति निरन्तर सघष किया, अपना सारा जीवन मानवोत्कर्ष में खपा दिया। आज हम किम रूप में अपनी तन्त्र श्रद्धांजलि समर्पित करें, इस पर हमें गम्भीरता पूर्वक उनके जीवन से शिक्षा लेकर मोचना है।

इस अष्टम दाताब्दी महोत्सव के शुभ अवसर पर मुझे आपके समुख कुछ बातें रखनी ह। आज स्वतंत्र भारत के ममुख सबसे बड़ी समस्या मानव के मानसिक विकास एवं चारित्रिक चेतना की है, जिसकी प्रेरणा हमें सता के जीवन से ही मिल सकती है। प्रचारित पंचशील के मिर्दांत का युग प्रधान आचार्य श्री जिनदत्तसूरिजी ने इतना व्यापक प्रचार किया था कि ऊच नीच के भेद भाव को भुला कर एक लाख तीस हजार व्यक्तियों का इस ओर मोड़कर सामाजिक व्यवस्था में आस्था उत्पन्न कर सगठन की गहरी नींव डाल दी। आप सोच सकते हैं कि उन सामाजिक परिस्थितियों में अनेकविध विरोधी चट्टानों में टक्कर लेना कोई आसान बात नहीं थी, इतना ही नहीं समाज में आने वाले इस नये रबन के प्रति वे पूण जागरूक थे अत उन्होंने अपने उपासक वग को यह शपथ दिला दी थी कि वे कभी आपस में लड़ेंगे नहीं, दूसरे पर राजदण्ड लादेंगे नहीं, एक दूसरे के जीवन में सहयोगी बनेंगे, परपीडा को स्वपीडा समझने के लिये प्रयत्नशील होंगे। इस तरह समाज के सगठन की उन्होंने गहरी नींव बाध दी।

आप यह भली प्रवार जानते हैं कि जन धर्म जातिवाद में कतई विश्वास नहीं रखता, जैन धर्म में ऊच नीच भाव को कोई स्थान नहीं, जन्म से न कोई ब्राह्मण होता है, न कोई क्षत्रिय, न कोई वैश्य या न कोई शूद्र। श्रमण भगवान् महावीर ने ऊच नीच के भेदभाव को मिटाकर सबको समान भाव से आध्यात्मिक साधना के लिये उपयुक्त घोषित किया। उन्होंने यह उद्धोषित किया कि प्रत्येक व्यक्ति का उत्थान व पतन उसके अपने काम पर निर्भर है। व्यक्ति-स्वातंत्र्य मूलक परम्परा ही जनतंत्र के लिये उपयुक्त हो सकती है। जनतंत्र में मनुष्य स्वयं अपना भाग्य विधाता होता है। हमारी श्रमण सस्त्रुति म मानव स्वयं ही अपने प्रति जिम्मेदार रहता है। जैनधर्म जातिवाद को मानवता के लिये कलक समझता है। अस्पृश्यता के लिए जैन धर्म में अश मात्र भी स्थान नहीं है।

जनाचार्यों के सगठन विषयक नियमों में कही भी जातिवाद को स्थान नहीं मिला है। जैन परंपरा जाति में नहीं पर गुणों में विश्वास करती है। ज्ञान, दशन और चारित्र्य की जो त्रिविध साधना कर सके वह धर्म में सम्मिलित हो सकता है। परन्तु कालांतर से इस व्यापक परम्परा में भी परिस्थितिजन्य विषमता के कारण बीसा, दस्सा, पाचा, डाइया और मवाया पोखाल जैसी जातिवाद की समस्याएँ खड़ी हो गई जो जैन धर्म और राष्ट्रीयता के लिये ही नहीं अपितु मानवता के लिये भी एक कलक है। जातिवाद हमारी सस्त्रुति के विकास में सबसे बड़ी बाधा है।

हरिजनो की समस्या भी हमारे लिये उतनी ही विचारणीय है यद्यपि मुझे इसकी विशेष चर्चा

गरी में लिखा है ॥ (१०) अथ परस्पर विरोध

(जो आत्मारामने जैन तत्त्वादर्श में लिखा है सो)

लिखते हैं पत्र १० वें पर "श्री ऋषभदेवजी की दो
बों सायलों पै वृक्षभकाल छन लिखा है" फिर पत्र १५
वें पर २४ चौदीसों तीर्थङ्करों के पगों में लछन
द्वय लिखा है यह परस्पर विरुद्ध है ॥

पत्र ८३ वें पर लिखा है (अनुष्टुब्धतं) श्लोकः ॥

महाव्रतधराधीरा, भेक्षमात्रोपजीविनः ॥ समा
ज्जीकस्याधर्मोपदेशका गुरवो मत्ताः ॥ १॥ इस

श्लोकमें श्रेया परमार्थ है कि साधु धर्मोपदेश
जीवोंके उद्धार के लिये करे ज्ञान दर्शन चारित्र

का परंतु ज्योतिष, यन्त्र मन्त्र का उपदेश धर्म
हानि करने वाला है सो न करे ॥ फिर पत्र ५७

वें पर लिखा है कि धर्मघोषसूरिने मन्त्र से
स्त्रियोंको पकड़ाया और बांधाया ॥ तर्कजेकर

तुम श्रेया कहोगे कि उन्होंने अपने दुःख

धर्म की महत्ता का प्रतीक हमारा स्याद्वाद व उसका साहित्य युगों से अग्रकार में पड़ गया है, भण्डारों में कीट भोग्य मान बन रहा है उसे आज की वैज्ञानिक दुनिया के प्रकाश में लाना है ताकि आज का मनीषी विद्वत् वर्ग उसका तलस्पर्शी अध्ययन-अनुशीलन कर सके ।

म आपका अधिक समय न लेकर संक्षेप में हमारे महान् आचार्य श्री हरिभद्रसूरिजी के निम्न उचन को उद्धृत कर आपको समझाऊंगा कि जन धम और उसका स्याद्वाद कितना व्यापक एव विस्तीर्ण समवय मनुक रहा है । आज जय अणु-बम व उदजन बम की विनाश-कारी लीला व उसके भय मात्र से ससार की मानवता पीड़ित हो रही है हमारे आचार्य का यह महान् सब-वयमूलक मंत्र कितना बन्ध्याणकारी है, उन्होंने कहा है—

पक्षपाती नमे घीरे न द्वेष कपिलादिषु ।

युक्तिमद् वचन यस्य तस्य कार्य परिग्रह ॥

मेरी यह हार्दिक मनोकामना है कि जैन समाज को एक सूत्र में बांधने के लिये हमें सद्रिय रूप से प्रयत्नशील होना चाहिये । इससे कालांतर में हमारे सारे जैन समाज के सगठन द्वारा राष्ट्रीय समस्या का भी हल हो सकता है । यही हमारे समाज की सबसे बड़ी शक्ति होगी ।

युग प्रवर्तक आचार्य के प्रति हमारी वास्तविक श्रद्धाजलि यही है कि हम उनकी स्मृति स्थाई बनाये रखने के लिये कोई ठोस वायनम अपनावे जिम का परिणाम समाज व राष्ट्र के लिये हितप्रद हो सके । मेरी तुच्छ बुद्धि में यह निम्न नम्र सुभाव है -

- १—सब प्रथम साधु-साध्वियों में पारस्परिक सगठन व आत्मीयता की वृद्धि होना ।
- २—वसतिवासी जैन धर्माचार्यों द्वारा रचित साहित्य के प्रकाशन पर विचार करना ।
- ३—आचार्य जिनदत्तसूरिजी के समस्त ग्रन्थों का समीक्षात्मक प्रकाशन ।
- ४—आचार्य जिनदत्तसूरिजी की शिष्य परम्परा के द्वारा सुरक्षित समस्त जैन ज्ञान भण्डारों का एकीकरण एव प्रतिनिधि व्यवस्थापिका सभा का गठन ।
- ५—विभिन्न शिक्षा संस्थाओं एव विश्वविद्यालयों में जैन धम दर्शनसाहित्य के अनुसंधान के लिये हमारी ओर से उच्चतम व्यवस्था की जाय ।
- ६—उज्जैन में स्थापित होने वाले विप्रम विद्वन्विद्यालय में जनधम की शिक्षा के लिये अथ पूण सहकार ।

म आपका यह निश्वास दिलाना चाहना है कि इस कार्य के लिये अभी अथ का प्रश्न सान्धे नहीं आवेगा । अथ व्यक्ति के परिश्रम का परिणाम है !

अन्त में म आपसे सौजन्य पूण व्यवहार व युग प्रदान आचार्य का अपनी सम्मानपूण श्रद्धाजलि

के लिये पुन आभार व आपका स्थान रहूँ

और फिर लिखा है कि उसने दण्डभी लिया था सो विचारना चाहिये कि जब ऐसे महा उत्तम कार्यके कारणाभी लक्ष्मीफोरने का दण्ड लिया था तो फिर सामान्य कार्यस्य किं कथनं अर्थात् सामान्य कार्य का का कथन करना तो फिर तुमने मन्त्र करने वाले यत्तियों की जैसे ५६३ वें पत्र पर "सिद्धसेन दिवाकरने विद्यादेकर अर्थात् सिखाकर राजासे सेना बनवाके संग्राम करवा दिये" ऐसी २ वड़ाई

किस प्रयोजन से करी है और कों लिखी है एी और तुमने भी ९ नवम परिच्छेदके आदमें श्रौदा जिसको सूत्रमें पाप सूत्र कहा है उसका वद्धत उपदेश किया है फिर और भी बालकों कैसे उपहास योग्य दूमन दामन वद्धत से पाखण्ड लिखे हैं जैसे कि ४५० वें पत्र पर लिखा है कि "अपनी स्त्रीको वार २

रहना उनके लिए अनिवाद्य है। देश को स्मृद्ध बनाने के लिए आज हमें बौद्धिक श्रमिकों की श्रति आवश्यकता है। रोटी का मवाल यद्यपि हमारे जीवन का अन्तिम लक्ष्य नहीं है पर जीवन निर्वाह के लिए इसे उपेक्षित नहीं रखा जा सकता। मैं चाहता हूँ कि यदि हमें आचार्य श्री जिनदत्तसूरिजी के प्रति कुछ विद्वान्ता है तो हमारा प्राथमिक कर्तव्य यह होना चाहिए कि सारे भेदभावों को भूल कर उनसे बताने हुए उदार विचारा को अपने जीवन में स्थान देकर एक दूसरे के मुख दुख के भागी बनें। इन्हीं शब्दों में मैं आचार्य वर्य के चरणों में श्रद्धाजलि समर्पित कर अपने को वृत्त श्रुत्य मानता हूँ।

श्री आनन्द सागर सूरिजी महाराज का प्रवचन

श्री जिनदत्तसूरिजी महाराज के प्रति अपनी श्रद्धाजलि श्रपित करते हुए आचार्य श्री आनन्द-सागरसूरिजी महाराज ने भगवान् महावीर के विश्व शांति के मदेश को ससार में प्रसारित करने के लिए एक सार्वभौमिक सगठन की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा —

श्रमण सस्कृति के अग्रदूत श्रीर भारतीय लोकचेतना के उद्बोधक भगवान् महावीर के नाम पर सार्वभौमिक सगठन की आज अत्यन्त आवश्यकता है। मानव श्रुत उच्चत्व नीचत्व मूलक भेदभावों को दीवारों को तोड़कर समत्व की साधना द्वारा इस जनतन्त्र मूलक युग में जन धर्म के आचार विचार बहुत बड़ी प्रेरणा दे सकते हैं। जन धर्म बहुत व्यापक है श्रीर प्राणी मात्र की उन्नति में विद्वान्ता रखता है। जन धर्म काम में विद्वान्ता करता है। हमें समझना चाहिए कि यह सम्मेलन तो तीन दिन की चकाचोड़ के बाद समाप्त हो जायेगा परन्तु प्रेरणा को जीवित रखना आवश्यक है। यही भावी विकास का श्रोत है। ऐसे उत्सव मानव सस्कृति के मूल्यांकन एवं विकास में प्रकाश स्तम्भ का काम दे सकते हैं।

भारतीय स्वाधीनता प्राप्ति में अहिंसा का उल्लेखनीय योग रहा है। वर्यो की पराधीनता श्रीर दामन्व की श्रुमला का इसी बल न तोड़ कर हम मुक्त किया। अतः भारतीय शासन को चाहिए कि वे अहिंसा नीति का सर्वाधिक अपन जीवन में स्थान देने वाले व्यक्तियों के जीवन से सम्बद्ध विदिष्ट दिनों में उनके नाम पर राजकीय अवकाश शासन को अब तक घोषित कर ही देना चाहिए था। पर दुर्भाग्यवश ऐसा नहीं हुआ।

इस पर वावू श्री जगजीवनरामजी ने कहा कि महावीर जयन्ती का राजकीय अवकाश शासन घोषित कर चुका है।

हम चाहते हैं कि शासन हमारे मास्कृतिक वार्यों में ममुक्ति सहायता प्रदान कर स्वकर्तव्य का पालन करे। समाज को ही चाहिये कि पुरातन मानवता शोषक श्रुतिवाद को समाप्त कर प्राणी मात्र के विकास में अपना गुण भूलें। शासन देव हमें सदबुद्धि दे कि सम्प्रदाय के नाम पर फली हुई पशुता का परित्याग कर समाज साधना व समत्व का भाग अपनाएँ। विद्वान्ता की कामना के

वैठने की नही और मूढ़ोंके तथा स्वपति
यों के हृदयमें तो दांत घसनी करके वैठाही
देते होगे यह स्थूल (मोटा) परस्पर विरोध है

॥ ११ ॥

पत्र १०७ वे पर लिखा है कि " हिंसा में धर्म न
ही कहना चाहिये वन्यापुत्रवत् और हिंसा
कारण धर्म कार्य है " यह कथन को भी

लिङ्गियेने असत्य लिखा है

फिर देखो मत पक्ष करके हिंसा में ध
र्म प्रत्यक्ष कहते हैं तर्क० जेकर क
होगे कि वह तो मिथ्याती मृगादिक बड़े
जीवोंके मारने में अर्थात् हिंसा में धर्म कह
ते हैं इस वास्ते उनकी हिंसा में धर्म कहना असत्य है
तो फिर हम तुमको पूछेंगे कि यह का बुद्धिकी वि
कलता है कि बड़े र जीव अर्थात् मृगादि मार
ने में हिंसा है और लघु जीव अर्थात् मूषककी

श्री पूज्य जी महाराज जिन धरणीसूरिजी का प्रवचन

श्री यादवजी के पश्चात् महोदय शाखा के प्रधान आचार्य श्री पूज्यजी महाराज श्री जिन-धरणीसूरिजी ने कहा —

“यद्यपि जैन मिथ्यान्त महान है इस परम्परा में विश्ववन्द्य महान पुरुषो ने प्रत्येक शताब्दी में जन्म लेकर मानवता का पथ प्रदर्शन किया है। ज्ञान मनोबल और चारित्र्य से जैन समाज के लिए ही नहीं प्राणी मात्र को प्रेरणा मिलती है। वस्तु मात्र के स्वभाव की वास्तविक पहचान को ही अर्थात् आत्मा के मूल स्वभाव को प्राप्त करना ही जैन परम्परा में धर्म माना है। आचार्य श्री जिनदत्तसूरिजी का उपदेश इसी परम्परा का महान सम्बल है। वे न केवल मुनि बन कर सामाजिक चेतना को ही जगाते रहे अपितु उन्होंने साहित्यिक दृष्टि से भी ग्रन्थ रचना कर तात्कालिक विषय सामाजिक परिस्थितियों को संसार के समझ रखा है। यद्यपि उनके साहित्य का समुचित अनुशीलन अद्यावधि नहीं हो पाया है पर जिन ग्रन्थों के समीक्षात्मक संस्करण उपलब्ध हैं उन्हीं से इनकी वार्त्तिक दार्शनिक एवं पाण्डित्य मेधा का परिचय मिलता है। उनके जीवन की परम्परा को जिलाये रखने का एक मात्र प्रकार यही है कि हम सब अपने जीवन को उज्ज्वल करे और हमारे यति समुदाय में जो गभीर शिक्षिता प्रवेश कर चुकी है उन्हें निकाल यति शब्द को साधक करे।

मुनि कांतिसागरजी का प्रवचन

सभा का उपसंहार करते हुए मुनि कांतिसागरजी ने कहा —

“किसी भी देश का इतिहास में उस देश के महान पुरुषों का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है। वस्तुतः वे ही राष्ट्रीय चेतना और सांस्कृतिक परम्पराओं के प्रतीक होते हैं। नैतिक एवं चारित्रिक बल का समुचित विकास उन्हीं की साधना जनित औपदेशिक वाणी के उज्ज्वल प्रवाह पर निर्भर है। जन जीवन का उत्थान महान पुरुषों के सुदृढ कथों पर होने के कारण ही एक समय था कि राजनीति जैसे क्षेत्र में भी इन धर्ममूलक जीवन यापन करने वाले महात्माओं का अत्युच्च स्थान था। वस्तुतः निस्वार्थपूर्ण जीवन होने के कारण ही जन मानस पर इनका स्वाभाविक प्रभाव रहता था। इन महान पुरुषों का गुणानुवाद हम जैसे दुर्बल व्यक्तियों में गुणों का संचार करते हैं। आज हम जैन समाज के वारहवीं और तेरहवीं शताब्दी के एक ऐसे आचार्य का अष्टम स्वर्णराहण शताब्दी महोत्सव मनाने को एकत्र हुए हैं जिनने अपनी चारित्रिक व साहित्यिक साधना द्वारा तात्कालिक मानव समाज को प्रकाश दिया एवं धर्म के नाम पर पतनने वाली पाशविक परम्पराओं का मूलोच्छेद कर सुविहिन परम्परा को प्रदत्त किया। यद्यपि वे मूलतः पश्चिमी भारत में निवासी थे पर उनकी साधनात्मिक काम प्रणाली से उन्होंने सम्पूर्ण भारत में अपना स्वतंत्र व भादरणीय स्थान बना लिया। वे अपना ऐसी अद्भुत शक्ति रखते थे कि आज आठ सौ वर्षों के बाद भी जनता के हृदय सिंहासन पर यथावत् अधिष्ठित हैं। भारत में शायद ही ऐसा जैन परिवार सम्पन्न नगर होगा जहाँ इनकी प्रतिमा, धरणीसूरिजी या तयावयिन कोई स्मारक दादाबाड़ी के रूप में न हो।

की हिंसाके अभिलाषी नहीं हैं। उजरपत्नी, नर्क-
हेभाई! इस छुन छुनोंकी पुकार (आवाज) से
तो केवल बालकही रीकेंगे और बुद्धिमान लो-
ग तो तत्व की और ख्याल करेंगे नूबे
और लडके के दृष्टान्त, क्योंकि तुमने जो हिंसा
में धर्म अर्थात् फूल तोड़नेमें तथा वृक्षछे-
दनमें दोष नहीं लिखा है जैसे ४७४ वें पत्र पर
लिखा है कि "सनात्र पूजामें फूलोंका घर बना-
वे और केलीघर बनावे" इत्यादि०

हकीम के दृष्टान्त से भय जनों के हृदयोंको
कठोर करतेहो लेकिन इस हकीम के दृष्टान्त
को विचार करदेखा तो तुम्हाराही लिखा हुआ दृ-
ष्टान्त तुम्हारेही मतको निरुद्ध करता है क्यों कि
हकीम तो यह जानता है कि नखके लगाने
से रोगीका रोग जातारहेगा शायद ही मरेगा
और तुमतो खूब जानतेहो कि कैलेके स्तम्भ

जीवन से अलग कर दें। क्याकि प्रचुर कष्ट सहन के बाद प्राप्त की गई भारतीय स्वधीनता की वास्तविक रक्षा इन दो कलको को मिटाने में ही है। भगवान महावीर ने अपने जीवन के बहुमुखी क्षणों द्वारा उपयुक्त सत्य को भली भाँति सिद्ध कर दिया है। हमारा मुनि समुदाय अथ मूलक प्रवृत्तियों के चक्कर से ऊपर उठ कर इन चीजों को सोचें।

जो लोग यह मानते हैं कि जिनदत्तसूरि परिग्रही थे मठवासी थे और वतमान अथ में प्रयुक्त यनि थे, पूर्व कथित वाक्यों में लेगमान भी सत्यांश नहीं है क्योंकि जिस समय अल्प शक्तिय भी गुह्यतर अपराध माना जाता हो वहा पर इस प्रकार की कल्पना ही बौद्धिक व्यभिचार है। वे तो चरित्रहीन मठवासियों के विरोध में श्रुति का मानवतामूलक भडा उठाए हुए थे और धर्म के नाम पर पनप रही साम्प्रदायिकता पर कुठाराघात कर रहे थे। और उनका चारित्रिक बल इतना उच्चकोटि का था कि सम्पूर्ण भारत के प्रमुख प्रान्तों में उनका अपना प्रभाव था। चारित्र्य बल ही व्यक्ति के अस्तित्व को और व्यक्तित्व को निखार सकता है। चारित्र्य बल ही सच से बडा बन है जो भले ही नीव का पत्थर प्रतीत होता हो पर है औरनामेंटल।

जिनदत्तसूरिजी अखण्ड मानवता के समर्थक थे। व्यक्तिगत श्रम में उनका विश्वास इसलिए था कि वे स्वयं भी स्वावलम्बी थे। वे एक सम्प्रदाय के होकर भी सब को सहिष्णुतामूलक वृत्ति से देखते थे। महानुभूति उनके जीवन में साकार थी। सगठन उनके जीवन का मूलमंत्र था सचमुच जहा अहिंसा जीवन में साकार हो बना वहा सगठन की भी आवश्यकता है क्या ?

आचार्यवय भारतीय सन परम्परा की एक ऐसी उज्ज्वल ज्योति थे जिनकी प्रभा से आज भी हम आलोकित हैं। मुझे आज केवल एक ही बात पर विचार करना है कि उनका प्रेरणाशील व्यक्तित्व आज के युग में हमारा मार्गदर्शन कर सकता है कि नहीं। जब हम उनकी जयन्ति मना ही रहे हैं और उनके जीवों में हम परिचित हैं तो हमारा प्राथमिक कर्तव्य यह होना चाहिए कि उनके जीवन के मूल्यवान क्षणों में से एक क्षण हम अपने जीवन में उतारे और बता दें कि जिनदत्तसूरिजी की स्मृति हमारे हृदय मंदिर में आज भी यथावत् स्थापित है। मेरा ध्यापसे विनम्र अनुरोध है और आचार्यवय की उदारता से तो आप परिचित हैं ही और वतमान छुआछन की पेशाचिक वृत्ति के कूपरिणाम से भी अपरिचित नहीं है अतः मैं चाहता हूँ कि आप सब की सम्मति से जो प्रस्ताव मैं आपके सामने रख रहा हूँ स्वीकार होना चाहिए। शब्दावली इस प्रकार है —

“आज की यह सभा सर्वानुमत से निर्णय करती है कि अस्पृश्य बड़े जाने वाले धुडि और पवित्रता द्वारा जिनपूजनोपासना गृह में धर्माराधन कर सकते हैं।”

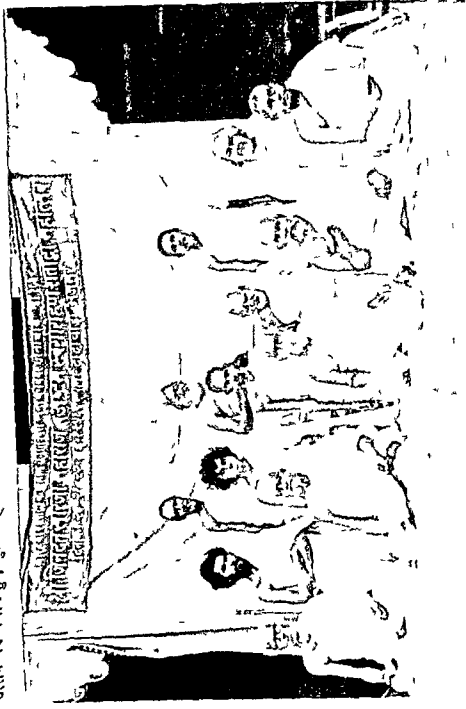
यद्यपि बाणज के चिथड पर लिखित शब्दावली को तालिया की गडगडाहट में पास कर देना ही पर्याप्त न होगा अपितु इसे हम अपनी सृष्टि का मूल प्रदत्त समझ कर स्वीकार करें और गमाज में अस्पृश्यता विरोधी ऐसा वातावरण तैयार कर जो मानव के नाम पर पडी हुई खाई

अर्थात् इलजाम से दचसलाहै इत्यर्थ। सो
 हे पूर्वपतियो। तमतो त्रसस्यवरो की मजी के
 विना अर्थात् आत्ताके विनाही प्राण हरते हे
 क्योंकि वे वृक्ष, फल, फूल आदिके जीव, नहीं
 चाहते हैं कि हमको भगवान की पूजाके
 निमित्त वेशक सारे और न कहते हैं कि
 भक्तिमें हमारे प्राण वेशक हरे इसकारण
 से वज्रदोष आता है यथा-

अन्य स्थानं करोति पापं धर्म स्थानं विवर्जित
 तम् ॥ धर्म स्थानं करोति पापं वज्रकर्मः वि
 वर्द्धते ॥ १ ॥ इति वचनात्.

और तुम ऐसे कहोगे कि कहाँ तो मृ
 गादि हिंसामें धर्म कहना और कहाँ तुम
 फूल फल आदिक की हिंसाको निंदते हो
 तो फिर हम उत्तर देते हैं कि उनका हिंसा
 में धर्म कहना और तुम्हारा हिंसामें धर्म

उत्सव पट पधारे हुए मुनि महाराज—



पहला पवित्र में—मुनि माल सागरजी महाराज, उपाध्याय १०८ थी बुलसागरजी महाराज आचार्य थी १००८ थी योगेश्वर भानुच सागरपुरीदेवरजी महाराज, उपाध्याय थी १०८ थी कवित्र सागरजी महाराज, व मुनि हेमचन्द्रसागरजी महाराज ।

मड़े हुए—मुनि प्रेमसागरजी महाराज, मुनि कल्याण सागरजी महाराज, मुनि गणेशचन्द्रजी महाराज, मुनि मंगलसागरजी महाराज, मुनि कागलसागरजी महाराज ।

दोसरी पक्की में—मुनि रविचन्द्रसागरजी महाराज, मुनि उदयसागरजी महाराज, मुनि प्रभाकरसागरजी महाराज ।

और हीनाचारी नीचोंको अयुक्त है सो हे मतमस्तो ! विचार कर देखो कि तुम्हारा लिखा हुआ तुम्हारे ही कहने वस्त्रजिब परस्पर विरुद्ध है ॥

२५६ वें पत्र पर लिखा है कि द्रव्यनिक्षेप जो तीर्थंकर होनेवाला है, जिसका निकाचित बंध हो चुका है उसको पूजके, नमस्कार करके अनेक जीव सुक्तिमें गये हैं ॥ तर्क० यह लेख भी ऊठे है क्योंकि इस रीतिसे एक पुरुषको तो मोक्ष प्राप्त हो गया सूत्र द्वारा दिखाते हो किन्वा जबान से ही गरड़ाट करते हो ? कस्मात् कारणात् कि निकाचित बंध तीर्थंकर गौतका ३ तीन भव पहले पड़ता है। भला कहीं भर्ष चक्री की भुलावन देते हो फिर और भाव निक्षेप में सीमन्धर स्वामी माने हैं ॥ तर्क० सो

प्रथम उपाध्यायजी श्री बन्दीन्द्रमागरजी महाराज ने मंगलाचरण किया। तत्पश्चात् आचार्य महाराज ने अपनी ओजस्वी भाषा में महत्वपूर्ण भाषण दिया। आपने अपना भाव्य बतलाया कि यदा यदा मध्याह्न मिलने पर मुनि सम्मेलन होने रहे ह और उनसे परिणाम भी उत्तम रहे हैं परन्तु मुनि सम्मेलन को सफलता तभी हो सकती है कि हम संगठित हो कर जनाचार का पालन करते हुए जैन शासन की उत्पत्ति करने में दक्षचित्त बने रहें। भगवत भगवति का वातावरण छाया हुआ है उसे शांति का संदेश सुनाने में जैन-दर्शन पूर्ण समर्थ है। अतः हमारा वाक्य हो जाना है कि अहिंसा, अस्मिन्नाहं आदि सिद्धान्तों के प्रचार द्वारा विश्व में शांति स्थापना के प्रयत्नों का प्राप्ताह न दें। भगवान् महावीर ने जो इन्हीं प्रकार का संदेश ताकानो न क्षुब्ध समारणों दिया था और जनसंस्कृति की जनता को अपने ज्ञान, त्याग एवं तपस्या से मजबूत किया था। ८ शताब्दी पूर्व दादा गुम्दव ने भी उन्हीं सिद्धान्तों को अपना कर उच्च आदर्शों को दैनिक जीवन में स्थापित करने वाला एक उत्तम समाज की स्थापना की थी। आज हमारा वाक्य है कि हम अपने चरणचिह्न पर जन और जीवामात्रा को भी उन्हीं महान्पथ पर चलने के लिये मार्ग प्रशस्त करें।

अध्यक्ष महोदय की आज्ञानुसार उपाध्यायजी श्री बन्दीन्द्रमागरजी महाराज ने मुनि सम्मेलन द्वारा स्वीकृत ११ प्रस्ताव पढ़कर सुनाये। मुख्यतया उनका सारांश निम्न प्रकार है।

- १—सरस्वतीगच्छीय माधु माध्वी, सप्रदाय संगठन का नाम सरस्वतीगच्छीय भ्रमण मध रहेगा।
- २—हम भ्रमणमध के अंतर्गत सरस्वती गच्छीय सभी विघाट सम्मिलित व संगठित रहेंगे।
- ३—मध द्वारा 'भ्रमण दून' नामक मासिक पत्र का प्रकाशन किया जायगा।
- ४—भ्रमण मध के अंतर्गत माधु-माध्वी एवं स्वान पर अधिष्ठित काम न करेंगे व निरमातृता विवरण करेंगे।
- ५—माधु माध्वी के धार्मिक शिक्षा एवं विद्यार्जन-मध को मुखिया के लिये मध्य भारत, राजस्थान एवं गुजरात में गान्धाय गान्धी जाने के लिये आवश्यक तो उद्योग द्वारा प्रोत्साहित करना।
- ६—रत्नाम में चतुर् मठ का भी प्रातिगोष्ठ सम्मान करना व लिये सरस्वती का वाक्य करना जिनके मठ का बन्दना यथावत् जिनके लिये भगवतों का मित्र, ताजि पूजा का विधिवत आरम्भ हो सके।
- ७—सामान्य माधु माध्वी की मुखिया का चरण पादुका का निर्माण पर प्रतिबन्ध रक्त जाय
- ८—माधु-माध्वी द्वारा निर्मित पुस्तक पुस्तिका का प्रकाशन, भ्रमणमध का मासिक पत्र का प्रकाशन।
- ९—मुनि सम्मेलन का अपना अधिवेशन सत्र २०११ में होना निश्चित हुआ।
- १०—भ्रमणमध हीन माधु-माध्वी पर प्रतिबन्ध कायम रक्त की जाय।
- ११—सामान्य प्रातिगोष्ठ विन का मासिक विवरण किया जाये।

और शत्रु जीतनेके वाले काले वस्त्र पहरके पूजाकरे और ऐसे २ अनेक इस लोक के अर्थ पूजाके फल लिखेहैं (सो) यह कांक मली की नाथ कभी नाक कभी हाथ "क्योंकि प्रथम उसी कामको निषेधाहै और फिर उसी कामको अङ्गीकार कियाहै यह परस्पर विरुद्धहै ॥ १४ ॥

और ४१२वें पत्र पर लिखाहै कि "घृत, गुड़, लवण अग्निमें गेरे और दान तप पूजा, सामाजिक फटे कपड़ोंसे करे तो निष्फल" इसलेखको

हम खण्डन करतेहैं उत्तराध्ययन, अध्ययन १२ वां गाथा ६ ठी हरकेशी वल तपस्वीको ब्राह्मण कहतेहुये यथा उक्तंच "उम चेलरा यंसु पिशाय भूए संकर दुसे परि हरिराकंठे" इति वचनात् अस्यार्थः अस्वार वस्त्र रजकरी पिशाच रूप उकरडी के नांख समान वस्त्र धारा

ऐसा आदर्श स्थापित किया है जो आज पुरातन होकर भी नवीनतम भावनाओं का पोषण एवं परिवर्द्धक है।

साहित्य के क्षेत्र में श्रमणों का दृष्टिकोण सदा से जनतन्त्रमूलक रहा है। वे भारतम विचारों का जन-भाषा द्वारा सरल भाषा में जनता के समक्ष रखते थे, एवं उच्चतम दार्शनिक भावों को भी श्रमणों प्रणिभा के बल पर तात्कालिक जन-जीवन उत्थान में महत्वपूर्ण कार्य किया है। एक समय प्राकृत का भारत में बाहुल्य था अतः जैन मुनियों ने अधिकतर अपने विचार प्राकृत भाषा में ही रचना समुचित समझा। यद्यपि सस्त्रुनज्ञ लोगो ने इसे ग्रामीण एवं अज्ञिष्टों की भाषा के रूप में घोषित कर रखा था और यही कारण है कि मस्वृत नाटको में नागरी के मुख से प्राकृत भाषा उच्चारित करवाई जाती है। हमारे भावुक प्रकृति के जैन मुनि यह समझ बैठे हैं कि मस्वृत नाटका में प्राकृत का प्रयोग तब उसीके उचित नेतृत्वो ने हमारी भाषा का आदर किया है। वस्तुतः देख तो वहाँ एक प्रकार का उपहास ही है, अस्तु, प्राकृत भाषा और साहित्य में जा गाम्भीर्य है वह अत्यन्त दुर्लभ है। यद्यपि आज इस वैज्ञानिक भाषा के साहित्य पर विद्वद वन्द का ध्यान उतना आकृष्ट नहीं जितना कि अपेक्षित है। भारतीय भाषा विज्ञान के अध्येताओं ने निष्पन्न निकाला है कि बिना प्राकृत भाषा का मनोवैज्ञानिक अध्ययन किए उचित साहित्य का गहरा अनुशीलन बिना किण्व भारतीय संस्कृति के मौलिक तत्वा को धारणसात् नहीं किया जा सकता, और नहीं भारतीय भाषा-विज्ञान की मूल प्रवृत्तियों को ही छूना जा सकता है। भारतीय साहित्य में भी यदि तथाकथित साहित्य को अलग कर दिया जाय तो निश्चय ही भारतवासी नफ मं रही रहेंगे।

प्राकृत साहित्य के सम्बन्ध में वैदिक परम्परा में पत्ने विद्वानों ने यह विचार रखा है कि इसमें कवच धार्मिक साहित्य ही गुणित है जिसका मोघा सम्बन्ध श्रमण परम्परा से है। मं विद्वानों के साथ कहना चाहेंगे कि इस भाषा में न केवल बग विरोध का ही साहित्य है, न बल्कि श्रमण अर्थात्मिक परम्परा ही मुगठित है अपितु इतिहास, कथा, मगीत, सस्वत, व्याकरण, भाषा साहित्य, आकार, आयुर्वेद और कामशास्त्र जैसे विषयों का भी समावेश किया गया है। मं तो मानना कि कथाकार का मौलिक चिन्तन किसी भी प्रकार के माध्यम द्वारा व्यक्त हो इतना उगवी मौलिकता में कमी नहीं आती।

हिन्दी भाषा का इतिहास तब तक अपूर्ण रहेगा जब तक प्राकृत एवं उमकी अपभ्रंशादि समस्त शाखाओं के साहित्य का समुचित अध्ययन नहीं हो जाता। क्योंकि हिन्दी की प्रगति का मूल श्रात प्राकृत और अपभ्रंश है न कि मस्वृत। मस्वृत का हिन्दी की माना कहना उसका अपमान करना है। संस्कृत की विशेष की भाषा रही है। मस्वृत के विद्वानों ने इसी कारण से प्राकृत और अपभ्रंशादि में रचना करना या इन भाषाओं में अपने विचार व्यक्त करना अपना अपमान समझा। जबकि जो मुनियों ने इन भाषाओं में रचना करने में अपना सम्मान समझा है ऐसी बात नहीं है। उन समुच्चय गणना में समस्या थी मानव उत्थान की। मानवीय मनोवृत्तियों के समुचित विज्ञान की। और अपने समुच्चय द्वारा मानवदश को प्राप्ति की। साहित्य और व दश मध्य गयी है। मानवत्व को प्राप्त कर विज्ञान में ...

जाता है अर्थात् जैसे नहीं उनका यह लिख
ना रुठ है ॥१५॥ पत्र ३७१ वें पर लिखा है

कि "आवश्यक सूत्र में लिखा है कि सामाजिक
कर्मों के लक्षण एजादिक न करे। तर्क क्यों
कि इसमें ऐसा संभव होता है कि उत्तम का
र्य में मध्यम कार्य संभव ही नहीं है अर्थात्
संवर में आश्रय न करे इस वास्ते सामाजिक
में एजाद निषेध करी है ॥

फिर ४१७ वें पत्र पर लिखा है कि सामाजिक
तो निर्धन आवक करे एजाकी सामग्री के
अभाव से फिर लिखा है कि एजा होती ही तो
सामाजिक बीच में ही छोड़कर एजा में फल
गुणों में बैठ जाय क्योंकि एजा का विशेष गु
ण है यह देखो परस्पर विरुद्ध है ॥१६॥

४१७ पत्र पर लिखा है कि मन्दिर में मक्कड़ी
के जाले हो जावें तो साधु मन्दिर के नौकर द्वारा

भारतीय भित्त चित्रों के बाद ग्रन्थस्थ चित्रकला पनपी, उमम मुख्य भाग श्रमण परम्परा का रहा है। यद्यपि बौद्ध मुनियों ने भी ग्रन्थस्त चित्रकला के विकास में श्रमणीय योग दिया है पर उन ग्रन्थों की संख्या अत्यन्त सीमित है जब कि जन मुनियों ने जातयाकथित चित्रकला की परम्परा को प्रोत्साहन दिया उनम चित्रकला के उल्लेखनीय तत्वा की रखा तो की ही माय ही ये धार्मिककथा प्रसंग का अनुसरण करने वाले चित्र भी आश्रित कर पश्चिम भारत की जन सम्प्रदायके इतिहासके तथ्यों को भी सम्माने रखा। मुगल एव राजपूत पूर्व कला का इतिहास जनाश्रित चित्रकला का इतिहास है एगा यदि म कहू तो अत्युचित न होगी। यहाँ पर एक बात में स्पष्ट कर दू कि जैन मुनियों द्वारा आलखित कलात्मक प्रवचन उपादानों की दृष्टि से ही महत्व नहीं रखते अपितु उनको वास्तविकता सौंदर्य प्रसाधक हृदय के भावा पर निर्भर है। तात्पर्य वहाँ भावों का प्राप्रत्य है उपकरण है गीण।

भारतीय लेखन कला का इतिहास भी श्रमण संस्कृति के अनुशीलन के बिना अपूण रहेगा। एक समय था जबकि बौद्धिक प्रावलय के कारण सैकड़ों ग्रन्थ मुनि-मंडल अपने स्मृति पट में संजोये रखता था। समय ने करवट ली, बौद्धिक यत्र प्रमथ क्षीण होने लगा, परिणामस्वरूप सद्वाचिक विचार आलेखित होने लग, तदन्तर इन्हीं सिद्धांतम्बोटनायें कई प्रकारके विवरण, भाष्य और टीकाए भी लिखी जाने लगी। हा मो म नेयन कला के सम्यघ में आपकी बना रहा था—कला की वास्तविकता सीमित स्थान में ही उसे प्रवट करने में है। उभी प्रकार लेखन कला का वैशिष्ट्य सीमित स्थान में अधिव से अधिव विचार आलेखित करने में है। एक समय था जब लिखने के साधा भी हमारे यहाँ सीमित थे। जन मुनियोंका जीवन प्रारम्भ से ही सांस्कृतिक और साहित्यक मात्के में ऐसा ढला हुआ रहा है कि इस प्रकारकी मानव मूलक प्रवृत्तियाँ को त्रिना जीवन में स्थान दिये बिना रहा नहीं जाता। आन्तरिक प्रवल प्रेरणा के कारण ही आज हुआने जैन ज्ञान भण्डार सुरक्षित है जिनमें न केवल जन साहित्य ही सुरक्षित है अपितु बहुत से भारतीय साहित्य की कीर्ति बढ़ाने काल अर्जन अप्राप्य ग्रन्थ भी सुरक्षित ह। इन ग्रन्थों का लेखन जैन मुनियों के द्वारा ही हुआ था। आपको आश्चर्य होगा कि पाटन व जन ज्ञान भंडारों में ऐसे भी बौद्ध धीर दिग्गवर ग्रन्थ उपलब्ध हुए है जिनको समुत्पत्थि तथा कथित सम्प्रदायों के ज्ञानागार में नहीं हुई। यहाँ पर स्मरण रखना चाहिए कि प्रथ नेयन विषयक वाय न केवल वेतन भोगी व्ययों द्वारा ही सम्पादित करवाया जाता था अपितु मल्लघारों आनाय हेमचन्द्र मूरि और मुप्रमिड कल्लोनायाक, श्री कमलामिह उपाध्याय, श्री समय मुन्दर उपाध्याय और यगाविजय उपाध्याय जैसे स्वतंत्र विद्वानों ने अपने करकमलों द्वारा ग्रन्थों का आलेखन किया जिनम पान होता है कि अद्यतन युग में कष्ट प्रद माने जाने वाले नेयन वाय के प्रति हमारे पूर्वज कितने सजग थे।

श्रमण परम्परा की श्रोदाय मूलक भावना विद्वर विध्यान रही है। जहाँ तक साहित्य और संस्कृति का प्रदन है वे इनने परमन् सहिष्णु व उदार है कि जहाँ कहीं म भी इन्हें सत्प उपलब्ध होता है वही ग्रहण कर अपने मात्क म ढान कर दीनराग वाणी में परिणित कर लेते ह। उनकी श्रोदाय मूलक वृत्ति का परिचय तो इसी से मिल जाता है कि जन साहित्य के विभिन्न भागों का स्पष्ट करने के लिए मनक प्रकार की टीकाए व स्तयक लिखकर स्वपाठित्य का प्रताप पूण परिचय ता दिया ही साम् ही अजन वाय्य

वस हमारी भी यही अज्ञा है कि भाव पूजा ही जिनाजाका पालन है और भाव पूजा ही मोक्ष दायिनी है ॥

फिर तुम किस प्रकार कहते हो कि अङ्ग पूजा और अग्र पूजा अर्थात् फूल फलसे मूर्तिका पूजन कर्नी जिनाजा और मोक्ष दायिनी है सो तुम्हारा कहना परस्पर विरुद्ध है ॥ १८ ॥ - ४१२ वें पत्र पर लिखा है कि घर देहरे की पूर्व उत्तर और मुख करके पूजा करे और जो पश्चिम को मुख करके पूजे तो ४ चौथी पीढ़ीसे विच्छेद होय, दक्षिण को मुख करके पूजे तो संतान न ही होय, और विदिशों में मुख करके पूजे तो धन पुत्र और कुलका नाश होय इत्यादि ॥ और पत्र ४७८ वें पर लिखा है कि जो देहरे के पास रहे तो हानि होय और

अब हम कुछ ऐसे प्रश्नों की चर्चा उपयुक्त जान पड़ती है कि वर्तमान समय को देखकर मुनि मंडल को कुछ प्रगतिशील ज्ञान चाहिए अब आज हम यहाँ पर एक छोटसे गूँठ के समस्त सघाडे के साधु साध्वी एकत्र हुए हैं और युग की समस्याओं से परिचित हैं एवं साथ में यह भी जानते हैं कि इस अथमूनक युग मधम और सस्त्रनिवर्ग विशप तक ही सीमित है और मुनि जीवन भी एक समस्या के रूप में है। ऐसी स्थिति में हमारा प्राथमिक बतव्य हो जाता है कि अतीत से प्रेरणा लेकर वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों के अनुसार अत्मा के मूल गुणों की रक्षा करते हुए धर्म और सस्कृति के तत्वों का समुचित प्रचार करें या युगानुकूल परिस्थितियों के अनुसार हम अपने आपको तैयार करें। केवल बाल दीक्षितों की या नव दीक्षिता को सग्या वृद्धि मात्र में शासन सेवा का प्रमाण पत्र प्राप्त नहोगा प्रत्युत इसके लिए तो हमें नव मानस का प्रबुद्ध कर सके ज्ञान के उस धरातल तक पहुँचना होगा। मैं मानता हूँ कि हम लोगों पर धार्मिक उत्तरदायित्व का वाक्य तो है ही पर इससे भी अधिक उत्तरदायित्व राष्ट्रीय मयम एवं राष्ट्रीय नैतिकता की रक्षा का है। जब सामान्य जीवन यापन करने वाला राजनैतिक पुरुष कुछ कर सकता है तो उच्चकोटि के नियम पालने वाला मुनि समाज क्या राष्ट्रीय चेतना उद्बोधनाथ कुछ भी नहीं कर सकता? बहुत कुछ कर सकता है। पर उसकी दृष्टि समन्वय मतव और जन बल्याण कामी होनी चाहिए।

मेरा तो विश्वास है कि अथ राजनैतिक नेताओं की अपेक्षा निरक्षरता निवारण, प्रौढ शिक्षा, राष्ट्रीय चरित्र निर्माण और मदाचार व सद्यवहार के विकाम में जन मुनि सब से अधिक उपयुक्त व्यक्ति हैं परन्तु आज हम श्रावक को छोड़ कर अथ व्यक्तियों ने माथ मिथ्यायियों के नाम पर जो न्यवहार करते हैं यहाँ व्यवहार हममें मानवता के प्रति संदेह की कल्पना करने को निवश करता है। वाद विहार, जन सघर्ष का ही एक माध्यम था। जो हमारे जीवन से विलुप्त हो चुका है जब विनोदाभावे या तथाकथित नेताओं की पादविहार यात्रा देश में जाति की शत्रुघनि कर देती है तो हमारे जन्म सतत् पादविहारी यदि थोड़ा सा अपना दृष्टिकोण बदल दें तो क्या उपयुक्त काय सरलता पूजन सम्पन्न नहीं किए जा सकते। आज हमें जीवन में दृष्टि की बहुत आवश्यकता है। जीवन बदला है तो जीवन के मूल्यांकन के प्रकार भी बदले हैं। हमें भालूम जाना चाहिए कि हम गृहस्थवाद के युग में नहीं पर यथाथवाद के युग में जीवित हैं। मैं करवद्ध प्रार्थना यह भी करने का साधु कर सकूँगा कि प्रत्येक प्रकार की अनुचित व अनावश्यक वस्तुओं की सचय प्रतियों पर प्रतिबन्ध की प्रतिबन्ध आवश्यकता है। ज्ञान के उपकरणों को अपवाद के रूप में लिया जा सकता है।

शिक्षा के क्षेत्र में भी आज जाति की बहुत आवश्यकता है जैन मुनि एवं आर्याओं को ज्ञान-पासना के चिन्ते साधन सुलभ है जन्मे शायद ही अथ किसी सम्प्रदाय के धार्मिक नेताओं को प्राप्त है पर इस सुविधा का लाभ उद्धृत हो कम जिासू उठा पाने ह। अनेक ज्ञान की अपूर्णता के कारण ही कभी २ व्यास पीठ पर विचित्र स्थिति का सामना करना पड़ता है। अद्यतन शिक्षित समाज द्वारा जो ध्वनि विस्तृत की जा रही है कि धर्म म्याना से धीरे मुनियों ने हमें विशेष प्रेम नहीं है इसका भी एक मात्र कारण मुझे तो यही ज्ञात होता है कि जिन आधारों पर ऐसा कहने वाले सोचते

तर्क-अरे भाई! ऐसे लिखने वाले! यह का तुम्हारी समझमें फरक है कि जो ऐसे ऐसे भगवान के अपमान रूप कथन लिखते हो और ऐसे ही और नवीन ग्रन्थों के कथन भी सिद्ध होंगे जिनपै तुमने आचरण (अमल) किया है ॥

नहीं तो बुद्धिमान को चाहिये कि यथार्थ भाव पर प्रतीति करे और यह ऐसे पूर्वक कथन तो प्रत्यक्ष उपहास रूप विरुद्ध हैं ॥ १५ ॥ पत्र ४६७ वें पर लिखा है कि कृष्ण वासुदेव ने मजी को पृच्छता भया कि हे भगवन्! कौनसा पर्व पर्वों में से उत्तम है तव ने मजी कहते भये कि मार्गशीर शुदि ११ एकार शी पर्व उत्तम है कोंकि जिनेन्द्रों के ५ पांच कल्याण सर्व क्षेत्र आश्री १५० डेढ़सौ ज्ञये हैं फिर कृष्णजी यह कथन सुनकर ताही

आवश्यकता प्रकट की जिससे गुरुदेव की परम्परा का एक सगठन बन सके एवं उनकी स्मृति स्वरूप अजमेर स्थित मुख्य दादावाडी तथा भारत के कई नगरों में स्थित दादावाडियों का जीर्णोद्धार हो सके ।

यह भी निर्णय हुआ कि परिस्थिति एवं गुरुदेव की मुख्य दादावाडी अजमेर में स्थित होने के कारण सघ का केन्द्रीय या मुख्य कार्यालय काय सुविधा की दृष्टि से अजमेर में ही स्थापित किया जावे । हालां कि उपस्थित समुदाय ने यही निश्चय किया था किन्तु श्रावक सम्मेलन के अधिवेशन में अधिक वांछनीय समझ कर यही निर्णय किया गया कि जहाँ सघ के प्रधान मंत्री का निवास स्थान हो वही पर सघ का कार्यालय रमा जावे ।

तारीख २१ मई ५६

गुरुदेव की स्मृति में सपन्न होने वाले शताब्दी महोत्सव की तारीख २० ५-५६ की व्यस्त कायवाही बड़े उत्साह व धूमधाम के साथ रात्रि के १२ बजे तक गुरुदेव के स्थान पर उनकी महिमा-मयी गुणावली भजन गायन से समाप्त हुई, उस संपूर्ण दिवस का विगद वणन प्रस्तुत किया जा चुका है ।

श्रीपत्र रतु में भी अजमेर की रातें बड़ी ठंडी होती है । बाहर से पधारे हुए गुरुदेव के भक्त तारीख २१-५-५६ को प्रातः काल उठकर भक्ति पूजन आदि करने के बाद पुनः शताब्दी समारोह के उपनक्षाय निमित्त विशाल पडाल में एकत्रित हुए ।

कायक्रम के अनुसार श्रावक सम्मेलन की कायवाही आरम्भ हुई । पडाल में पूव दिवसानुसार साधुसाध्वी, यतिगण, श्रावक-श्राविकायें सभी उपस्थित थे । सब प्रथम श्री फनादी पादवनाथ विद्यालय के विद्यार्थियों ने भगल गान प्रस्तुत किया । तदन्तर मद्राम से पधारे हुये फनादी निवासी श्री गुलाब चदजी गोलेछा ने राजस्थानी बोली में उपस्थित समुदाय के स्वागतार्थ स्वागत गान बहुत ही आकर्षक ढंग में गाया ।

श्रावक सम्मेलन के सभापति पद की सुगोभित करने के लिये समारोह के सयोजक श्री राम-लालजी जूणिया ने जबलपुर निवासी श्रीमान् सेठ रतनचदजी साहिब गोलेछा का नाम प्रस्तावित किया । इसका अनुमोदन बाहर से पधारे हुये भिन्न २ प्रांतों के गणमाय सज्जनो ने किया ।

श्रीमान् रतनचदजी साहिब गोलेछा के सभापति का आसन ग्रहण करने पर समारोह के सयोजक द्वारा तथा अन्य उपस्थित समुदाय स से कई सज्जनो ने पुष्पाहार से उनका स्वागत किया । गोलेछा साहब ने आचार्य महाराज श्री जिन आनंद सागर सूरिजी वीकानेर के श्री पूज्यजी श्री जिनविजय सेन सूरिजी एवं विद्वान् साब्बीजी श्री विचक्षण श्रीजी से अज की वि प्रथम आष उपस्थित समुदाय की आशीर्वादात्मक सभापण से कृताथ करियेगा ।

ने ऐसे लिखा है कि अनन्त को प्रत्येक कहे
 तो मिश्र, प्रत्येक को अनन्त कहे तो मिश्र।
 तर्क। यह तो मिथ्या शब्द का अर्थ है और
 लिङ्गियेने मिश्र शब्द का अर्थ लिखा है यह
 विरुद्ध ॥२१॥ यत्र १११ वें पर लिखा है कि
 "मूलोत्र गुणा दोष प्रतिसेवी वक्रश इत्या
 दि" उत्तर पक्षी-सो यह ऊठ, क्योंकि भगवती
 सूत्र सतक २५ उदेशा ६ द्वार ६ "वक्रश नि
 यंठा नो मूल गुणा पड़ि सेवय होला उत्तर
 गुणा पड़ि सेवय होला" इति वचनात् पूर्व
 पक्षीका कहना है कि मूल गुणा उत्तर गुणमें
 दोष लगाने वालेमें वक्रश नियंठा पाईए
 और सूत्रमें मूल गुणमें दोष लगाने वाले
 में वक्रश नियंठा न पाईए इति सूत्रयकी
 विरुद्ध २॥ ऐसे २ अनेक परस्पर विरुद्ध
 और अनेक शास्त्रार्थ के विरुद्ध और अने

जिस महापुरुष की स्मृति मनाने के लिए यह आयोजन किया गया है उनकी जन समाज को बहुत बड़ी देन है। हम सब जो आज जन और श्रावक कहनाते हैं, वे उन्हीं महापुरुष की परम बरुणा का ही फल है। हमारे पूर्वजों को उन्होंने मास, मदिरा और पशु बलि आदि हिंसक प्रवृत्तियों से हटाकर अहिंसा प्रधान जैन धर्म की दीक्षा दी और एक मुमगठिन समाज के रूप में हमारा संगठन किया। उसी के फलस्वरूप हमारे कुल में उच्च एवं आदर्शमय जीवन यापन सुगम हो गया है। उन गुरुदेव के अनंत उपकारों से हम कभी उन्मत्त नहीं हो सकते। अतः हमारा कर्तव्य है कि उनके उपदेहित मार्ग में स्वयं चल और दूसरों को भी इस ओर प्रेरित कर।

पूज्य गुरुदेव की सबसे बड़ी देन यह है कि उन्होंने चैत्यवास के विकृत मार्ग का प्रखर विरोध किया और सुनिहित मार्ग को सव्य प्रचारित किया। उन्होंने जैन धर्म को जैन में ही सीमित न रख कर सबके लिए उसका द्वार खुला कर दिया। अहिंसामय धर्म का इतना व्यापक प्रचार किया कि जिससे लक्षाधिक भ्रोसवाल नये जैनी बने। आज हमारे में बहुत सकुचितता आ गई है। नये जन बनने का मार्ग अव्यक्त सा है, इसीलिए हमारी सत्या दिनोदिन घट रही है। अतः हमारा सबसे पहला कर्तव्य यही होना चाहिए कि गुरुदेव द्वारा उद्घाटित आदर्श मार्ग को पुनः अपना कर जैन धर्म का प्रचार जोरों से करें और जो भी नये जैन बने उनका सामाजिक अधिकार देकर हर प्रकार अपनायें। आज विश्व में जैन धर्म के संदेश की बड़ी मांग है। विश्वशांति का यही एक सच्चा उपाय है। इसलिए हम जैन धर्मानुरागी बनाने, बढाने और उनका अपनाने का सबसे पहला कर्तव्य समझना चाहिए।

दूसरी आवश्यक बात यह है कि आज जो हम जैन व श्रावक कहलाते हैं उनमें जैनत्व और श्रावकत्व का अभाव नजर आता है। जैन धर्म के ज्ञान से हम प्रायः शून्य हैं और श्रावक वे बतों व पालन में भी बहुत शिथिल हैं। जैन धर्म में जन्म लेने व संस्कारगत कुछ विधि नियम व ऋद्धियों का पालन करते हैं उनके सिवाय वास्तविक जैनत्व हमारे में कितना है, यह हृदय पर हाथ रख कर देखें। राष्ट्र के भावी कणधार हमारे नवयुवक तो और भी अधिक जन धर्म से दूर हटते जा रहे हैं। यह हमारे लिए बहुत ही गंभीर प्रश्न है और इसका उपाय खोजें और किए बिना हमारा जैनत्व और श्रावकत्व खतरे में है। आज जो जैन होने का हमारे में बोध है, उसे भी टिकाये रखना बठिन मालूम देता है। मेरी राय में हमारी जैन शिक्षण संस्था में तो जन धर्म की शिक्षा अनिवाय ही ही पर अन्य संस्थाओं में पढ़ने वाले जैन बालक-बालिकाओं के लिए भी जन धर्म की शिक्षा का उचित प्रयत्न हो। धार्मिक पाठ्यक्रम की पुस्तकें शीघ्र तैयार की जाय और उनकी परिक्षाएँ चालू की जाय। उत्तीर्ण छात्रों को पुरस्कार आदि द्वारा प्रोत्साहित किया जाय। सस्त मूल्य में जैन महापुरुषों की जीवनिया और जन धर्म की मुख्य मुख्य बातें सरल भाषा में समझाने वाली पुस्तकें सूत्र प्रचारित की जाय, जिससे हमारे में जैन धर्म का ज्ञान बढ़े। जनोच्चार क्रियानुष्ठानों को भी नये और आनंददायक ढंग से युवकों के समक्ष रख जाय। केवल तोता रटत पाठों को ही महत्त्व न देकर उनके मर्म और महत्व का अच्छा बोध हो सके, इसके लिए हमें ठोस कदम उठाना चाहिए।

कराहै सो उसी परमात्मा के पूजनमें जो न
 फा होताहै उस नफे का पाठ सूत्रमें से कोई
 न मिला तो यह खिशांना सा महने रूप ज
 वाव लिख धराहै, खेर तदापि हम तुम्हारे
 जवाव को खाडन करतेहैं कि पोथी को प
 लंग और चौकी पर अपने पढ़ने के आराम
 वास्ते रखतेहैं और मत्पे पर तो कोई मत प
 दी रखता होगा और अच्छे कपड़े में तो अ
 पने उपकरणा की रक्षा वास्ते रखतेहैं परन्तु
 पोथी की पूजा तो नहीं करतेहैं यथा "नमो ब्र
 ह्मलिपये" इति अस्यार्थः नमस्कार हो ब्र
 ह्म ज्ञानी की लिखित को भावार्थ सो इस पो
 थी यानि स्याही कागज को तो नमस्कार नहीं
 करतेहैं अपितु ब्रह्मज्ञानी के ब्रह्मज्ञान की
 नमस्कारहै कि जिस ज्ञानसे लिखने पढ़ने
 की बुद्धि प्रकट हुई तथा जिस ज्ञानीने अक्ष

का बहुत उपकार हुआ है और अब भी यदि उसे ठीक ढंग से तैयार कर काम लिया जा सके तो इससे बड़ा लाभ हो सकता है ।

अब हमें आत्मलोचन करना है । श्रावक कहलाते हुए भी हमारे में श्रावकोचित गुणों का विकास नहीं नजर आता है । जनत्व तो बहुत दूर की बात है, पर हम मानवता से भी दूर हटते जा रहे हैं । यह बहुत ही विचारणोय है । आज अनतिश्रुता का बोलवाला है । और हमारे व्योपार में प्रमाणिकता बहुत कम रह गई है । वास्तव में जैन होने के नाते हमारा यह प्रभाव होना चाहिए था कि जैनी शोषण व किसी के दिल दुग्याने का काम कर ही नहो । मक्ते, भूठ बोलना, चोरी करने की तो जैनों के लिए स्वप्न में भी कल्पना नही की जानी चाहिए थी । पर आज भूठ का बोलवाला है । धोखा-बडो व्यापार में प्रधान हो गई है । पर-रुनी गमन आदि सप्त व्यसन निषेध तो प्रत्येक जैन के लिए जरूरी है । परिग्रह के प्रति हमारी जो आसक्ति दिनोदिन बढ रही है, यह तो जैन धम के मवथा खिलाफ है । अपरिग्रह व्रत भगवान महावीर की मौलिक देन है । सप्रहवृत्ति (परिग्रह) को बढाना पाच पापो में से बडा पाप है । हम इस बात को आज मवथा भूल गए हैं । इस परिग्रह रूपी पाप का प्रायश्चित्त हमें नि न्वाथ और उपयोगी कार्यों में दान दकर करना है । अब हमें परिग्रह परिमाण व्रत की ओर विशेष रूप से ध्यान देना है । आज अथ का युग है । येनकेनप्रकारेण धन कमाना और बढाना ही हमारा लक्ष्य हो गया है । पर वास्तव में मार्गानुसारी के पहले गुण मे 'यायसपन्न-विभव' को जो स्थान आवश्यक है, चारित्र ही मनुष्य की उन्नति का मापदंड है । राष्ट्र को चरित्रवान् बनाने के लिए हमें त्याग की ओर बढना होगा । सेवा और अथ को अपनाना होगा । सादगी-पूण जीवन विताना होगा और बहुत्व व आत्मीयता की भावना का बढाना होगा । गुरुदेव के इम उत्सव से कुछ भी जीवन म प्रेरणा ले सके तो हमारा यह उत्सव सफल माना जा सकेगा ।

आज श्रावक सघ के सगठन की बहुत बडी आवश्यकता है । साधु-साध्वी हमारे श्रावक सघ से ही निकलते हैं और श्रविकाण ता हमारा अभिन्न अंग हैं ही । इसलिए यदि हम श्रावक सघ को सुमगठित, प्रभावशाली और तेजस्वी बना सकें तो अन्य तीनों का उन्नत होना महज होगा । अतएव गुरुदेव के इस पुण्य प्रसंग पर हमें श्रावक सघ की एक ऐसी सस्था का सगठन करना परमावश्यक है जा गुरुदेव के बताए हुए माग को अधिकाधिक प्रचलित कर सके । आशा है आगत सभी सज्जन मेरी निवेदित इन चढ बातों पर गभीरता से विचार कर किसी ठोस योजना का त्रियान्वित करने का सकल्प लेकर प्रयत्न करेग ।

अत में मैं आप सत्र महानुभावों का पुन आभार मानता हूँ जिन्होंने मुझे यह सेवा कार्य सौंप कर अपने विचार प्रकट करने का सुअवसर दिया है । अपने विचारों को मूत रूप देने के लिए जो भी सेवा मुझे दी जायगी उसे तन मन धन से सहप करने का विद्रास दिलाता हूँ ।

श्रीरअपनी तर्फ से तो सूत्रोंमें बड़ते राही
 टूंड रहे परंतु कहीहोंते तो पांते हंअलवना सूत्रमें
 से टूंड टूंड के एकदशवै कालिक के टवे
 अध्ययन की गाथा ५५ वी ब्रह्मचारी के अर्थ
 मेंहै सो खोल धरतेहैं यथा "चिनिमित्तं न
 निज्जाय नारीवासअलंकित्रं, भक्तंरपि
 वददृगां, दिठंपडि समाहरे॥१॥ अस्यार्थः
 साधु ब्रह्मचारी पुरुष चि० चित्रामकीभीत
 देखे नहीं ना० वाअथवा स्त्रीअलङ्कार अ
 र्थात् भूषणा (गहने) सहित अलङ्कृत को
 देखे नहीं कदाचित् नजरमेंअपड़े तो दि०
 दृष्टिको पीछे मोड़े भ० (जैसे) सूर्य पर
 दृष्टि जापड़े तो जलदी पीछे मुड़जाय इ
 त्यर्थः भला मूर्ति पूजनी सहीह किस्
 तरह इस गाथामें होगई, खेर वड़ी वड़ाई
 कहतेहो कि स्त्रीकी मूर्ति देखने से काम

प्रस्ताव न० २

श्री जिनदत्त सूरि सेवा सघ के विधान निर्माण के हेतु यह सम्मेलन निम्न व्यक्तियों की एक समिति बनाता है—

१ श्री गनेशीलालजी नाहटा, कलकत्ता २ श्री विजयसिंह नाहर, कलकत्ता ३ श्री ताजमलजी बोधरा, कलकत्ता ४ श्री नवरतनमलजी सुराणा, कलकत्ता ५ श्री दयाचदजी पारख, कलकत्ता ।

प्रस्तावक—श्री जवाहरलालजी लोढा ।

अनुमोदक—श्री अग्ररचदजी नाइटा व पंडित ईश्वरलालजी जैन ।

सर्व सम्मति से स्वीकृत ।

प्रस्ताव न० ३

“यह सम्मेलन प्रस्ताव करता है कि श्री जिनदत्तसूरि सेवा सङ्घ द्वारा सात क्षेत्रों के उत्कल्प आदि कार्यों को पूरा करने के लिए ‘श्री जिनदत्तसूरि सेवा फण्ड’ की स्थापना की जाय ।

प्रस्तावक—श्री महताबचदजी गोलेछा, जयपुर ।

अनुमोदक—श्री रूपचदजी सुराणा बीकानेर, श्री राजरूपजी टाक जयपुर, श्री भवरलालजी नाहटा कलकत्ता । श्री मोहनलाल दीपचद चौकसी सेनटरी जन श्वेताम्बर कान्फ्रेंस बम्बई ।

सर्व सम्मति से स्वीकृत ।

प्रस्ताव न० ४

यह सम्मेलन ममाज के अग्रगण्य इतिहासज्ञ श्रीमान् अग्ररचदजी नाइटा को ‘जन साहित्य रत्न’ की उपाधि प्रदान करता है ।

प्रस्तावक—श्री प्रतापमलजी सेठिया, मन्दसौर ।

अनुमोदक—श्री जिनविजयजी महाराज जयपुर, श्री मोहनलाल दीपचद चौकसी बम्बई, पण्डित लालचद भगवानदास बडीदा, श्री जवाहरलाल लोढा आगरा, पण्डित ईश्वरलालजी जन जयपुर ।

सर्व सम्मति से स्वीकृत ।

प्रस्ताव न० ५

यह सम्मेलन बिहार सरकार से सानुरोध निवेदन करता है कि अहिंसा के प्रवक्तक भगवान महावीर की निर्वाण भूमि पावापुरी से राजग्रही तक का प्रदेश ‘अभय प्रदेश’ घोषित करने की कृपा करे ।

श्री अध्यक्ष द्वारा प्रस्तावित हुआ व सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ ।

प्रस्ताव न० ६

यह सम्मेलन यतिवय श्री माणिक्यसूरिजी भीडर वालो ने जो आदिवाणियों में जैन धर्म के

उत्तर पक्षीकी तर्क० है विचारवानो! अब देखना चाहिये कि इस जवाब के देनेवाले को और कोई शुद्ध जवाब नहीं मिला जो विराग भाव अर्थात् वैराग्य का हेतु सराग भाव पर उतारा है सो विलक्षण अयुक्त है क्योंकि वैराग्य तो क्षयोपशम भाव है तथा निज गुण अर्थात् आत्मगुण है

और कामका जागना उदय भाव है तथा परगुण अर्थात् कर्म योग्य है सो क्षयोपशम भाव और उदय भावका तो परस्पर रात दिन का अन्तर है ॥

यथा, दृष्टान्त है कि जो गृहस्थी लोक है वे अपने पुत्र, पुत्रियों को लिखना पढ़ना आदिक कार व्यवहार तथा लज्जाका करना और मीठा बोलना तथा क्षमाका करना और माता पिता आदिक की आज्ञाका प्रमाण

प्रस्ताव न० १२

अजमेर के मदार पहाड पर जिस जगह गुरुदेव ने समाधि ली थी वहा उनकी चरणपादुका हे उस स्वान पर कोई अच्छा स्मारक बनाया जाय ।

प्रस्तावक—मङ्गलचंदजी सकनेचा, अनुमोदक—रामदयालजी भडारी

प्रस्ताव मव सम्मति से स्वीकृत ।

प्रस्ताव न० १३

श्री तीर्थाधिराज सिद्धाचलजी की श्री ऋगभदेवजी की टूक के पास जो गुरुदेव के चरण विराजमान हैं, वहा का जीर्णाद्धार होना आवश्यक है ।

अध्यक्ष द्वारा प्रस्तावित एव सब सम्मति से स्वीकृत ।

उपरोक्त प्रस्ताव स्वीकृत होने के पश्चात प्रस्ताव न० १ में आयोजित जिनदत्तसूरि सेवा सघ के फाय मचालन एव श्रय व्यवस्था का विषय विचाराय उपस्थित हुआ । अनेक सज्जनों ने अपने अपने विचार प्रकट किये । ता० २०-५-५६ की विषय निर्धारणा समिति में जब सेवा सघ का प्रस्ताव रखा गया था तब दादागुरु का विशेष स्थान अजमेर में ही स्थिति होने के कारण सेवा सघ का केंद्रीय कार्यालय भी अजमेर में स्थापित करना निर्दिष्ट किया गया था अत तदनुसार स्थानीय उसाही कायकर्ताग्रा ने जब प्रस्ताव स्वीकृति के लिये समुदाय के ममक्ष आया तो उसी समय से उसका प्रायमिब चदा एक एक रुपया एकत्रित करना आरभ कर दिया था । वह एकत्रित सारी राशि व रसीद जो गीध्रताशोत्र डम काय के लिये छपाई थी सेवामघ के विधान निर्माण के हेतु सगठित समिति जिसके सदस्यों के नाम प्रस्ताव नंबर एक के अंत में प्रकाशित हुये हैं उनमें से कुछ के आग्रह के कारण केन्द्रिय कार्यालय को अजमेर में न रखने के परिवर्तित आयोजन को वादविवाद के आक्षेपों से बचाने के हेतु, एकत्रित राशि तथा सवधित रसीदें भी सेवा सघ के मनोनीत मंत्री श्री प्रतापमनजी मेठिया के मुपुर्द कर दी ।

सेवासघ का निर्माण जिन कार्यों को ध्यान में रख कर किया गया था उनके लिये सुदृढ आर्थिक स्थिति भी आवश्यक थी अत उसी समय सेठ महताव चंदजी गोलेछा जयपुर वाला ने ५००१), सेठ रतनचंदजी गालेछा जयपुर वालो ने २१०१) तथा श्री रामलालजी लूणिया ने २१०१) सहायता देने की घोषणा की ।

तदनन्तर २ प्रस्ताव और भी उपस्थित हुये । एव तो देव द्रय नाम से सग्रहित अतुल धन राशि का गिधा प्रचार के उपयोग में लाने के मवध में था । विषय की मार्मिकता एव तत्संबंधी पक्षापक्ष एव वादविवाद का विचार कर अध्यक्ष महोदय ने इस प्रस्ताव पर विषय निर्धारणो समिति में पूर्व विचार न होने के कारण उपस्थित करने के लिये अस्वीकृत कर दिया ।

दूसरा प्रस्ताव जयपुर निवासी श्री

गड न योग्य विचारधिया ने लिये

भावों का एकसा हेतु कहने वाला विरुद्ध वा
चीह्नै परन्तु यह भाव तो निष्पक्ष दृष्टिसे स
म होगा और पक्षके नशेमें बड़ बड़ाट कर
ने के लिये तो राह अनेक हैं ॥

अब हम एक प्रश्न करते हैं कि जब तक
गुरुका उपदेश और शास्त्र ज्ञान नहीं हो
गा तब तक मूर्तिके देखने से ज्ञान और
वैराग्य कैसे होगा और ज्ञानके द्वारा पीछे
मूर्ति से का प्रयोजन रहता है अथवा दृष्टान्त
किसी ग्रामके रहने वाले दो पुरुष किसी
प्रयोजन के लिये एक नगर में आये उन्हें
ने उस नगर के निकट सुना कि मनुष्य
को धर्मका जानना और ग्रहण करना उ
चित है इसके अनन्तर वे दोनों पुरुष न
गरमें जाकर अन्य २ पुरुषों को पूछते भ
ये कि हे भाइयो! धर्म कहाँ मिलता है जो



षष्टम गताब्दी महोत्सव पर एवनिन श्रीपूज्यजी श्रीजिनविजयमेनमूर्त्ति, श्रीजिनचित्रपेन्द्रमरिजी, श्रीजिनधरणद्रमूर्त्ति महाराज एव यति समुदाय वा एव दर्शनीय चित्र

ला पतिभक्ता गौरवर्ण जइहै इत्यादि-
 और दूसरा हाकर द्वारे पड़चा तो वहां देख
 ता काहै कि एक श्याम वर्ण पुरुष और गौर
 वर्ण स्त्री, की मूर्ति का जोड़ा खड़ाहै सो उसके
 देखकर उस पुरुषने इसकर मनमें कहा
 कि आहा! का अच्छी स्त्री पुरुषकी जोड़ी सजी
 है और का २ अच्छे जेवरहैं वस और कुछ
 ज्ञान वैराग्य नहीपाया फिर वापस बाजार
 मेंआया और वह दूसरा पुरुष धर्म शाला
 मेंसे धर्मोपदेश सुनकर बाजारमें आया,
 और दोनो आपसमें पूछनें लगे कि कुछ ध
 र्मपाया १ धर्मशाला वाला बोला कि हां पाया,
 श्री ठाकरजी बड़े न्यायी जराहैं और दया दान
 कर्ता, धर्महै। मला तुमने का पाया १ तो व
 ह ठाकर द्वारे वाला बोला कि मैंने तो कुछ
 नही पाया, हां अलवत्ता एक बड़ा सुन्दर

लखनऊ वाले श्री पूज्यजी श्री जिनविजयसेन मूरिजी महाराज की अध्यक्षता में यति सम्मेलन की कार्यवाही आरम्भ हुई। आपके पास जयपुर वाले श्री पूज्यजी श्री जिनधरनेन्द्रमूरिजी महाराज तथा बीकानेर के श्री पूज्यजी श्री जिनविजयेन्द्रमूरिजी महाराज एवं ही मंच पर विराजे हुये थे। अन्य उपस्थित यति समुदाय चारों ओर विराजमान था। सम्मेलन का संचालन दिल्ली में पधार हुये यतिवय श्री रामपालजी महाराज कर रहे थे। उन्होंने गुरुदेव को श्रद्धाजति अर्पित करने के पश्चात् यति सम्मेलन की रूपरेखा को सफनतापूर्वक कार्यान्वित करने के लिए जो अथवा परिश्रम किया उसका सारा विवरण समुदाय के समक्ष उपस्थित किया। तथा यति सम्मेलन में स्वीकृत कृत्यों का प्रकाशित द्वारा निश्चित एव स्वीकृत प्रस्तावों का पठन मुनाया।

यति सम्मेलन के प्रस्ताव

१—गच्छ मन्थी सारे विवादा को त्याग कर समस्त यतियों का एकीकरण किया गया। अतएव आज से हमारा यति समाज अपना अपना पृथक् अस्तित्व न रखता हुआ 'भारतीय यति सङ्घ' का अनुयायी रहेगा और उनके विधान का पालन करेगा।

२—यह यति मधु गिन्ना प्रचार के लिए पूण प्रयत्न करेगा जिसमें भविष्य की रूपरेखा उज्वल है।

३—यह यति सधु समाज में सामाजिक उच्च शिक्षा का प्रसार कर विदेशों में भी अपने दान का प्रचार करने के लिए प्रयत्नशील होगा।

४—यति मधु का अध्यक्ष प्रत्येक निर्वाचन के अवसर पर सदस्या द्वारा निर्वाचन होगा। इस वर्ष आचार्य श्री जिनविजयेन्द्रमूरिजी महाराज अध्यक्ष निर्वाचित हुए हैं और इन्हीं के आदेश पर मधु का कार्यक्रम बनता रहेगा।

५—यह यति मधु मानवीय स्वभाव और परिस्थिति जय दुःखनाशों का परिहार कर 'यति' शब्द का गायन करने के लिए सबदा कटिबद्ध रहेगा।

६—समयाचित व्यवहारों को रखत हुए अन्य धार्मिक व्यवहारों का त्याग किया जाएगा।

७—गात्रों की रक्षा के लिए पूण प्रयत्न किया जायगा जिसमें वे विरुद्ध व विपन्न न हों।

८—१८ वर्ष पहिले यति दोषा न हों सवेगी। पठन-पाठन के बाद योग्य होगा उसे दोषा दो आवेगी।

इसके पश्चात् मय सम्मति से 'भारतीय यति सङ्घ' के अध्यक्ष श्रीपूज्यजी श्री जिनविजयेन्द्रमूरिजी महाराज, समुक्त मधी जयपुर के यतिजी श्री जिनलालजी य दिल्ली के यतिजी श्री रामपालजी महाराज और वायाध्यक्ष बीकानेर के यति श्री प्याण्डालजी महाराज निर्वाचित हुए।

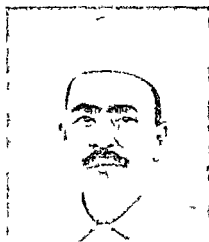
अन्त में अध्यक्ष पद में भाग्य दत्त हुए श्री पूज्यजी श्री जिन विजयसेनमूरिजी महाराज न फरमाया कि—

हटादेवं। तब वह रोगी पहिले, छोटे वे
 टे के पास गया और कहने लगा कि तुम ह
 कीमके पुत्र हो और मैं दूरसे आया हूँ इस
 लिये मेरा रोग छुपाकर हटा दो। तब वह
 बोला कि हकीमजी की मूर्ति से मुराद पा
 ओ तब वह रोगी हकीम की मूर्तिके आगे
 बैठके रोने लगा और कहने लगा कि हे ह
 कीमजी! मेरी वगलमें पीड़ा होती है मेरे क
 लेजे में पीड़ा होती है और मुझे ताप भी च
 द जाता है+ सो कुछ दवा बताओ कि जिस
 से मैं राजी हो जाऊं इत्यादि- परन्तु उधरसे
 कुछ आवाज तलब न आई तब हारके
 चला आया और फिर बड़े वेटे के पास जाके
 अर्ज करी कि तुम मेरा रोग हटाओ, तब
 वह बोला कि हकीमजी तो गुजर गये हैं
 परन्तु हकीमजी की पोथी मेरे पास है सो देख

शताब्दी महोत्सव के उप-स्वागताध्यक्ष



सेठ हरिश्चंद्रजी धाढीनाल भ्रजमेर



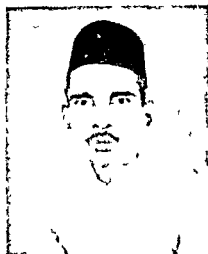
सेठ जीतमलजी लूणिया भ्रजमेर

शताब्दी महोत्सव पूजासमिति के सयोजक



सेठ भागीनालजी फारगन भ्रजमेर

स्वयंसेवक समिति के सयोजक



सेठ भगवानलजी गणनेस भ्रजमेर

जिने अज दीसई वहू सर दीसई मगं हे
शिर" इति वचनात्

परन्तु यहां ऐसे नहीं कहा कि आज जि
न नहीं देखे परन्तु जिन पड़िमाजिन सा
रखी घन्नी देखेहै, इत्यादि०

नजाने पूर्वपत्नीने कौनसे नये बनावदी
ग्रन्थ वस्तुजिव, तथा स्वकपोल कल्पित
जैन तत्वादर्श ग्रन्थ पत्र ५६६वें पर लि
खाहै कि "सिद्धसेनदिवाकर साधुने रा
जाविक्रमके द्वारे सवाल किया किओं
कार नगरमें चतुर्द्वार जैन मन्दिर शिव
मन्दिर से ऊंचा बनवाओ और प्रतिष्ठाभी
कराओ, तव राजाने वैसेही करा, फिर औ
र पत्र ५६८वें पर लिखाहै कि श्रीवज्रस्व
ामी आचार्यने बौद्धोंके राजमें श्रीजिनेन्द्र
की पूजावास्ते फूललाकेदिये, बौद्धराजाको

सुधारक थे आपने अध्यात्म के वन पर व अपनी आत्म शक्ति द्वारा मानव धर्म का उपदेश देकर भ्रातृ-प्रेम उत्पन्न करके अनेक जातियों को जैन धर्म में दीक्षित किया। आपने साहित्यिक ग्रंथों की भी रचना की। उनमें अष्टाश काव्यमय उत्कृष्ट ग्रंथ माना जाता है यह ग्रंथ गायकवाड ओरियंटल सीरीज से प्रकाशित हो चुका है।

आचार्य श्री ज्ञान के भंडार होते हुए भी नितान्त निराभिमानी और सरल आकृति के जीव थे। आज भी यति सङ्घ और श्रमण सङ्घ उन्हीं के पदचिह्नों पर चल रहा है और चलता रहेगा।

यदि आज का जैन समाज उनके दर्शित मार्ग का अवलम्बन करके जैन धर्म के प्रचार में और जैन संस्कृति की रक्षा में अधिक प्रयत्नशील हो तो यह पुण्य तिथि साधक होगी। हमारा यति समुदाय जो इस समय पुनः जागृत हुआ है अपने पूर्व महात्माओं के पथ पर चलता हुआ शिक्षा प्रसार में अग्रसर हो तथा पास किये हुए प्रस्तावों का पालन करके पुनः धर्म ध्वजा फहराने में सफल हो यही चाहता हुआ अपने भाषण को पूरा करता है।

अन्त में यतिजी श्री रामपालजी महाराज ने सबका धन्यवाद दिया और सभा विसर्जित हुई।

जैन साहित्य परिषद्

साम भोजनोपरात शतान्दी महोत्सव के विशाल पटाल में रात्रि को ८ बजे प्रसिद्ध इतिहास वेत्ता यशस्वी जैन साहित्यकार विद्यानिधि श्री जिनविजयजी महाराज की अध्यक्षता में जैन साहित्य परिषद् का कार्य आरम्भ हुआ।

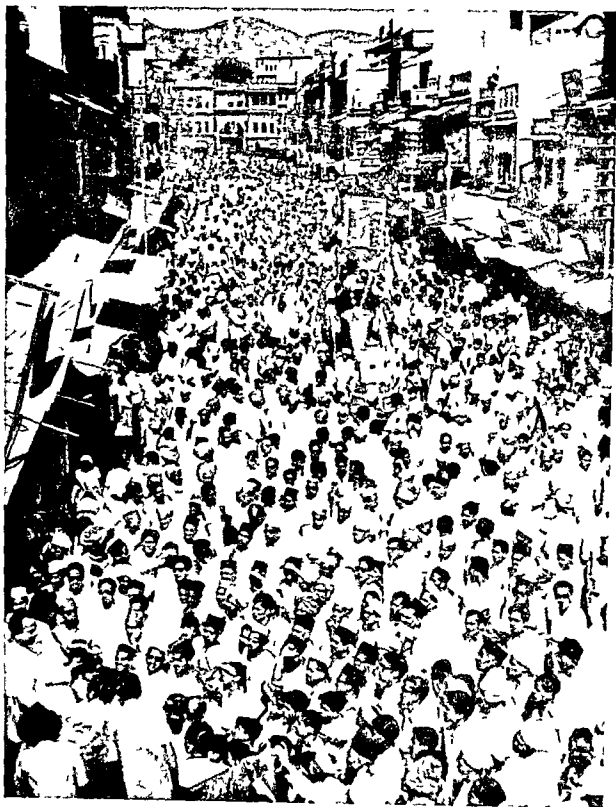
सब प्रथम ओरिएण्टल इन्स्टीट्यूट जैन विभाग, बहोदा, के भूतपूर्व अध्यक्ष प्रसिद्ध विद्वान पंडित लालचंद भगवानदास गांधी ने परिषद् का उद्घाटन किया। अपने उद्घाटन भाषण में श्री गांधी ने महान् जनाचार्यों द्वारा सुसाहित्य के क्षेत्रों की विशाल बनाने के इतिहास का दिग्दर्शन एवं जैन साहित्य में मानवाय माननामा का साप्ताहिक कस किया गया है, इसका विशद विवेचन किया।

प्रमुख जैन साहित्यकार श्री अणवरुच जी नाहटा ने अपने भाषण में बतलाया कि शताब्दियों ने संस्कृति एवं कर्याणकारी धर्म व्यवस्था को सुचारु रूप में परिवर्धित करने में जैन साहित्य विनया अग्रणी रहा है। जैसे जैसे समय साहित्यकार जैन संस्कृति को निर्वाह रूपेण संरक्षित कर आज तक उस प्राणनाम बनाये हुए हैं उसका दिग्दर्शन कराया तथा कहा कि हम उन साहित्यकारों के प्रति वृत्तमता प्रकट करें एव अच्छे साहित्य की श्रीवृद्धि भी करें।

प्रसिद्ध बहना मुनि वानिमागरजी ने अपने विद्वत्पूण एवं सारगर्भित भाषण में श्रेष्ठ साहित्यकारों की वृत्तियों में नये सचार्थित चतुर्थ किम भक्ति युग युग का मार्ग निर्देशन करता रहना

ल स्वभाव से विचरे संयमने विषे ते सं
 याति साधु गा० ग्राम में गये घके तैसेही
 नगर में गयेइस अर्थात् ग्राम में जाय त
 था नगर में जाय तहां सं० दया मार्ग
 अर्थात् दं षट् काय रत्ना रूप धर्म(च)
 पदपूरणार्थ है वू० कहे अर्थात् दया प्रक
 ट करे। श्रीमहावीर स्वामी कहते भये कि
 हे गोतमजी दया मार्ग के उपदेश देनेमें स०
 समय मात्र अर्थात् अल्प काल मात्र भी
 प्रमाद अर्थात् आलस्य न करना इत्यर्थः

परन्तु महावीर स्वामीजीने ऐसे तो
 नही कहा कि हेगोतम! साधु जिस २ ग्राम
 नगर में जाय उस २ में मन्दिर बनवा
 देवे छेरों, ढालकी वजवा देवे पुराने दे
 हरों को तोड़ कर नये बनवा देवे इत्यादि
 हां अलवत्ता नये ग्रन्थ जिनमें ग्रन्थरच



वरधाड के जुलूम में सम्मिलित विद्वान जन-मणूह का एव दृश्य नया—वाजार में

उत्तर देंगे कि सूत्र को हम भगवान् तो नहीं मानते हैं कि यह ऋषभदेवजी हैं यह महावीरजी हैं अपितु सूत्र तो हमारी विद्या के याददास्ती के उपकरण हैं जैसे वही को देख कर लेना, देना याद कर लेते हैं परन्तु वही को लोक भगवान् तो नहीं मानते

वस इस दृष्टान्त वम्शजिव सद्गुरु की सेवा करके ज्ञान पैदा करो और जप, तप, दया, दान, संतोष और शील में पुरुषार्थ करो कि जिससे मुक्ति होवे और मूर्ति को भगवान् कहना तो ठीक नहीं क्योंकि

इसमें ऐसे प्रश्न पैदा होते हैं कि

१ प्र० देव समदृष्टि वा मिथ्यादृष्टि है ?

उत्तर० देव समदृष्टि

और मूर्ति जो सुचित पाषाण की होवे तो मिथ्यादृष्टि नहीं तो जड़ तो है ही। इसी तरह

घोडा जुलूस नया बाजार पहुँचा तब उमका दृश्य देखने लायक था। श्री मज्जेनाचाय वीरपुत्र १००८ श्री आनन्दसागरजी उपाध्याय श्री सुससागरजी तथा उपाध्याय श्री कविद्रसागरजी महाराज अथ मुनि समुदाय के साथ साथ तोनों श्रीपूज्यजी महाराज यनि समुदाय के साथ बरघोडे को शोभा बढ़ा रहे थे। सारा जनसमूह जय जयकार करता हुआ गुरुदेव के प्रति अपनी भक्ति का प्रदर्शन करता हुआ आगे बढ़ रहा था। शताब्दी महोत्सव के संयोजक गुरुदेव के परम भक्त थावक सेठ श्री रामलाल जी लूणिया ने ६०१) की आसरी बोली धोलकर गुरुदेव के कला पूर्ण निमित्त एक बड़े तल चित्र को लेकर अचारी वागे हाथी पर बैठे चकर डुलाते जाते थे। हाथी की सवारी के पीछे करीब २ हजार श्राविकाय, १०० साध्वीजी महाराज के साथ मंगल गान करती हुई चल रही थी। सारे बरघोडे का दृश्य अपूर्व दशायी था। चतुर्विध श्री सघ का ऐसा एकत्रित समुदाय अजमेर में प्रथम बार ही देखने का मिला।

नया बाजार में श्री रामलालजी लूणिया की तरफ से ठाडई से सबका स्वागत किया गया। जुलूस इपीरियल रोड, कचहरी रोड व रूवे कालोनी के विभिन्न मार्गों से गुजरता हुआ लगभग ११ बजे दादवाडी जा पहुँचा और वहाँ एक विशाल सभा के रूप में परिणत हो गया। पुन १०१) की आसरी बोली के साथ गुरुदेव का चित्र हाथी पर से उतार कर सभा मंडप के रंगमंच पर एक ऊँचे स्थान पर श्रीमान जीवनलालजी बोधरा दिल्ली वागा ने स्थापित किया। सभा में श्री आचार्य महाराज, मुनि जिनविजयजी एवं विद्यानिधि श्री कातिसागरजी ने गुरुदेव के सदुपदेशों की ओर सारे समाज का ध्यान आकर्षित किया। भोजन का समय होने से सभा शीघ्र ही समाप्त की गई।

श्राविका सम्मेलन

इस नव जागरण के युग में मंचमुच महिलाएँ अनुपेक्षणीय हैं। अपेक्षाकृत जैन समाज में पुरुषों के प्राबल्य के कारण श्राविकाओं की अभी तक उपेक्षा होती आई है जब प्रस्तुत उत्सव का आयोजन किया गया तभी से आयजको का मस्तिष्क में एक बात बराबर रही कि इस शुभ प्रसंग पर अखिल भारतीय जैन श्राविका सम्मेलन भी रखा जाय जिसमें स्त्रियाँ अपना भावी विकास व उज्वल पथ का निमाण कर सकें।

दिनांक २२ मई १९५६ का मध्याह्न अजमेर जैन समाज के लिए विनोपकर नारी समूह के लिए बरदान मिद्ध हुआ। अष्टम शताब्दी महोत्सव में भाग लेने के लिए हजारों नारियाँ देग के कोने कोने में एकर हुई थी उनका एक स्वतंत्र सम्मेलन कुमारी प्रमलता सचेती, एम० ए० (फाइनेल) के सभानेत्रित्व में आरम्भ हुआ।

सभानेत्री के आमन ग्रहण करने के पश्चात् कुमारी रोशन मेहता (सयाजिन श्राविका सम्मेलन) ने सम्मेलन की कायवाही बड़े सुचारु ढंग से संचालित की।

स्थानीय बया पाठशाला की वालिकाओं के मंगल गान के पश्चात् सभानेत्री ने अपना भाषण पढकर सुनाया। कुमारी राधन मेहता का छोटासा व्याख्यान नारी जाति की जागति के अवध में

९ प्र० देव सन्नी, किम्वा असन्नी ?

उ० देव सन्नी, मूर्ति असन्नी ॥

१० प्र० देव दश प्राणधारी किम्वा चारप्राण ?

उ० देव दश प्राणधारी, मूर्ति चारप्राण ०

११ प्र० देव षट् प्रजा धारी किम्वा चारप्रजा ?

उ० देव षट् प्रजा धारी मूर्ति चार प्राजा

१२ प्र० देव तीन वेदमाहे सुवेदी किम्वा अवेदी ?

उ० देव अवेदी, मूर्ति नपुंसक वेदी

१३ प्र० देव यति किम्वा गृहस्थी ?

उ० देव यति, मूर्ति गृहस्थी ॥

१४ प्र० देव सुने किम्वा न सुने ?

उ० देव सुने, मूर्ति न सुने ॥

१५ प्र० देव देखे किम्वा न देखे ?

उ० देव देखे, मूर्ति न देखे ॥

१६ प्र० देव सुगन्धि जाने किम्वा नजाने ?

उ० देव सुगन्धि जाने, मूर्ति नजाने ॥

वान्धवी के रूप में, पत्नी के रूप में, जननी के रूप में, भगिनी के रूप में वह स्नेह, प्रेम तथा वास्तव्य के मोती लुटानी आई है। उसके इस अक्षय कोप को देखकर यदि कोई डाह करे तो कोई आश्चर्य नहीं। कवि प्रसाद ने "कामायनी" की इन पक्तियों में नारी के महत्व को बड़े ही सुन्दर शब्दों में हमारे सामने इस प्रकार रखा है—

“नारी तुम केवल श्रद्धा हो नव विश्वास रजत नग पगतल म,
पीयूष स्रोत सी बहा करो जीवन के सुन्दर समतल म।”

वास्तव में नारी का श्रद्धापूर्ण समर्पण ही उसकी महानता का सूचक है। उसका महत्व इसी से स्पष्ट है कि प्रकृति ने उसे जगन्नियता के रूप में प्रतिष्ठित किया है। बड़े २ महापुरुषों, जैसे भगवान् महावीर, भगवान् बुद्ध तथा महात्मा गांधी को जन्म देने वाली नारिया ही थी।

पर वर्तमान परिस्थितियों पर दृष्टि डालने से ज्ञात होता है कि आज नारी को समाज में वह स्थान प्राप्त नहीं है जो पहले था, यद्यपि परिस्थिति अत्र तीव्र गति से बदल रही है तथा हमारे संविधान में भी नारी को पुरुष के समान ही अधिकार दिए जाने की व्यवस्था है। एक सामाजिक प्राणा होने के नाते उसको भी उन अधिकारों की आवश्यकता है जो पुरुषों को सहज ही प्राप्त ह। अधिकतर औरतें घर की चहारदीवारी में बंधी ही बन्द रहती हैं, उनको बाहर की हवा तक नहीं लग पाती और न ही वे यह जान पाती हैं कि संसार में क्या कुछ हो रहा है। इस प्रकार उसका सम्पूर्ण अस्तित्व मिट सा गया है, और उसकी वाणी मानो मूक हो गई है।

यही सब कारण हैं जिनसे कि आज 'नारी स्वतन्त्रता का एक जबरदस्त आन्दोलन धीरे धीरे जार पकड़ता जा रहा है।

एक समय था जब लड़कियों को पढ़ाना अनावश्यक तथा हेयप्रद समझा जाता था। लोग बर्हा करने थे—इतने कौनसे नौकरी कराने हैं? आज ये बात नहीं रही है, हमारी राष्ट्रीय सरकार भी स्त्री शिक्षा पर काफी जोर दे रही है, फिर भी हमारा जन समाज इस विषय में काफी पिछड़ा हुआ है। कन्या शिक्षा पर इतना जोर नहीं दिया जाता जितना पुत्र शिक्षा पर।

आज का युग स्वतन्त्रता का युग है, अधिकार का युग है, जिन्म प्रत्येक को अपने विषय में सोचने का अधिकार है। जो ऐसा करने में पिछड़ जायगा वह पिछड़ा हुआ ही रहेगा।

इतना सब कहने का मेरा अर्थ यह नहीं कि नारी पुरुषों के प्रति कोई विद्रोह खड़ा कर दे। मेरा मतलब केवल यह है कि समाज को नारी के प्रति अपना दृष्टिकोण बदलना चाहिए, स्वीकृति को जगह विचारों में व्यापकता आनी चाहिए। स्त्री और पुरुष तो जीवन की दो पहलियाँ हैं। यदि एक भी पहिया ठीक तरह से काम नहीं कर पाता है तो जीवन भी सहज तथा स्वाभाविक रूप से आगे नहीं बढ़ पायेगा—कितनी ही विषमताएँ समाज में प्रवेश कर जायगी। इसीलिए जिन प्रकार पुरुषों को

२५ प्र० देव जघन कितने, उच्छृष्टे कितने ?

उ० देव जघन २० बीस, उच्छृष्टे १७० एकसौ सत्त्व

र - और मूर्तियों लाखें हैं घर २ में भरी हैं ॥

इत्यादि फिर "जिन पड़िमा जिन सारखी" यह

किस न्यायसे कहते हो ? खैर-उनकी श्रद्धा

के अधीन है मूर्तिके मण्डन करने को भी अ

नेक राह हैं और खण्डन करने को भी अने

क राह हैं परन्तु असलमें तो योंही कि मूर्ति

का मण्डन भी हठ है और खण्डन भी हठ है,

तबकेवली जानते हैं ॥

और यह मतान्तरो की लड़ाई तो वीतराग

देव केवल ज्ञानी मालकों के बैठे न निवड़ी

जमालीवत् ॥ और अवतो रांडों की फौज है सो

मतान्तरो की लड़ाई का निवड़ेगी परन्तु त

दपि बुद्धिमानों को चाहिये कि स्व-आत्म हित

कार रूप धर्म में पुरुषार्थ करें क्योंकि तीर्थ

श्राविका सम्मेलन में स्वीकृत प्रस्ताव—

(१) आचार्य महाराज दादा जिनदत्तमूरिजी के सताब्दी महोत्सव के इस शुभ अवसर पर उपस्थित नारी समुदाय उन्हें हार्दिक श्रद्धाजलि अर्पित करती है।

प्रस्तावक —

जगर सचेती

अनुमोदक —

शांति जैन

(२) आज का यह सम्मेलन सवानुमति से नियम करता है कि मुयावरण (पदा) जननत्र मुत्रव भारतीय साक्षर सृष्टि में और समाज की दृष्टि में नारी के लिये एक महान् मूल्य है। इस अशिष्टता मूलक प्रथा का निवारण तो २५ वर्ष पूर्व ही हो जाना चाहिए था। मगर अब भी जागत नारी समाज आजमे स्वयं ता पदों का त्याग करे ही और यह प्रतिज्ञा करे कि कम से कम २५-२५ नारियों का इस सामाजिक रुढ़ि के मुकाबल कर स्वास्थ्य लाभ के द्वारा जीवन यापन करने के लिये प्रयत्नशील बनावें।

प्रस्तावक—

कुमुम देवी बोधरा

समर्थक —

मिम रोगन मेहता

(३) हमारे समाज की अकामन बहिनें, विशेषकर विधवायें आर्थिक कष्ट के कारण तो गुन पूर्वक जो मक्ती हू एव न अपने अशोभ बच्चा का पालन ही कर पाती हूँ। धन हम अर्थानुमति के लिये करती हूँ कि उनके लिये एक कोष स्थापित कर जदा एकत्रित किया जाय त्रिममें से विधवायों को उचित महायता दी जा सके।

प्रस्तावक —

रोगन मेहता

समर्थक —

कुमुम देवी बोधरा

(४) इस श्राविका सम्मेलन को इस बात का अत्यंत हर्ष है कि हमारे समाज में धन के प्रति अच्छी रुचि है। उनके उद्यम परिय पर सबको श्रद्धा है परन्तु माय ही माय श्राविका समाज को इस सम्मेलन में यह प्रतिज्ञा भी करना चाहिए कि यह धनो देविक जीवन में कम से कम एक पेटे गज स्वाध्याय अर्थात् उतमोगम सद्गुरु का पठन-पाठा श्रवण अवश्य कर। इससे उनके धनो द्वारा को जाने वाली धन त्रिशाखा का महत्त्व जात होगा एव उम प्राप्त होगा। गच्छा धानन्द और कम प्राप्त हुए के माय ही धनो भावी सन्तति को भी गुणाम्य एव सुखानुगामी बना सकेंगी जो राष्ट्र और समाज के लिए अत्यंत उपयोगी काम होगा।

प्रस्तावक—

कुमुम देवी बोधरा

समर्थक —

रोगन मेहता

संवत् १३४० के लगभग में पृथ्वीधर राजाके
 वेठे जांजरा ने उज्जयन्त गिरि के ऊपर १२
 योजन ऊंची सोने रूपेकी ध्वजा चाड़ी। तर्क
 भला सोचना चाहिये कि ४८ अठतालीस को
 स ऊंची ध्वजा कैसे किसके सहारे खड़ी करी
 होगी क्योकि आधकोस ऊंची ध्वजा खड़ी नहीं
 कोई करसकता तो फिर ४८ कोसकी ध्वजा
 कहनी विना विचारे गोलेही गड़ावनेहैं और
 मत प्रदियोंने प्यारी स्त्रीके कहने की तरह
 हांजीही कह छोड़नाहैं परन्तु बुद्धिमान जैसे
 २ उल्कापातों को कैसे मानें, नहींतो बताओ
 कि कौन पुरुष देखआयाहै कि ४८ कोस की
 ध्वजाहैक्योकि अनुमान ६०० वर्षकी बात बता
 तेहो सो इतनी जलदी कही उडतो गई नहीं
 होगी क्योकि तुम २४०० चौबीससौ वर्षके व
 नेइए मन्दिर अबतक खड़े बतातेहो तो फिर

अखिल भारतीय जैन युवक सम्मेलन अजमेर के स्वीकृत प्रस्ताव—

(१) यह सम्मेलन प्रस्ताव स्वीकृत करता है कि जैन युवक परिषद का अखिल भारतीय स्तर पर निर्माण किया जाय ।

प्रस्तावक —

श्री मोहनराज भण्डारी, पत्रकार
प्रार मंत्री—श्री जितदत्तसूरिजी अष्टम
गतादी महात्सव, अजमेर

अनुमोदक —

श्री मतोप चन्द जैन
उप स्वागत मंत्री—श्री जितदत्तसूरिजी
अष्टम गतादी महोत्सव अजमेर

(२) यह सम्मेलन प्रस्ताव स्वीकृत करता है कि धर्म और सभ्यता के प्रति हम युवक का मानम दिना दिन हटता जा रहा है । आज का युवक कल का राष्ट्रीय नागरिक है अतः देश की रक्षा के लिए विचार मूलक शक्ति का सजग प्रयोग करने के लिए स्वाध्याय नितांत आवश्यक है । प्रत्येक युवक को चाहिए कि कम से कम एक घंटा प्रतिदिन उच्च ज्ञान साहित्य का सम्भीरता पूर्ण अध्ययन करे ।

प्रस्तावक —

श्री देवराज राधरा
मंत्री, अखिल भारतीय आनन्दाल सम्मेलन समरगढी

अनुमोदक —

श्री मोतीबाल भडगतिवा

(३) यह सम्मेलन प्रस्ताव स्वीकृत करता है कि प्रत्येक युवक का देश में निरक्षरता निवारण के लिए वर्ष भर में कम से कम १२ व्याख्यान को सागर बनाया जाहिए ।

प्रस्तावक —

श्री सतोप चन्द डोहरा

अनुमोदक —

श्री गुमानमन लूणिया

(४) यह सम्मेलन प्रस्ताव स्वीकृत करता है कि देश में गिरनी हुई प्राथमिक शिक्षा को ध्यान में रखते हुए पारिवारिक सहायता में देहेज-टोका प्रथा का परित्याग कर पर्याप्त राशि बहिष्कार किया जाये ।

प्रस्तावक —

श्री मोहनराज भण्डारी, पत्रकार

अनुमोदक —

श्री जगद्वर्तिह पारस

जैन संस्कृति सम्मेलन

संस्कृति सम्मेलन के प्रति जनता की बड़ी उत्सुकता थी । यह स्वाभाविक भी है । कारण कि वर्तमानक ऐम उद्यमों में संस्कृति जैसा प्राण भुत्ता गा दिया जाता है । संस्कृति का भंग हो जीवन में जलता म्यात पद करने पर जहाँ तक विचार का प्रश्न है इसे समझना तितान्त आवश्यक है । इसी भावना में उत्प्रेरित होकर हम प्राण मानव से लगाकर बुद्धिवादी विचारों एवं मस्तिष्क तत्त्व इस घुटुत्तल में था कि इस सम्मेलन में क्या हानि जा रहा है । टीका समय पर रायम्यान विधान सभा के अध्यक्ष श्री गगनमतादी जीगोय शकस्मान के मन्त्र गुल्ममश्री वाकनापद श्री त्रयतारम्यपत्रा

ठीक दिखाया है वा नहीं॥

से। जेकर पाण्डित पुरुष के लिखनेमें एक
 ऊठ भी लिखा जाय तो सभाके बीचमें पाण्डि
 ताई किधरही को घुसड़ जाती है जैसे कि

आर्य दयानन्द सरस्वती की रचा
 ई.ई. सत्यार्थ प्रकाश नाम पोथीमें जैनके
 बारेमें कई एक ऊठी बातें लिखी थीं तो फिर
 उसको एक जैनी पुरुष ठाकर दासने ब
 हुत तंग किया था तो वह अपने असत्य
 लेखको मान गया था, सो इसलिये पाण्डित पु
 रुष को ग्रन्थ में ऊठ लिखना न चाहिये औ
 र जो आत्माराम संवेगी इनदिनोंमें गुजरा
 तियों का शाहूकारा देखकर मुखपत्ती उ
 तारके गुजरात देशमें पड़ा फिरता है सो उ
 सने जैन तत्वादर्श ग्रन्थमें अनेकही ऊठ
 लिख धरे हैं यदि (जेकर) तुम न मानों तो म

बल मिलता है। और जीवन में रहे आन्तरिक सौंदर्य के उद्दीपन का अपसर मिलता है। सस्कृति किमी भी राष्ट्र की ऐसी मौलिक सम्पत्ति है जिस पर सम्पूर्ण राष्ट्र का वास्तविक जीवन है। सस्कारशील राष्ट्र उन्नति कर सकता है। सस्कारों द्वारा ही राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण होता है। मुझे तो ऐसा लगता है कि मानव जीवन में जहां वही विकास के तत्व विद्यमान है वही सस्कृति पूर्ण आन्तरिक शृंगार किए विद्यमान रहती है। कला के द्वारा साहित्य के द्वारा और संगीत के द्वारा सस्कृति का श्रोत मानव समाज में माननीय वस्तियों का सिंचन करता है।

भारतीय इतिहास में विदित होता है कि यहा धर्म का लेकर ही मानवोच्चा परलवित पुणित हुआ है। कला भी धर्म का सहारा लेकर ही फली फूती है। एमी अवस्था में विना धर्म के भला मस्कृति कमे जीवित रह सकती है। अत इचेतना का वास्तविक परिक्षण जीवन की वाह्य क्रियाओं पर निभर करता है। सस्कृति आमा है तो धर्म उमका एमा आवरण या शरीर है जिसके द्वारा चेतय-शील तत्व का अनुभव प्रत्यक्ष प्राणी को होता है। सस्कृति व्यक्तिगत वस्तु हावर भी समाज मलक प्रवृत्तियों में ही वह फनती फनती है। भारतीय सस्कृति का अनुभव यह है कि अहिंसा-सयम और, तप में ही वह अभिव्यक्त हुई है। सचमुच जीवन में समत्व की साधना द्वारा ही तप का विकास होता है। इच्छा शनितया का ह्याम हाता है और जीवन मयम की आर प्रवृत्त हाता है। इन तीनों के समन्वय को यदि धर्म कहा जाय या मानरना की आधारगिला कहा जाय तो प्रत्युक्ति न होगी, इनका मे सस्कृति का मूल तत्व माता है। जन परम्परा में निम्न पद्य में सस्कृति की सुंदर सजीव और आकषक व्याख्या की गई है।

धम्मो मगल मुचिण्ठम् अहिंसा सजमो तवो । (दावकालिक सूत्र)

जहा सयम नहीं है वहा जीवन ही नहीं है। रनि रावू न अपन सौंदर्य बाध नामक बंगला निबन्ध में सूचित किया है कि विश्व के सौंदर्य का वास्तविक अनुभव करने के लिए जीवन में सयम चाहिए। मयम ही अद्वितीय सौंदर्य का अनुभव कर सकता है। सुखाभिलाषी प्रत्येक व्यक्ति के लिए जिम प्रकार सस्कारशील होना आवश्यक है उसी प्रकार सयम भी जीवन में उद्दीपनी होना आवश्यक है। जीवन की विपमताओं को दूर कर समत्व की साधना में अपने आपको उप्ररित कराती सयम है।

सयम जीवन का स्थितिशील तत्व है पर उगमें गति है जम नि नूय शिम्ने में गतिशील है पर स्थितिशील है। नृत्य के द्वारा भी सस्कृति का अनुभव होता है क्यकि इस हमारें यहा के समा-लोचको ने दृश्य वाच्य का एव अग माता है। इसमें भी हमारी सस्कृति चमकती है। मुझे बचपन से ही कुछ नृत्य में विद्यमान रचि रही है। मुख्य मन्त्री के आगमन पर या तब भी गत्य समारोह में सम्मिलित होता ता म रम में इतना तमय हो जाता था कि अपनी मान मर्यादा का त्याग कर नचया क साथ सम्मिलित होकर उनका सहयोगी बन जाया करता था।

मुझे धर्म प्राप्तिका अधिक समय नहीं लेना है। क्योंकि हजारों वर्षों तक सस्कृति की जो मरिता बन जीवन में बही और यह रही है भला कुछ क्षणों में उसकी व्याख्या द्वारा आपने ममश रचना

हमने ऊठ लिखा है अथवा कहे कि हम
भूल गये ॥

उत्तरपत्नी जो भूल गये तो फिर छापे का
खोट हूर कराओ कोंकि तुम्हारे रागी, तुम्हा
रे पूर्वक कथन को सत्यमान बैठेंगे ॥ न
ही तो सूत्रको ऊठकहो ॥ और हमजो पीछे औसा लि
ख आये हैं कि आत्माराम संवेगी गुजरात देश
में पड़ा फिरता है सो आप इस बातपै गुस्सा न क
रें कोंकि तुमने जैनतत्वादर्श ग्रन्थके पत्र
५५ श्वेपर लिखा है कि वसन्त राय और राम
वरखश डूंडिया पञ्जाबमें पड़ा फिरता है
सो तुम्हारे कहने पर तुमको बराबर का
जवाब दिया है नहीं तो कुछ जरूरत नहीं ॥
उत्तरपत्नी इस ग्रन्थकर्तासे हम एक और
बात पूछते हैं कि जो आपने जैनतत्वादर्श
ग्रन्थ रचा है उसमें जो शास्त्रोंके वस्तुनिव

वज्ञानिश् ईश्वर के सिद्धान्त से एक रडियो बनाना है। तो कालिदास की जो शकुन्तला पुस्तक है तो वे वैज्ञानिक थे। उन्होंने एक बात पर ईश्वर के सिद्धान्त की चर्चा की है कि वह एक पदार्थ है और विश्वव्यापी है। तो असंभव नहीं कि वे वैज्ञानिक नहीं थे। मेरा अभिप्राय यह है कि हमारी संस्कृति प्राचीन होते हुए भी केवल आध्यात्मिक नहीं थी किन्तु भौतिक भी थी। आर्थिक भी थी और इसी तरह चांग सिद्धान्त हमारे सामने उपस्थित थे। किन्तु जब हम अपनी संस्कृति की पश्चिमी संस्कृति से तुलना करते हैं तो हमारी आज कल भारतीय संस्कृति आर्थिक है और पश्चिमी भौतिक है। हमने किसी कारण से भौतिक उन्नति, प्रगति को छोड़कर आध्यात्मिक उन्नति की यह भी आवश्यक था। किन्तु किसी कारण से हमने वैज्ञानिक और भौतिक उन्नति नहीं की, यह उन्नति पश्चिमी देशों में भी दो सौ वर्षों में थी। किन्तु विश्व एक छोटा सा कुटुम्ब बन गया इसलिए हम केवल संस्कृति का नाम लेते हैं तो विश्व की संस्कृति का हमारे मस्तिष्क में विचार आता है कि जब तक विश्व की संस्कृति एक नहीं होगी तब तक शांति नहीं होगी। ता विश्व संस्कृति में भौतिक उन्नति और आध्यात्मिक उन्नति इन दोनों का मिश्रण होगा तभी शांति होगी। क्योंकि पश्चिम में भौतिक उन्नति होते हुए नैतिकता का आध्यात्मिक दृष्टिकोण से क्षय भी आया है। यदि वास्तव में पश्चिम में संस्कृति है तो इस प्रकार अणुबम और अय विध्वंसक शस्त्रों से डराना नहीं चाहिए। जो पश्चिमी देशों में अणुबम और उद्‌जन बमों को हीड चल रही है ता वास्तव में वह उन्नति नहीं है।

एक विद्वान ने लिखा है कि अमेरिका के अदर कुछ ट्रांसपोर्ट कंपनियों ने सम्मेलन किया और विचार किया कि हम कुछ ऐसी परिस्थिति बनाएँ कि जिसे जितनी कम दुर्घटनाएँ होंगी तो लोग हमारा अधिक का लेंगे। ता विचार किया कि ऐसा करना चाहिए। जिन उद्‌होने बप का एन्टीमेट लगाया कि हजारों डालर लगते हैं और ऐसी व्यवस्था करने में २५ हजार डालर इस खर्च से अधिक देने पड़ेंगे। जा मर जाते हैं उनमें २५ हजार डालर अधिक लगते हैं तो विचार स्थगित कर दिया। यह है मानवता। यहाँ मानवता की कमी है। ता पश्चिमी संस्कृति में आध्यात्मिकता बिना अधरा है।

जन धर्म (Matter and Soul) पदार्थ और आत्मा को तथ्य माना गया है। जन संस्कृति दोनों का मिश्रण है। जन धर्म वास्तविक रूप में भारतीय संस्कृति का प्रतिबिम्ब है। इसमें जन दर्शन का उद्‌हन बड़ा स्थान है। और जन दर्शन में विशेष कर जो पांच महाव्रत हैं इनमें दो इतने आवश्यक हैं विश्व संस्कृति के विकास के लिए कि इनके बिना शांति नहीं हो सकती। यदि हम अणुव्रत के रूप में भी अहिंसा और अपरिग्रह का जीवन में उतार सकते हैं और अपना ले इन दोनों को मूढ़म रूप में और लागू कम से कम संपत्ति रखें तो कोई बात नहीं कि हम भौतिक साम्यवाद नहीं जा सकते।

मुनि श्री जिनविजयजी का भाषण

राजस्थान पुरातत्व मंदिर के प्रधान एवं भारतीय साहित्य संस्कृति और कला के समर्थ समालोचक मुनि श्री जिनविजयजी ने अत्यन्त भीमिन पर महत्पूर्ण विचार व्यक्त करते हुए कहा —

“संस्कृति बड़ी गम्भीर वस्तु है। सामूहिक चिंतन के लिए संस्कृति मूलक जीवन अपेक्षित है। आज जनता के मुत्र मडल में संस्कृति चर्चा को रस्तु बन रही है। वस्तुतः वह जीवन में उतरा

मूर्ति की तरह फल फूल आदि सामग्री से पूजा और नाचना गाना बजाना इत्यादि कथन मुख्य रक्वे हैं सो हम यहां तर्क करते हैं

कि ऐसी पूजा तो सरागी देवों की है यथा सीतारामजीकी मूर्ति की तथा राधाकृष्णजीकी मूर्ति की तथा शिवशक्ति की मूर्ति आदिकी, सो ये सरागी देव हैं क्योकि इनके काम भोगादि सामग्री स्त्री आदिक प्रत्यक्ष संयुक्त है सो इनकी तो फूल, फल, राग, रंग, होम, भोग, नाच, नृत्य रूप भक्ति अर्थात् पूजा, संभव है यानि मुनासिब है सो उन्हीके शास्त्रानुसार और उन्हीके मत व मूर्जिव योग्य है क्योकि उनके शास्त्रोंमें उनके देवोंका स्वरूप सराग, सकाम, सक्रोध, प्रकट होता है जैसे कि गोपी बलभ, शङ्ख चक्र गदा धारी, धनुर्धारी, राक्षस रिपु मर्दन इत्यादि ॥

संगीत साहित्य और कला में हमारी सस्कृति के स्वर गूजते हैं जो हृत्तत्री के तारों को भङ्कृत कर नव निर्माण की ओर सकेत करते हैं। यदि हमें जीवन को गतिशील बनाना है तो सस्कृति की आवश्यकता है। उसे विकास के पद पर बैठाना है तो हमें सम्यता की आवश्यकता है। यद्यपि आज-कल बहुधा सस्कृति और सम्यता का व्यवहार एक ही अर्थ में हो चला है परन्तु दोनों का जो अन्तर है वह स्पष्ट है। सस्कृति गतिशील तत्व है तो सम्यता स्थितिशील। सस्कृति आत्मा है तो कला उसका कलेवर। इतना म अग्रवश्य कहना चाहूँगा कि सस्कृति की आत्मा की वास्तविक पहिचान उसे जीवन में स्थान देने में है, न कि बौद्धिक वैभव तक ही सीमित रखने में।

सस्कृति के नाम पर हमें विवाद में न पडना चाहिए, जब कि आज विवादपूर्ण ऐसी स्थिति खड़ी हो गई है कि उसे हम जैन, बौद्ध और वैदिक आदि शब्दों से अभिशिष्ट करने में नहीं हिचकते।

अन्त में मुझे कहना चाहिए कि आचार्य श्री जिनदत्तसूरिजी महाराज के प्रस्तुत अष्टम गताब्दा स्वर्गारोहण महोत्सव का आज से चार वष पूर्व सब प्रथम कल्पना स्थानीय सेठ रामलालजी लूणिया के भस्तिष्क में आई और जिस समय मेरे परम पूज्य गुरुदेव उपाध्याय मुनि श्री मुखसागरजी महाराज को उन्होंने पत्र लिखा था तब मुझे स्वप्न में भी ख्याल नहीं था कि उनका यह विचार इस प्रकार भूत रूप लेगा और आप हम सबको इस पवित्र अवसर का लाभ मिलेगा। इस उत्सव को सफल बनाने के लिए भारतीय शासन के सचिव मंत्री श्री बाबू जगजीवनरामजी, राजस्थान शासन के भूतपूर्व मुख्य मंत्री श्री जयनरायणजी व्यास, राजस्थान शासन के पुनर्वास मंत्री श्री अमृतलालजी यादव, राजस्थान शासन के वित्त मंत्री श्री वृजसुन्दरजी शर्मा, अजमेर शासन के शिक्षा मंत्री श्री बृजमोहनलालजी शर्मा, एव राजस्थान विधान सभा के अध्यक्ष एव साहित्य और सस्कृति के परम अनुरागी श्री नरोत्तमलालजी जोशी, मुनि श्री जिनविजयजी के प्रति अत करण से कृतज्ञता प्रकट करता हूँ जिन्होंने अनेक राजनतिक व्यस्य कायक्रमों को छोड़कर इस सास्कृतिक उत्सव में सम्मिलित होकर अपने मननीय विचारों द्वारा जनता को लाभान्वित किया।

इस उत्सव की आन्तरिक सफलता में एव अधिक उज्वल बनाने में सर्वाधिक सहायक के रूप में अजमेर राज्य के मुख्य मंत्री श्री हरिभाऊजी उपाध्याय को नहीं भूल सकता जो राजनतिक क्षेत्र में रहकर भी माहृतियक चेतनाशील ज्योति को गुरक्षित रखे हुए हूँ, अपनी प्रत्येक प्रकार की सहायता द्वारा स्वागत समिति को निस्वार्थभाव से उपबृत्त किया है। श्रीमान् हरिभाऊजी को धन्यवाद देकर या उनके प्रति आभार प्रकट कर उनके महत्व को कम करना नहीं चाहता।

मनि कातिसागरजी के उपसहार्तिक वचन के पश्चात् शताब्दी महोत्सव के अध्यक्ष श्रीमान् सेठ मेहतावचदजी गोलेछा ने कहा गुरुदेव की स्मृति में सपन्न हाने वाले श्म ऐनिहासिक महोत्सव के अतगत दिनांक २०, २१ व २२ मई को कई सम्मेलन सफलता पूर्वक सम्पन्न हुये। इस अवसर पर हजारों नर नारी गुरुदेव के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करने के लिये देग के दोनों बौने से उपस्थित हुये, उन सबके हृदय में गुरुदेव के प्रति कितनी भक्ति व्याप्त है उसका अनुमान इसी बात से लगाया

हो यह नाम निक्षेपा ॥ (२) जो काष्ठ तृण
पाषाण कौड़ी आदि वस्तुको थाप लेना
कि यह मेरा अमुक पदार्थ है तो स्थाप
ना निक्षेपा ॥ (३) जो गुण रूप कार्य हो
नेका उत्पादानादि कर्मा होय सो द्रव्य
निक्षेपा ॥ (४) जो गुण दायक लाभदाक
कार्य रूप होय सो भाव निक्षेपा कहलाता है

इति ॥ अथ दृष्टान्त सहित

खुलासा लिखते हैं। यथा (१) एक पुरुष
का नाम राजा है उसमें राजाका नाम नि
क्षेपा पाईए परन्तु वह राजा नहीं कों
कि उसपै मुकद्दमा लेके कोईभी आता न
ही (२) दूसरे काठ पाषाण वा चित्राम
का राजा थापलिया जावे जैसे कि यह र
णजीतसिंह राजा है तथा राजे की मूर्ति है
सो उसमें राजा का स्थापना निक्षेपा पाईए ॥

के लिए अनुकरणीय है। इस तरणावस्था में अजमेर जैन श्वेताम्बर मध के प्रधान पद पर अधिष्ठित होकर आप जा उत्तरदायित्व पूरा काय कर रहे हैं, वह आपकी महानता का चोख है।

अजमेर में सयोजित श्री जिनदत्तसूरि अष्टम निर्वाण शताब्दी महोत्सव के स्वागताध्यक्ष पद को सुशोभित कर इस महानतर काय को जिस योग्यता और कमठता के साथ सफल बनाया है वह आपकी कर्तव्यनिष्ठा का सर्वोपरि उदाहरण है। इस प्रकार अनेक अनेक सद्गुणा से आर्जित होकर हम आपका हार्दिक अभिनन्दन करते हैं।

हम हैं आपके ही

अखिल भारतवर्षीय गुरुभक्त धर्मबन्धु गण

सयोजक का अभिनन्दनपत्र

माननीय धर्म प्रेमी, समाज हितैषी, सरल हृदय श्रीपुत्र रामलालजी लूणिया महोदय अजमेर निवासी की सेवा में सादर समर्पित

अभिनन्दन पत्रम्

सादरणीय स्वधर्मो बन्धु !

आपकी समाज सेवास्यो की ज्वलन्त भावनास्यो को देखते हुए हमारा हृदय अत्यन्त पुलकित होता है। आपकी मिलनसारिता, मिष्टभाषण, निश्छल व्यवहार और कर्तव्यनिष्ठा पर हमें अत्यन्त गौरव है।

अद्वेय महानुभाव !

आप अजमेर समाज के व्यवसायिक क्षेत्र में अपना प्रतिष्ठित स्थान रखते हैं। इस समय आप सराफान व्यापारिक समिति लिमिटेड के अध्यक्ष हैं और योग्यतापूर्वक इस पद का सञ्चालन कर रहे हैं। यहाँ की सामाजिक सस्या ओसवान जैन हार्डस्कूल के कोषाध्यक्ष रह चुके हैं और उपाध्यक्ष पद को भी सुशोभित कर चुके हैं। समाज और धर्म के प्रत्येक कार्य में आपका तन मन और धन से सक्रिय सहयोग रहता है।

धर्मप्रिय !

श्री जिनदत्तसूरि अष्टम निर्वाण शताब्दी महोत्सव को महत्वपूर्ण काम का प्रारम्भ में अन्त तक अपने घोर परिश्रम से पूरणरूपेण सफल बनाना आपकी सच्ची लगन, अत्यय गुरुभक्ति और कर्तव्यनिष्ठा का ही परिणाम है। इस प्रकार आपके ओव अनेक सद्गुणा से आर्जित होकर अत्यन्त प्रेम के साथ हम आपका हार्दिक अभिनन्दन करते हैं।

हम हैं आपके ही

अखिल भारतवर्षीय गुरुभक्त धर्मबन्धु गण

मानते हो तो भगवान का नाम क्यों लेते हो नाम लेने से क्या होगा यह भी तो नाम निक्षेपा ही है ॥

तो हम उत्तर देंगे कि वाहजी वाह ॥ तुमने जैसे पण्डित होकर नाम निक्षेपा और नाम लेने का भेद भी नहीं जाना क्योंकि नाम लेना तो भाव गुणों का स्मरण है जैसे कि राजा वड़ा दयालु (कृपालु) है और वड़ा न्याय कारी है इत्यादि। यह गुणों की भावरूप स्तुति का करता है किन्ना नाम निक्षेपा है? अपितु भाव गुण है नाम निक्षेपा नहीं, नाम निक्षेपा तो वह होता है कि जो पूर्वक सुचित अचित वस्तु का नाम रक्वा जाय इति हेम-

और जो तुम जैसे कहोगे कि नाचना, कूदना, गाना, वजाना, और साधु को टोल ठमके से शहर में प्रवेश कराना यह जैन धर्म

* दान दाताओं की सूची *

श्री १००८ जिनदत्तसूरिजी महाराज का निर्वाणस्थल अजमेर नगर में
जिर्णोद्धारनिमित्त तथा अष्टम शताब्दि महोत्सव मनाने के लिये
निम्नलिखित महानुभावों से सहायतार्थ प्राप्त हुए

अजमेर से प्राप्त रुपये ५७८४॥॥)

- २००२) श्रीमान् रामलालजी लुणिया
६००) श्री धमपत्नी श्री उदयमलजी भडगत्या
३७६) श्रीमान गोपीचन्दजी घाडीवाल
३०१) ,, रतनचन्दजी जतनचन्दजी सचेती
२२३) ,, धुकलचन्दजी रामदयालजी भडारी
१५१) ,, श्रीवधमान स्या० जैन श्रावक सध
१५१) ,, सेठ ब्रदस
१३२) ,, हरीशचन्द्रजी घाडीवाल
१०१) ,, मोतीलालजी मंगलचन्दजी भडारी
१०१) ,, सूरजवक्षजी भडारी
१०१) ,, खाराजजी महता
५६) ,, जीतमलजी महता
५३) ,, रतनचन्दजी खीवीसरा
५२) ,, सुगर्नचन्दजी घनराजजी लणिया
५१) ,, हरकचन्दजी गोलेछा
५१) ,, जवाहरमलजी लुणिया
५१) ,, मांगीलालजी बोठारी
५१) ,, चौथमलजी मिथी
५१) ,, गुमानमलजी महता
५१) ,, मोहनलालजी वाठारी
५१) ,, गुमानमलजी मेहता
५०) ,, धनरूपमलजी शाह
३३) ,, विमलचन्दजी मुणोत
३३) ,, मुलचन्दजी सीयाल

- ३३) श्रीमान नेमीचन्दजी ग्वाव्या
३१) ,, वस्तीमलजी करणावट
३१) ,, उमरावमलजी छाजेड
२६) ,, केसरीमलजी भडावत
२५) सेठाणीजी प्रभावती कवरजी
२५) श्रीमान् जीतमलजी लुणिया
२२) ,, इन्दरमलजी वाठिया
२१) ,, गुमानमलजी महता
२१) ,, मांगीलालजी पारख
२१) ,, नथमलजी बाबूलालजी पोखवाल
२१) ,, चाँदमलजी सीपाणी
२१) ,, सीरैमलजी सुराणा
२१) श्री रामारेस्टोरेट
२०) श्रीमान् चौथमलजी दलाल
१६) ,, टपराजजी महता
१८॥॥) श्री सध का प्राया सवारी म भेंट
१५) श्रीमान् पन्नालालजी धर्मचन्दजी गोठी
११) ,, सन्तोपचन्दजी बोहरा
११) ,, उमरावमलजी जाखोरी
११) ,, वीजयराजजी बोहरा
११) ,, लिनमीचन्दजी ललवाणी
११) ,, मोतीलालजी महता
११) ,, रिधकरणजी सम्पतराजजी बडूडा
११) ,, किस्तुरमलजी भडगत्या
११) ,, मांगीलालजी बुचेरा
११) ,, जेठमलजी फनेहचन्दजी बरडिया

श्री ५ महावीर स्वामीजी के पाट धारी जोधे, सो उनके तो आगमन में अतिशय रूप म हिमा किसी देवने तथा आवकोंने करी ही नही थी क्योंकि सूत्रों में ठाम २ औसा पाठ है कि सुधर्म स्वामीजी असुक नगर में असुक बागमें "पंचसै समरा सहिसं परिबु डे" अर्थात् पधारे अहापडिरुव उगहं गि सह तव संयमेणं अण्याणं भावे माणे विह रई परिसा निगया धम्म कहियो परिषा प डिगया" इत्यादि परन्तु औसाभाव कही न ही है कि आवकोंने बाजे गाजे से लाकर बा ग आदिक में उतारे, तस्मात् कारणात् तुम्हाय गाजे बाजे से नगर में आना और आवकोंको लाना, अयुक्त है क्योंकि जब औसे महात्मा पु रुष जो सातात् जिन नही परजिन के समा नथे उनके आगमनमें तो गाजे बाजे से

- ७) ,, आसकरणजी चम्पानालजी
७) ,, फनहलालजी लुणिया
५) ,, पनालालजी कोचर

३२७) योग

टाटानगर से २०१) प्राप्त

- ५१) श्रीमान् अमरचन्द वनयालालजी
लुंकड
५१) ,, कवरलालजी मदनच दजी
गोलेछा
२५) ,, लक्ष्मीलालजी दोहरा
२५) ,, मोतीलालजी गुलाबचदजी
तलवाणी
१३) ,, प्रकाशचदजी सा०
७) ,, मेघराजजी जमनालालजी जैन
५) ,, अणदमलजी वैद
५) ,, दीपचदजी वनेचदजी वैद
५) ,, सिवलानजी नवलसा
५) ,, चम्पालालजी वैद
५) ,, जेठमलजी दोहरा
२) ,, मानीरामजी वैद
१) ,, ताराचदजी गोतेछा
१) ,, तिलोत्तमचदजी तलवाणी

२०१) योग

जैतारण से ११) प्राप्त

- ४) श्रीमान् भवरलालजी सेठ
२) ,, श्रीलानजी मुया
२) ,, चादमलजी मुया
१) ,, रतनलानजी कोठारी
१) ,, लक्ष्मीचन्दजी सा०
१) ,, तेजमलजी सा०

११) योग

सोजत से ७) प्राप्त

- ७) श्रीमान् गणेशमलजी जवरीलालजी
७) योग

खारची से १०१) प्राप्त

- १०१) श्रीमती सोभागकुमारी जी धमपत्नी
श्रीमान् सरदारमलजी खीवसरा
१०१) योग

पाली से १६) प्राप्त

- ५) श्रीमान् वस्तीमल मोहनलालजी
५) ,, सोहनराजजी भाडावत
४) ,, ज्ञानचन्दजी लूनिया
२) ,, चुन्नीलालजी जैन
२) ,, सोहनराजजी लोढा
१) ,, वस्तीमलजी धाडीवाल

१६) योग

कलकत्ता से ८३०९) प्राप्त

- ५०१) श्रीमान परीचेस्ट श्री श्रीचद
गम्भीरचदजी घोषरा
५०१) ,, श्री केसरीया एण्ड कम्पनी
३५१) ,, किन्तुरचदजी विनयच दजी
मोघा
२५१) ,, विनयचदजी मोतीचदजी भूरा
२५१) ,, कमलसिंहजी दुधडीया
२५१) ,, नाहटा ब्रदस
२५१) ,, रायतमलजी भेरुदानजी सुराण
२५१) ,, कलुमलजी लालचन्दजी गेठ
२५१) ,, पुरवचन्दजी धनराजजी
दीपचन्दजी डगा
२०१) ,, प्यारेलालजी बदलीया
२०१) ,, छोटेलालजी सुराणा

उत्तर पत्नी ॥

यह जैनकी प्रभावना नहीं है क्योंकि नाच
ना, कूदना टोल ठमाका तो जो कोई ऊंच
नीच पुरुष दाम खर्चगा सो वही करलेगा
और जैनी कोई स्वर्ग का वाजातो लेही नहीं
आते हैं जो इनियां को आश्चर्य हो कि देखो
जैन धर्म बड़ा अद्भुत है जो स्वर्ग से वाजे
उतरते हैं सो जो ऐसे होय तो मला धर्म की
महिमा अर्थात् प्रभावना होय परन्तु ऐसे
तो है नहीं ये तो वेही चर्मके वाजे हैं और
वेही चाण्डाल (चूड़े) वजाने वाले हैं जो
हर एक गृहस्थी के व्याह शादियों में व
जाया करते हैं सो कहो ऐसे २ उम्भ से धर्म
की प्रभावना क्या हुई धर्म की प्रभावना तो
त्याग, वैराग्य, ब्रह्मचर्य, सत्य, और संतोष,
के करने से और दया दान के देने से होती है

- १५) श्रीमान् सुरेशचन्द्रजी राजमलजी कोठारी
 १५) ,, महना बागनाल बालीदान भाई
 १५) ,, भोतीलालजी मगनलालजीरावेचा
 १५) ,, पारस टो० बम्पनी
 ११) ,, सम्भोरीसिंहजा बछावन
 ११) श्री गृहस्पतिहिन ह० रनिदानजी भगाना
 ११) श्रीमान् महद्रजुमारजी जवेरो
 ११) ,, गोमचडभाई जीवराजभाई
 ११) ,, भीमनलान मोहानचदजी महता
 ११) ,, समुनलानजी मगनलालजी
 ११) ,, गानानालजी भीमनलालजी
 ११) ,, दान्नीनलजी शकुनलजी
 ११) ,, रतीलान शम्भानान भगाना
 ११) ,, जयन्तीलान नमोचदजी
 ११) ,, सुरेशभाई गाधी
 ११) ,, वेणवलालजी विभुवनदासजी
 ११) ,, पन्नेचदजी सलुभाई
 ११) ,, भयरनालजी मालु
 ११) ,, वेणवलान मूरजमन भाई गाधी
 ११) ,, दान्नीनलजी पुनचदजी
 ११) ,, घुडीनल हेमराजजी सुणिमा
 ११) ,, राजमलजी जवरीनलजी नाहटा
 ११) ,, बानीदानजी चेलजी
 ११) ,, ताराचदजी धद
 ११) ,, प्रमराजजी जवरीनलजी
 ११) ,, टागाभाई बानीदानभाई
 ११) ,, हीरानानजी मूरजमनजी
 ११) ,, विनोबादाजी मूमणनजी मूराना
 ११) ,, चापमलजी मुनीरा
 ११) ,, सत्रागणिकजी पार
 ५) ,, जोशचरमलजी वि गणी
 ४) ,, भीमनलजी गराजी मोरग
 ०) ,, प्यारेनलजी मोपडा
 ०) ,, पारानामजी मोपडा

५१) श्रीमान् जीतेन्द्रसिंहजी बछावन
 ६३०६१) योग

फच्छभुज से ५००) प्राप्त

५००) श्री खलराजसिंह, बच्छभुज

५००) योग

अहमदाबाद से ४१) प्राप्त

४१) श्रीमान् तदुनानजी मावचन्द्रजी
 वीरिया

४१) योग

कोटा से ५३३) प्राप्त

५०१) श्री जन स्वताम्बर श्रीराज

२२) श्रीमान् प्रसरजजी पारण

२) ,, सोभागमनजी महता

२) ,, रेखराजजी चारडिया

५) ,, दानपणिकजी टो०

१) श्रीमनी मोहन बाई

५३३) योग

रामगज मण्डो से ११) प्राप्त

११) श्रीमान् बहैपालजी इदममनी

११) योग

दाद से १६२) प्राप्त

१४१) श्री जेज संघ टा

११) श्रीमान् मनेगदासजी पारण

योग

६३३) श्री से २७) प्राप्त

१५) रामगजजी छात्र

फल से पूजते हैं ॥

और एक बड़ा आश्चर्य यह है कि सिद्धों के जैनमें अरूपी कहा है सो उनकी रक्तवर्णी (लाल रंग) की मूर्ति बनाकर सिद्ध चक्र के नाम से पूजते हैं ॥

और इनका धर्म भी जैन से अमिलित (पृथक्) है क्योंकि जैनमें दया धर्म प्रधान है और यह पूर्वक हिंसा में धर्म कहते हैं

और जैनमें मुख मूँदके बोलना

और निरवद्य बोलना कहा है और ये मुख खोलकर बोलना प्रधान रखते हैं क्योंकि इन्होंने फकीरी लेते समय तो मुख बांधाया फिर लोगों के वचन ऊवचन के न सहने से खोल डाला अब औरों से मुख खलाकर बड़ी खुशी उजारते हैं ॥ परन्तु ऐसे नहीं समझते हैं कि मुख तो

- ३१) श्रीमान् उमरावमलजी जन
 ३१) ,, चहुलालजी वठाराजजी
 ३१) ,, बाजामोनकी एंड मन्म
 ३१) ,, वालीवाला स्टोर
 ३१) ,, नानजी भाई धारजी
 ३१) ,, मोहनलाल हुनीचन्द
 ३१) ,, भीखमचन्दजी चीमाराजी
 २५) ,, मरदारमलजी बोठारी
 २१) ,, मोतीलालजी पुरसोतमदासजी
 २१) ,, आगाराम भाई गोरघनदाम
 १५) ,, मंगलदाग मोहनलाल
 १५) ,, विशनाजी फोजमनजी
 ११) ,, दन्तोपचन्दजी किसनाजी
 ११) ,, मूलच दजी गोदाजी
 ११) ,, अमरमलजी हजारीमनजी
 ११) ,, पुनराजजी पृथ्वीराजजी
 ११) ,, हजारीमनजी प्रेमसिंहजी

१०८०१) योग

भवानी मण्डो से १०१) प्राप्त

१०१) श्रीमान् माणवचंदजी नरसीचंदजी लोडा

१०१) योग

हैदराबाद (वक्षिण) से १६६०) प्राप्त

- २४१) श्रीमान् मरदारमलजी मुगनमनजी मुनिवा
 २५१) ,, गणेशमनजी श्याममलजी
 २५१) ,, जागवर्मलजी मोतीलालजी बोठारी
 २५१) ,, हीराचंदजी पूनमचंदजी छन्नाणी
 २५१) ,, कपूरचंदजी श्रीमान्
 १०१) श्री मुया एण्ड कम्पना
 १०१) श्रीमान् गाकनचंदजी राजचंदजी
 ४१) ,, शोपचंदजी बेमरोचंदजी
 ५१) ,, ममरमनजी कल्याणचंदजी
 ५१) ,, इन्दरमलजी सुधिया

५०) श्रीमान् मेघराजजी कोचर

१६६०) योग

सिकन्दराबाद से २७६) प्राप्त

२०१) श्रीमान् मेघराजजी गोलेछा

७५) ,, पंमराजजी गाढमनजी

२७६) योग

छबडा से ६५) प्राप्त

२५) श्रीमान् बेमरोच दजी मालवीचन्दजी

२४) ,, बेमरोचन्दजी मागचंदजी

२१) ,, राजमनजी तेजमनजी गानेछा

१७) ,, चि नामगदागजा कहेवालालजी

५) ,, कहेवालानजी प्रनामचंदजी

२) ,, रोजचन्दजी जोन्दाणी

६५) योग

बडोदिया से ५) प्राप्त

५) श्रीमान् प्रेमचंदजी मोगवी

५) योग

छीपा बडोद से १००) प्राप्त

१००) श्रीमान् बेमरोचंदजी दानमलजी मीगव

१००) योग

कागजनगर से ७) प्राप्त

७) श्रीमान् पयानानजी मोगवी

७) योग

पारोली से ११) प्राप्त

११) श्रीमान् कल्याणमनजी नरसी पारोली

११) योग

मुख बांधनी समजो क्योंकि उसका नामही
 मुखवस्त्रिका है परन्तु तुम वताओ कि हाथ
 वस्त्रिका कहाँ चली है ? अरे ! भाई ! तुमने तो
 अपनी तर्फ से मुह खोलने के हठमें वज्रते
 रे सूत्रोंमें से अर्थ का अनर्थ करके लिखा
 है जैसे मुखपत्नी चरचा, पोथी चूटे रायजी
 की रची हुई में पृष्ठ १०२ वीं पर लिखा है कि उ
 त्तराध्ययन अध्ययन १२ वां गाथा दठी "हर
 केशीवल साधुको ब्राह्मण कहते भये कि
 तेरे होठ मोटे हैं तेरे दान्त बड़े हैं इत्यादि
 परन्तु सूत्रमें देखते हैं तो यह अर्थ स्वप्ना
 नर्गत्त भी नहीं है ॥

तो सूत्र यह है " कयरे आग छद्द दित्त रूवे
 काले विकरालेय फुकनासे उम चेलण प
 सुं पिसाय भरण संकर दूसंपरि हरिय कंठे
 अर्थ । कौन है न आवदा चला जादैत्य

- ८१) श्रीमती सीतादेवी एच० गह
 ४१) श्रीमान् पारममलजी गह
 ४१) ,, धामवरणजी प्रतापान्दजी
 ४१) ,, गुलाबान्दजी मितापान्दजी
 ४१) ,, जीवतरामजी ताराचन्दजी
 ४१) ,, बीमराजजी पतेह्वान्दजी
 ४१) ,, गिवराजजी भन्मान्दजी
 ८१) ,, मुलचन्दजी देवीचन्दजी
 ४१) ,, रानन्दजी वपूरचन्दजी
 ४१) ,, गरदारमनजी वेसरीमनजी
 ४१) ,, गरदारमलजी संहमनजी
 ४१) ,, मान्पजी लिंगमोचन्दजी
 ४१) ,, मोतीजी नाराचन्दजी पोरवान
 ४१) ,, हजारीमलजी जीवराजजी
 ४१) ,, हजारीमलजी पुगराजजी
 ४१) ,, जगन्पजी घनेचन्दजी
 ४१) ,, बौचन्दजी फौजमलजी
 ४१) ,, जेठमलजी सुगराजजी
 ४१) ,, डी पुगराजजी गोपेछा
 ४१) ,, पुनाजी सुगलजी
 ३१) ,, मामीलानजी बगीलानजी
 ३१) ,, घमोलचण्णजी गलडा
 ३१) ,, बोरदीचन्दजी सामान्दजी
 ३१) ,, गिवणामनजी समधन्दजी
 २५) ,, गेमीचन्दी मानचन्दी
 २५) ,, गाराचन्दी चण्णराजजी
 २५) ,, मातीचन्दी गिवराजजी
 २१) ,, नरवणचन्दी चारडिया
 २१) ,, नरवणचन्दी गिम्नूचन्दी
 २१) ,, मलामनन्दी जगन्मनन्दी
 २१) ,, गिणाराजजी ह्मीमन्दी
 २१) ,, उमाजी लक्ष्मणचन्दी
 २१) ,, वन्दाचन्दी मन्मलान्दी
 २१) ,, गीवराजजी चोरडिया
 -१) ,, मांमोचन्दी मन्मली

- २१) श्रीमान् हिन्दुजी त्रैवीचन्दजी
 २१) ,, मामीलानजी ना व०
 २१) ,, वेवचन्दी गटाह
 २१) ,, बगरीमलजी गाहनजी
 १५) ,, मेघराजजी राणूनामजी
 १५) ,, फौजमलजी रोखदामजी
 १५) ,, गुलाबचन्दी भीतापचन्दी
 ११) ,, वे० ह्यराजजी बोयरा
 १५) ,, गुलाबचन्दी जुगराजजी
 ११) ,, एक० सम्पत् एटनी
 ११) ,, गुलाबचन्दी मूजमनजी
 ११) ,, मांमोचन्दी थद
 ११) ,, जालमलजी मुराणा
 ११) ,, भोगमचन्दी मुराणा
 ८) ,, गोभागमनजी सम्पत्तानजी
 ५) ,, सुगनमनजी घमण्णचन्दी
 ५) ,, सुवान्दी मन्मली

४८१६) योग

लोहायट से २६५) प्राण

- १५१) श्रीमान् हजारीमनजी ग्गणजी पारण
 ३१) ,, वृणामनजी बवरवानजी पारण
 ३१) ,, माहाराजजी चाण्डा
 २५) ,, मातृचन्दी उपमनजी पारण
 २१) ,, मोतीचन्दी गेटिया
 २१) ,, रावमनजी गोडीचन्दी कापर
 १५) ,, जुगण्णचन्दी चण्ण मन्मली पारण

०६५) योग

हाता मे ५१) प्राण

५१) श्री गन्धर्वचन्दी गन्धर्व, हाता

५१) योग

कोंकि इनके गुरू बूटेरावजीने मुखपती
 चर्चा पोथी अहमदावाद के छापेकी में
 पृष्ठ ५५ में लिखाहै कि मणिविजयजीने
 चढावे के रूपये प्रमाण करे और जब मु
 जे वाई रूपये देने लगी तो मैंने नहीं
 लिये। इत्यर्थः ॥ और बूटेराव बुद्ध विजय
 जीने तपागच्छ को अपने मनसे विलकु
 ल अच्छा नहीं जानाथा परन्तु मुखतो खो
 लही चुकेथे जब कहीं पैर नहीं लगने
 देखे तब शाहकारों के लिहाज से तपाग
 च्छ धारलिया यह स्वरूप उन्हीं की चनाई
 ऊई पूर्वक मुखपती चर्चापोथी की पृष्ठ ३४
 वी से लेकर ४६ वी तक बांचने से ख्याल
 करके मालूम करलेना हम क्या लिखें, और
 फिर पृष्ठ ७० वी पर बूटेराव लिखेहैं कि
 १० वें अछेरे में

- ५०) श्रीमान् हजारीलामजी सोडा
 ५१) " बन्धूमलनी इन्द्रचन्द्रजी भसानी
 २१) " नीमनरामजी
 २२) " जगबल्लरामजी तानवचन्द्रजी
 २३) " लक्ष्मणसिंहजी भगानी
 २४) " धारापतिरामजी रामाण
 २५) " मातीरामजी रांराम
 २६) " जीवतानजी बोहरा
 ११) " रामानन्दजी भगानी
 १२) " गेंदामनजी हमराजजी
 १३) " गेंदामलजी विनायतीरामजी
 १४) " धारमलजी बनेगवनी बोहर
 १५) " हजारीरामजी उमरावसिंहजी
 १६) " हिम्मतसिंहजी रामानन्दजी
 १७) " मोताबान्दजी फाकनीया
 १८) " छाममलजी मुल्ताय वादे
 १९) " मनिबदामजी छोटेंरामजी
 ११) श्री जैत रंगाम्बर श्रावण
 ११) श्रीमान् छगामलजी रतनमनजी
 ११) " धारवातजी धमीरामजी
 ११) " रणारामजी गंगाजीरामजी
 ११) " बजारगोशामजी प्रभाकरजी
 ११) " रानरामजी वारण
 ११) " गुनमनजी मुल्ताय वात
 ११) " मणारामजी टांगी
 ११) धीरवा उलटर बमदादजीरा
 ७) श्रीमान् बरगामनजी धारावात
 ०) " हल्लण रतन प्रभाकरजी राववात
 ५) " नागचण्डजी धारावात
 ५) " भागवतजी बरपुरवात
 ५) " नागचण्डजी रा
 ६) " भागवतजी रं
 ४) " विरवारामजी धारावात

- ५) श्रीमान् बनारसीरामजी हररामजी
 ५) " साराचण्डजी ज्ञानचन्द्रजी
 ५) " एत० एम० रामानजी
 ५) " सुनीरामजी धारौर धांण
 ५) " इन्दलानजी मदारियाजी
 ५) " विन्धुचण्डजी जं
 ५) " प्रभाकरजी रवण
 ०) " मोताबान्दजी लुगिया
 १) " हजारीरामजी बाण

१५६६) बाण

बबनाथर से ५०) प्राप्त

५०) श्रीमान् धारमनजी गरान

५०) बाण

ग्वालियर से ८) प्राप्त

८) श्रीमान् प्रभाकरजी धारावात

८) बाण

रतलाम से १६७) प्राप्त

१६८) श्री जैत रंगाम्बर श्रावण

२१) " रातान मारवाडी मध

१०) " रं मध रंराम

५) " रं मध रतलाम

१६७) बाण

नीमच से २०३) प्राप्त

२००) श्रीमान् रात्रुवातसिंहजी

३) " मधरामजी हमारामजी

२०३) बाण

मदियी बरह से २५१) प्राप्त

०५१) श्रीमान् मोनरामजी धारवात

धारावात मधरामजी मध

२५१) बाण

द्वय प्रथीं में से लिखें सत्यासत्य को विद्वान्
 न् लोग विचार लेवेंगे मूल सूक्त मिच्छा-
 सि इक्षुइम् ॥

ज्ञानि प्रथमी भागः

समाप्तः

गुलावपुरा से १११) प्राप्त

- १०१) श्री जैन श्वेताम्बर सघ, गुलावपुरा
 १०) श्रीमान् मोहनलालजी रतनलालजी
 मेडतवान

१११) योग

खेतीया से २५३) प्राप्त

- २४२) श्री जन श्वेताम्बर सघ, खेतीया
 ११) श्रीमान् गुलाबचन्दजी श्रीलाल

२५३) योग

साहदा से २०१) प्राप्त

- २०१) श्री खरतरगच्छ सघ
 नाहटा की तरफ से

२०१) योग

सराना से १०७) प्राप्त

- १०२) श्री श्वेताम्बर जैन सघ, सराना
 ५) श्रीमान् हरकचन्दजी भडारी

१०७) योग

गागरहू से ५) प्राप्त

- ५) श्रीमान् जगरमिहजी बुधमिहजी
 ५) योग

रायपुर से १६१) प्राप्त

- २१) श्रीमान् भगवचन्दजी मुगनचन्दजी
 ११) ,, भागवचन्दजी धनूचन्दजी भसानी
 ११) ,, छोगामचन्दजी इन्दरचन्दजी लुबड
 ११) ,, समरतमलजी गानाचन्दजी गोनेछा
 ११) ,, भोगराजजी हीरामचन्दजी सुबड
 ११) ,, ताराचन्दजी बानचन्दजी गोनेछा
 ११) ,, नरमचन्दजी गीरामचन्दजी नैमाणो

- ११) श्रीमान् तेजपालजी सीखरचन्दजी
 ११) ,, भासकरणजी मागीलालजी भावक
 ७) ,, गुलाबचन्दजी मागीलालजी चोपडा
 ५) ,, भागवचन्दजी सावणमुला
 ५) ,, पुनमचन्दजी वैद
 ५) ,, जुहारमलजी अमोलचन्दजी
 वाषणा
 ५) ,, हस्तीमलजी गुलाबचन्दजी वैद
 ५) ,, अतमलजी जसकरणजी पारख
 ५) ,, भागवचन्दजी करमचन्दजी नैमाणो
 ५) ,, हीरालालजी लुणकरणजी पारख
 ५) ,, मुखलालजी जीवनचन्दजी
 ५) ,, मेघराजजी वैद

१६१) योग

दुरग से २३) प्राप्त

- ११) श्रीमान् उदयकरणजी जसकरणजी
 ७) ,, भोगराजजी चोपडा
 ५) ,, भोग्यमचन्दजी मिश्रीलालजी सोडा

२३) योग

अबलपुर से १६८) प्राप्त

- १०१) श्रीमान् परतापचन्दजी धनराजजी
 गोनेछा
 ११) ,, मासीलालजी पुगाचन्दजी भुग
 ११) ,, हीरामचन्दजी मानमलजी गोलछा
 ११) ,, भागवचन्दजी गालछा
 ११) ,, रीखवदामजी दूधमोचन्दजी भुरा
 ६) ,, टाकमचन्दजी भोगराजजी
 ७) ,, हीरानालजी फनचन्दजी कोषर
 ७) ,, गरदारमचन्दजी मगनमचन्दजी बाबर

१६८) योग

एतच्चतुर्हेव सायं लोभंच उत्यं अकृम्यदोषा ए
 याणी वंता अरहा महेसी नकुच्चइ पावन का
 र वेई ॥ १ ॥ अस्यार्थः सुगमः ॥

अैसे अरिहंत देवजीके गुणा परम
 त्यागी अर्थात् विषय भोग सावद्य व्यापार
 दि सर्वारम्भ परित्यागी अथवा परम वैरागी
 राग द्वेषसे निवृत्त वीतरागी केवल ज्ञानी
 के अर्थात् सम्पूर्णा लोकालोक, आदि मध्य
 अंत अतीतअनागत वर्तमान (तस्य कृत्तस्य)
 करामलक वत् समय २ निरंतर देखते भरा
 अथवा परम दानि परम शान्ति महा साहन
 महा नियामक महास्वार्थ बाह्य परमोपकारी
 परमगोप परमयुज्य परम पावन परम सु
 शील परम पाण्डित परमात्मा पुरुषोत्तम इ
 त्यादि गुणों का स्मरण अर्थात् जपकरे ॥

(२) अथ गुरु अंग सो दूसरे, निग्रन्थि गुरु जो

गोयल्या से १०) प्राप्त

- ५) श्रीमान् भुजानमलजी हरकचन्दजी
गोगरू
५) ,, भुरानालजी विराननालजी गोवरू

१०) योग

जायला से १) प्राप्त

- १) श्रीमान् तेजराजजी बोठारी,
१) योग

जायरा से ५५) प्राप्त

- ५१) श्रीमान् जडावचन्दजी जवेरचन्दजी
२) ,, मांगीलालजी कुन्दनमलजी
२) ,, जुहारमलजी भस्वानजी
५५) योग

मालावाडा से ५) प्राप्त

- ५) श्रीमान् चिमननालजी उभाजी शाह
५) योग

सदारा से ७) प्राप्त

- ७) श्री जैन श्री संघ
७) योग

भागलपुर से ६) प्राप्त

- ६) श्रीमान् विजयचन्दजी बदलिया
६) योग

देवगढ से ५) प्राप्त

- ५) श्रीमान् मोतीलालजी राफगा
५) योग

वाघलीं से २१) प्राप्त

- २१) श्रीमान् हरीसिंहजी बोठारी
२१) योग

भानपुरा से ५) प्राप्त

- ५) श्रीमान् मन्नालालजी चोरडिया
५) योग

गोवर्धनवाला से ११) प्राप्त

- ११) श्रीमती फूलवाईजी
११) योग

खुजनेर से ५) प्राप्त

- ५) श्रीमान् चादमलजी फनचंदजी बोयरा
५) योग

योफानेर से ३१८६) प्राप्त

- १००१) श्रीमान् रावतमलजी हरकचन्दजी
बोयरा
२५१) ,, सेहवरणजी मूलचन्दजी ताहटा
२०१) ,, रामलालजी सेठिया
२०१) ,, भागनन्दमलजी लालचन्दजी
२०१) ,, तेजकरणजी प्रेमचन्दजी
२०१) ,, मगलालजी दीपचन्दजी
१०१) ,, रावतमलजी भैरदानजी बोठारी
१०१) ,, सरदारमलजी घाडीवाल
१०१) ,, भैरदानजी डागा
१०१) ,, सुरजमलजी पारख
१०१) ,, श्रीगुप्तदाता ह० इन्द्र बाई
१०१) ,, प्रेमचंदजी माणवचन्दजी
७१) ,, धनसुखदासजी मेघराजजी
५१) ,, सुगनचन्दजी जतनमलजी
५१) ,, रावतमलजी कान्तीदासजी दुगड

धर्ता अर्थात् (१) प्रथम ईया सुमति (सो) सा
 दे तीन हाथ प्रसारा क्षेत्र आगे को देखता
 हुआ चले ॥

और (२) दूसरी भाषा सुमति (सो) भाषा वि
 चारके बोले और किसी को दुःखदाई मर्मका
 री और ऊँठी भाषा न बोले ॥

और (३) तीसरी एषणा सुमति (सो) साधु
 ४ प्रकार का पदार्थ निर्दोष आज्ञा सहित
 लेवे जैसे कि १ प्रथम तो आहार पानी नि
 र्दोष, जो पुरुष साधु के निमित्त फलादिक
 छेदे नहीं छिदावे नहीं छेदने को भलाजाने
 नहीं और भेदे नहीं ० ३ और पचे नहीं ३। जो
 ग्रहस्थीने अपने कुटुंब के निमित्त अन्न
 पानी का आरम्भ किया हो सरस वा नीरस
 हो तैसाही ग्रहणा करे सो यहतो द्रव्य नि
 र्दोष और भाव निर्दोष, सो-अैसा- सरस-न

श्रीसघ से ५) प्राप्त

५) श्रीसघ मदसौर, परतापगढ, कुत्ती,
तथा बानोट

५) योग

बोलीयो द्वारा (१५८६) प्राप्त

- ६०१) श्रीमान् रामलालजी लुणिया अजमेर,
हाथी पर श्री गुरुदेव की फोटो
पर चवर करने की बोली के
१६५) ,, लक्ष्मीलालजी जीवराजजी माहटा
फलोदी, धीरत की बोली के
१०१) ,, जीवनसिंहजी मेहता दिल्ली वाले
श्री गुरुदेव की फोटो हाथी पर से
उतारने की बोली के
८७१) ,, धीलाकीदासजी डड्डा कलकत्ता
बाना, धीरत की बोली के
८३१) ,, खेरानीलालजी मिठूमलजी रावयान
देहली, धीरत की बोली के
७७१) ,, बुधसिंहजी वाफणा कोटा
६७१) ,, उमरावमलजी बैराठी धीरत
का बोली के
६३८) ,, कपूरचन्दजी श्रीमाल हैदराबाद
४२१) ,, दलपतसिंहजी बोहरा आगरा
३७१) ,, लछीरामजी रतनलालजी लुणिया
बीकानेर
३२१) ,, प्रकाशचन्दजी पल्लीवाल अजमेर
३०) ,, छुट्टनलालजी फोफलिया जैपुर

- २८११) श्रीमान् हरकचन्दजी रतनचन्दजी
सेखावत इन्दौर
१७११) श्रीमान् हजारीलालजी रावयान देहली
१५) ,, लालचान्दजी बैराठी जैपुर
१५) ,, पूनमचन्दजी जाडचूर जैपुर
१२११) ,, श्रीगुप्त सज्जन ह० निहालचन्दजी
हरकावत
१२११) ,, अमरचन्दजी नाहर जयपुर
१२११) ,, वस्तुरचन्दजी भवरलालजी बोधरा
मोम्बाहेडा
१११) ,, गणेशदासजी पारख टोक
७११) ,, नोहालचन्दजी हरकानत अजमेर
७) ,, गुलानचन्दजी सोहनलालजी मेहता
कोटा
६१) ,, फूलचन्दजी ज्ञानचन्दजी सहारनपुर
५) ,, कमलचन्दजी घाघिया जयपुर
५) ,, उकारलालजी चौपडा मन्दसौर
३१११) गुलाबचन्दजी जाडचूर जयपुर
३१११) ,, भैरूलालजी वारीपोडा पोपत्या
३१११) ,, कुन्दनमल इन्द्रचन्दजी भुम्भनू
३८) ,, मागीलालजी पारख अजमेर

१५८६) योग

६०००) धर्मस्नेही बन्धु से प्राप्त
ह० मागीलालजी पारख

६०००) योग

सारी २७-४-५८ तक सब रसीदों द्वारा प्राप्त रकमों का महायोग ५५६०४) होता है सो धामे के पृष्ठों में जांचे गये महोत्सव समिति द्वारा एच ब्राडिटर द्वारा प्राप्त बिये गय हिताच में अलग अलग खातों में जमा दिलाये गये ह ।

पजे इत्यर्थः और ३ तीसरे उपाश्रय अर्थात्
 स्थान निर्देय (सों) साधुनि मित मकान
 बनवाया नहोय तथा सोललिया नहोय
 फिर गृहस्थी के वर्तने से जियादा होयतो
 उसकी आज्ञासे ग्रहण करे सो यहतो द्रव्य
 निर्देय और भाव निर्देय, सो ऐसा चित्रशा
 ली आदिक नहोय कि जिसे मन अनंग
 (कामदेव) और विकारादि भजे तथा सराग
 बेश्या आदिक का पड़ोस नहोय और अ
 सा निषिद्ध दूटा फूटा मकान भी नहोय
 जो चढ़ते उतरते गिर २ पड़े तथा मही
 गिर २ पड़े तथा और जीव जंतु आदि घरो
 होय तथा और दुःखदाई होय अप्रतीतका
 री होय इत्यर्थः॥ और चौथे ४ शिष्य शा
 खा निर्देय सो लड़का लड़की कुजात नहोय
 तथा माता पिता की जात अधूरी नहोय

अष्टम स्वर्णरोहण शताब्दी महोत्सव

२२ मई, सन् १९५६

ता० १३-६-५६ तक का

व्यय	र० आ० पा०	र० आ० पा०
श्री दादावाडी जिर्णोद्धार खाते नामे -		
श्री जिर्णोद्धार के	७६४५ - १४ - ३	
श्री सभा मडप के	५४१२ - २ - ६	
हस्ते इत्राहीम कारीगर को काम पेटे	१६०० - ० - ०	१४६५८ - १० - ६
श्री भोजन खाते -		
भोजन व्यवस्था के	२१०२३ - १५ - ३	
चोका रच के	१३४३ - १ - ३	
वाद आमद रमीदा से १६५८५ - ० - ०	२२३६७ - ० - ६	
बचा सामान बचने से २३६२ - १० - ०	२१६७७ - १० - ०	३८६ - ६ - ६
श्री मन्दिरजी जिर्णोद्धार खाते -		१८६ - ० - ०
श्री पूजन खाते -		
नामे	४८ - ६ - ६	
जमा	३५ - ६ - ६	६ ० ०
श्री अष्टम शताब्दी महोत्सव खाते -		
श्री दफ्तर खच के - वेतन ११०८ - ० - ०		
स्टेशनरी इत्यादि ३७२ - ३ - ०	१४७६ - ३ - ०	
श्री प्रचार व छपाई के	२४२६ - ६ - ३	
श्री सफर खच के	२४७१ - १५ - ६	
श्री पण्डाल खच के	२०८१ - ७ - ०	
श्री बिजली रोशनी खच	१५७८ - ६ - ०	
श्री जलूस खच	१६८७ - ० - ३	
श्री यातायात खच	६६६ - ६ - ६	
श्री साधु-साध्वीजी विहार रच के बगरा	४६२५ - १५ - ६	
श्रीपूज्यजो व यतिजी खच रसोडा बगरा	५०० - ४ - ०	१७७२४ - ६ - ६
	जीड आगे ले गये	३३२६६ - १३ - ६

पांचमी उच्चारण सवरा लेख जल संघर्ष
परिठावणी सु०॥ सो देहके मेल
एकान्त पृथक् सूकी भूमिका में गोरे जहां
कोई जीव जन्तु गडे नहीं और फसके मरे
नहीं इत्यर्थः ॥

और ३ गुप्ति १ मन गुप्ति सो मनके अशुद्ध
संकल्पों को रोके ॥

२ वचन गुप्ति सो वचन आलपाल बोले
नहीं अर्थात् बिना निजगुण लाभके बो
ले नहीं ॥ और ३ काय गुप्ति सो काय की च
पलता और समता को त्यारे ॥

सो ये ५ सुमति और

३ गुप्तिके धर्ती साधु जन साधकात्माहों ति
नकी सेवा भक्ति करे अर्थात् फ्रासूक एष
णीक पूर्वक अन्नपानी देकर तथा वस्त्रपा
त्र देकर तथा अपने वर्तने से ज्यादा सका

ग्रन्थम स्वर्गरोहण श्रुताब्दी महोत्सव

२२ मई सन् १९५६

ता० १३-६-५६ तक का

व्यय	र० आ० पा०	र० आ० पा०
जोड पिछ्ठे पृष्ठ से लाये		३३२६६ - १३ - ६
श्री तार, फोन, पोस्टेज बगैरा	६१६ - ११ - ३	
श्री दादासाहन के जीवन चरित्र उपवाई के	७४८ - ३ - ०	
श्री स्मृति ग्रन्थ निर्माण खाते वेतन व	१४० - ० - ०	
श्री स्वामी बलमल पाने नामे ८२५ ८-३ बाद जमा ७६४-०-०	६१ - ८ - ३	
श्री जनरल उत्सव ग्रन्थ खाते-स्वयं सेवक, संगीत मडली, प्रदर्शनी, फोटो, इत्यादि व्यय	२५६६ - ५ - ६	
श्री आडिट फीस के	७५ - ० - ०	४२१० - १२- ३
श्री दादाबाडी सामान खाते -		१०२७ - ५ - ३
श्री नगरपालिका खाते - नल वास्ते डिपाजीट		१० - ० - ०
श्री टेलीफोन एक्सचेंज खाते - अभी विल नहीं आये ह ।		२०० - ० - ०
उगाई धणीवारो में लेणा -		
श्री मागीलानजी पारख	६१- १- ६	
श्री हुलीचन्दजी हमीरमलजी गोलेछा जयपुर	३६-१२- ६	
श्री जीतमलजा महता	५६- ०- ०	
श्री अग्रचन्दजी नाहटा बीकानेर वास्तु खरतरगच्छ इतिहास छपाने	२८८४ ०- ०	
श्री मूलचन्दजी नाहटा बीकानेर	१०- ०- ०	
श्रीचदाप्रभुजी महाराज मंदिर जुना पेठी मद्रास	१५१- ०- ०	३१६८ - १४ - ०
जोड भाग ले गये		४१६१३ - १३- ३

यसाधे यथा सूत्र विनयद्वारम् ॥

अगर इसमें कोई मतपत्नी तर्क करे कि साधुको लेने जाने में का हिंसा नहीं होती है? तो उसको यह उत्तर देना चाहिये कि विना उपयोग चले तो हिंसा होती है और सूत्र का न्याय तो ऐसे है कि यथा दशवै कालिके उक्तं च "जयंचरे जयंचिठे" इति वचनात् ॥ और इसपर कोई फिर तर्क करे कि हम भी तो फूल आदिक जिन भक्तिके निमित्त यत्नसे ही तोड़ते हैं ॥

तो फिर उसको यह उत्तर देना चाहिये कि जब तोड़ ही लिया तो फिर यत्न काहेका हुआ यथा किसी की गर्दन तो उचारी परन्तु यत्न से उचारी। उजरम् अपसोस है कि जब काट ही गेरा तो फिर यत्न काहेका हुआ। खैर तुम्हारे लेखे यत्न ही हुआ सही परन्तु

ग्रुपम स्वर्गरोहण प्रताब्दी महोत्सव

२२ मई सन् १९५६

ता० १३-६-५६ तक का

व्यय	र० आ० पा०	र० आ० पा०
जोड पिछले पृष्ठ से लाये		४१६१३ - १३ - ३
श्रीसघ जयपुर देहली हैदराबाद वालो में	६२८ - ० - ०	८३
श्री जीनमलजी साखला सीरहमलजी महुता आदि चौसीरा खाते	१०२ - ८ - ०	३००
श्री राजगढीयाजी	३७७ - ८ - ०	१०५
		१४०८ - ० - ०
श्रीपोते बेलेन्स -		
दी हिन्द बंक लिमिटेड में काल (Call) डिपोजिट खाते	५००० - ० - ०	
दी हिन्द बंक लिमिटेड में चालू खाते में	२४७३ - ४ - ६	
श्रीपोते रोबडो	५ - ६ - ६	७४७८ - ११ - ६
सर्व योग		५०८०० - ८ - ६

१४०

जावा और सही पाया ।

ह० राघवेश्याम डाणी

F. O. A.

चारटेंट मकान टेंट, मजमेर

दिनांक १७-६-५६

सामहोय ॥ तर्क ०

अगर तुम यह ऊटलता ग्रहण करोगे कि अपने पहरने खाने के निमित्त सुचित द्रव्य लेजाने समवसरण के मनाई है परन्तु भगवान् की भक्ति निमित्त मनाई नहीं है ॥ उत्तरपक्षम् सूत्रमें तो ऐसे नहीं है और स्वकपोलकल्पित कुछ वनाधरो अगर हेतो पाठ दिखाओ कि किसी सनातन सूत्रमें लिखा हो कि किसी सेवकने दीतराग भगवान् जीकी फल फूलोंसे पूजा करी हो अगर तुम देवोंकी भुलावन दोगे तो हम नहीं मानेंगे क्योंकि देवों का जीता विहार कुछ और ही है तदपि देवताओं के कथन में भी अरिहंत हुए पीछे सुचित फूलों का पाठ नहीं है यथा राज प्रह्मी सूत्र पुष्प वहलं वियो वइत्ता तथा मानतुंग कृत भक्ता मर श्लोक ऊर्णेंद्र हेम

अष्टम स्वर्गारोहण शताब्दी महोत्सव

ता० १४-६-५६ से २७-४-५८ तक का

व्यय	र० आ० पा०	र० आ० पा०
श्री दादावाडी जीर्णोद्धार खाते नामे -		३११३ - ७ - ३
श्री सभा मंडप पर खर्च -		५३८३ - १० - ३
श्री अष्टम शताब्दी महोत्सव खाते नामे -		
(इसम २८८४ पुस्तक छपाईके भी सम्मिलित है जिसका भगडे के कारण कोई भी पुष्टि पत्र हमें नहीं दिखाया गया है और न प्राप्त ही हुआ है। इसी प्रकार ११००) अम्बावाडी के नुक्सानी मरम्मत के तथा ६६) छपाई का देना था और ६२८) जयपुर सघ मे लेने, थे अत २७१) का वाकी का चैक भेजा गया था सो लोट कर वापम (मामला विचाराधीन होने से) आ गया है।)		४०८३ - ६ - ०
श्री साधु-साध्वी गृचं खाते -		३६ - १२ - ६
अथ व्यय -		
श्री भंडार खाते जमा थे मो श्री जीर्णोद्धार खाते जमा किया	१४ - ० - ०	
श्री घाति स्नाय खाते	५८ - १० - ६	
श्री मदिर्जी जीर्णोद्धार खाते	५४५ - ० - ०	
श्री-साधारण खाते व्यय	६७ - १२ - ०	
श्री विविध व्यय दफतर वास्ते	१०७ - २ - ६	
पोस्टेज नाग व टलीफोन उत्सव का बिल प्राया	१६७ - ५ - ०	
प्रवाम व्यय	२३ - १२ - ०	
विजनी गृचं (उत्सव का दीया)	२४ - १५ - ०	
प्रचार व्यय	६१ - ६ - ०	
रिपोट छपाई	११७ - ३ - ०	
जोड़ प्रागे ले गय		१३०७ - २ - ०
		१३६२४ - ६ - ०

मज्जुव वाले लोक तथा अनजान लोक भी
आश्चर्य को प्राप्त होंगे कि देखो जैनों लोक
स्ववश वर्ती, स्त्री आदिक के भोग को तजकर
ब्रम्हचारी होजातेहैं सो यह जैनधर्म की
प्रभावनाहै ॥

अथ ३ तृतीय धर्म श्रंग धर्म जो दुर्गति पड
तां धारई इति धर्म ते धर्म क्षमा दया रूप
धर्म तथा संवर निर्जरा रूप धर्म अर्थात्
त्ये नोत्पद्यते धर्मो दया दानेन वर्द्धते ॥ क्षमया
च स्थाप्यते धर्मः क्रोध लोभाद्विनश्यति ॥ १ ॥

अर्थात् १ धर्म का पिता ज्ञान २ माना दया ३ भा
ई सत्य ४ वहन सुबुद्धि ५ स्त्री दमितेन्द्रिय द
पुत्र सुख ७ घर क्षमा ८ वैरी क्रोध लोभ ॥ १ ॥
ते धर्म आचरणा की विधि लिखतेहैं

प्रथम तो पूर्वक निग्रन्थ

गुरु से भक्तिरूप प्रीति समाचरे सो गुरु

तथा परमेश्वर वा ब्रह्म कहते हैं सो उसको
 जैन में सिद्ध कहते हैं (सो (सिद्ध) निरंजन
 निराकार अखाण्डित अविनाशी अलक्ष्य अ
 रूपी कर्म कलंक से रहित अनादि अनंत
 है यथा जैनमूल सूत्रे समवायाङ्गे "सच्चरुणं
 सच्चदंसीणं शिवमयलसरुयमणं तमकव
 यमज्ञावाह" इत्यादि

और एक न्याय से सादि अनंत है सो इस
 रीति से है कि शास्त्र में दो प्रकार का जीव
 का स्वभाव कहा है जैसे एक तो स्वभाव
 में अभव्य जीव है अर्थात् अनादि अनंत
 कर्म सहित है और दूसरे स्वभाव में भव्य
 जीव है अर्थात् अनादि सांत कर्म सहित
 है सोई जो अभव्य जीव है उसको तो
 मोक्ष होती नहीं क्योंकि अभव्य जीव अ
 नादि अनंत कर्म सहित है तस्मात् का